रिमझिम 5

पाँचवीं कक्षा के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

यह किताब ______________ की है।

0525

© NCERT not to be republished

प्रथम संस्करण

फरवरी 2008 माघ 1929

पुनर्मुद्रण

जनवरी 2009 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जनवरी 2011 माघ 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
अक्तूबर 2012 आश्विन 1934
अक्तूबर 2013 आश्विन 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
फ़रवरी 2017 माघ 1938
दिसंबर 2017 अग्रहायण 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
अगस्त 2019 भाद्रपद 1941

PD 440T RPS

© *राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008*

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा देवटैक पब्लिशर्स एवं प्रिंटर्स प्रा. लि., 14/3 बोलटान कम्पाउंड, मथुरा रोड, फ़रीदाबाद-121 003 (हरियाणा) द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-811-9

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 — फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 — फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 — फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 — फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 — फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: *एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	: *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: *बिबाष कुमार दास*
संपादक	: *मरियम बारा*
उत्पादन सहायक	: *राजेश पिप्पल*

आवरण — *दुर्गा बाई*

सज्जा — *जॉएल गिल*

चित्रांकन

अत्रैयी सिकदर — *कनक शशि*
जॉएल गिल — *बारान इज्लाल*
मीता जौहर दत्ता — *शालू शर्मा*

छायाचित्र

निमिषा कपूर (पृ. 34, 140)
राजेश बेदी (पृ. 126, 127)

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव करने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

© NCERT not to be republished

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् प्राथमिक पाठ्यपुस्तक सलाहकार समूह की अध्यक्ष प्रोफ़ेसर अनीता रामपाल और हिंदी पाठ्यपुस्तक समिति की मुख्य सलाहकार, डॉ. मुकुल प्रियदर्शिनी की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
30 नवंबर 2007

© NCERT not to be republished

बड़ों से दो बातें

इस रिमझिम में

रिमझिम–5 आपके हाथों में है। इसके ताने–बाने को चार सूत्रों में पिरोया गया है। हर सूत्र का अपना रंग और अपनी छटा है। **अपनी–अपनी रंगतें** के अंतर्गत रीति–रिवाज, जीवन–शैली, हुनर, विरासत और बोली आदि संस्कृति के विभिन्न आयामों की झलक है। इस भाग को पढ़ाते समय यह ध्यान में रखना ज़रूरी होगा कि सांस्कृतिक विविधता के बारे में शिक्षक का स्वयं का ज्ञान ही इन पाठों को बच्चे के लिए जीवंत बना सकता है। इस भाग के माध्यम से रिमझिम–5 हमारी अनमोल विरासत को सहेजने का प्रयास है।

अभिव्यक्ति के कई माध्यम हैं। समय के साथ–साथ इन माध्यमों में भी बदलाव आया है। अपनी बात लोगों तक पहुँचाने का तरीका समय के साथ कैसे बदलता रहा है पुस्तक के दूसरे भाग **बात का सफ़र** में इसी रोचक सफ़र की झलक है।

हास्य रचनाएँ सभी को गुदगुदाती हैं। बच्चे हास्य के पुट वाली रचनाओं में विशेष रुचि लेते हैं। पुस्तक के तीसरे भाग **मज़ाखटोला** में हास्य–व्यंग्य से पगी रचनाएँ और कार्टून दिए गए हैं। शिक्षक का हास्य बोध इन रचनाओं के साथ कक्षा–शिक्षण को भी रुचिकर बनाता है।

रिमझिम–5 के अंतिम भाग **आस–पास** में दी गई रचनाएँ हमारे पर्यावरण को समझने और उसके प्रति संवेदनशीलता को उपजाने की शुरुआत हैं। इस भाग के अंतर्गत दिए पाठों में भौतिक और जैव, दोनों ही किस्म के पर्यावरण के प्रति जागरूकता सरस साहित्य और गतिविधियों के माध्यम से दी गई है।

प्रत्येक भाग की शुरुआत में उस भाग की विषयवस्तु का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। यह परिचय शिक्षक के लिए उन पाठों में निहित भावनाओं को बच्चों तक पहुँचाने में सहायक होगा।

रचनाओं में विविधता

यह विविधता हमें दो रूपों में देखने को मिलेगी, एक तो विषयवस्तु के रूप में, दूसरी विधाओं के रूप में। विषयों के साथ विधाओं का बड़ा फलक रिमझिम–5 में है। पिछले दो वर्षों में रिमझिम–3 और 4 के माध्यम से साहित्य की विभिन्न विधाएँ–कहानी, कविता, पत्र, नाटक आदि बच्चे पढ़ चुके हैं। रिमझिम–5 में इन विधाओं के अलावा खबर, उपन्यास अंश, सूचनापरक लेख, भेंटवार्ता, शिकार कथा, विज्ञान कथा तथा यात्रा–वर्णन दिया गया है। शिक्षक इन पाठों को पढ़ाते समय उस विधा में उपलब्ध अन्य सामग्री का भी इस्तेमाल करें, जैसे – **डाकिए की कहानी कँवरसिंह की ज़ुबानी** भेंटवार्ता को पढ़ाते समय अखबार, रेडियो, टी.वी. पर आने वाली भेंटवार्ताओं की ओर भी बच्चों का ध्यान दिलाएँ। इन सभी में भेंटवार्ताएँ नियमित रूप से आती हैं। इनकी ओर ध्यान दिलाने से भेंटवार्ता के तरीकों से बच्चे भली–भाँति अवगत हो सकेंगे। इसी प्रकार **स्वामी की दादी** पढ़ाने के दौरान बच्चों

© NCERT not to be republished

को कुछ ऐसे उपन्यास पढ़ने के लिए प्रेरित करें जो बच्चों के लिए ही लिखे गए हैं। जैसे–**कलवा** (मन्नू भण्डारी), **एक डर, पाँच निडर** (सत्य प्रकाश अग्रवाल), **गब्बर सिंह और उसके दोस्त** (श्रीलाल शुक्ल), **स्वामी और उसके दोस्त** (आर. के. नारायण)। इस प्रकार की सामग्री बच्चों में बाल साहित्य पढ़ने में रुचि जगा सकती है। शिक्षकों का यह प्रयास बच्चों को अगली कक्षा में इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री को समझने में भी मदद करेगा।

रिमझिम–5 को पढ़ाते समय बच्चों को साहित्यिक विधाओं का परिचय देना उपयोगी होगा। विधा साहित्य के अलग–अलग रूपों की ओर इशारा करने वाली विशेषता है। साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ–कविता, कहानी, नाटक, यात्रा संस्मरण, पत्र आदि कई रूप ले लेती हैं। इन्हीं रूपों को विधा कहते हैं। प्रसार माध्यमों के विकास के साथ साहित्य से कई नई विधाएँ भी जुड़ी हैं। उन्हें भी इस किताब में शामिल किया गया है। रिमझिम–5 के लिए रचनाएँ यह ध्यान में रखकर चुनी गई हैं कि वे बच्चों की बढ़ती हुई जिज्ञासाओं और रुचियों को प्रतिबिंबित करें। इस आयु के बच्चे मानसिक और शारीरिक रूप से बहुत ऊर्जावान होते हैं। वे अपने आस–पास ही नहीं बल्कि दूरस्थ संसार को भी समझने की अपने तरीकों से कोशिश करते हैं। रिमझिम में ली गई रचनाओं का संबंध पूरे देश और दुनिया के अन्य भागों से भी है। पढ़ाते समय बच्चों के मनोविज्ञान को ध्यान में रखें ताकि वे अपनी कल्पना और अनुमान ही नहीं बल्कि विभिन्न माध्यमों और किताबों से दुनिया को जान सकें।

रचनाकारों से रूबरू

रिमझिम–5 में कई साहित्यकारों की रचनाएँ ली गई हैं। जैसे–प्रेमचंद, सुभद्रा कुमारी चौहान, नागार्जुन, सोहनलाल द्विवेदी, आर.के.नारायण आदि। आने वाली कक्षाओं में साहित्य से बच्चों का परिचय उत्तरोत्तर बढ़ता जाएगा। रचनाओं को गहराई से समझने के लिए उनके लेखकों का परिचय उपयोगी है। ऐसा ही प्रयास रिमझिम में किया गया है। रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित **छोटी–सी हमारी नदी** कविता के बाद दिया गया पाठ **जोड़ासाँको वाला घर** रवींद्रनाथ के बचपन की झलक देता है। **खिलौनेवाला** कविता और **ईदगाह** कहानी पढ़ाने के बाद परिषद् द्वारा विकसित सुभद्रा कुमारी चौहान और प्रेमचंद पर बनी फिल्में दिखाई जा सकती हैं। यह फिल्में केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली से प्राप्त की जा सकती हैं।

परिवेश के प्रति सजगता

बच्चों की एक स्वभावगत विशेषता है अपने परिवेश के प्रति जिज्ञासा रखना और उसका अवलोकन करना। इस स्तर तक आते–आते बच्चे से यह अपेक्षा की जाती है कि आस–पास के परिवेश में उपलब्ध सामग्री में रुचि ले और उसका विश्लेषण कर सके। शिक्षक की स्वयं की रुचि तथा रचनात्मकता बच्चों को इस कसौटी पर खरा उतारने में मददगार साबित होती है। हमारे परिवेश में उपलब्ध विज्ञापनों, पोस्टरों, साइनबोर्डों में मुहावरों, लोकोक्तियों, कहावतों के साथ–साथ बोलने के कई प्रचलित तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है। इस ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। रोज़मर्रा के जीवन से जुड़े विषयों पर जैसे – खाना–पीना, मौजमस्ती, खेल, सेहत, त्योहार आदि पर बच्चे इस तरह

© NCERT not to be republished

की सामग्री बना सकते हैं। शिक्षक रिमझिम-5 के माध्यम से इस प्रकार शिक्षण करें कि बच्चे भाषा को अपने परिवेश और अनुभवों को समझने का माध्यम मानकर उसका सार्थक प्रयोग कर सकें।

भाषा की बनावट

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व्याकरण की अवधारणाओं को विविध किस्म के पाठों के संदर्भ में पहचानकर उनका उचित प्रयोग करने का सुझाव देती है। रिमझिम शृंखला के अन्य भागों की तरह रिमझिम-5 में भी अभ्यासों के माध्यम से भाषा की बनावट के सार्थक प्रयोग पर बल दिया है। व्याकरण को एक कठोर यांत्रिक पृथक् अनुशासन के रूप में न सुझाकर सहज रूप में प्रस्तुत करना ही बेहतर होगा।

बहुभाषिकता

हमारे देश की भाषिक विविधता हमारा एक भाषायी संबल है। हिंदी की पारंपरिक बोलियाँ भारत की विरासत का अंग हैं। हर बोली का अपना लहज़ा होता है। पर अक्सर यह देखा जाता है कि बच्चे जब कक्षा में अपने घर में बोली जाने वाली बोली में बात करते हैं या शिक्षक द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब अपनी बोली में देते हैं तो शिक्षक उसे तुरंत टोक देते हैं। परिणाम यह होता है कि बच्चे सहज अभिव्यक्ति का आत्मविश्वास खो देते हैं और कक्षा की मानक भाषा के ढाँचे में ढलने की असफल कोशिश करते हैं। इसके विपरीत अपनी बोली में अभिव्यक्ति को सम्मान मिलने पर धीरे-धीरे आत्मविश्वास से भर उठते हैं और मानक भाषा भी सीख जाते हैं। बहुत-से साहित्यकार जैसे- फणीश्वरनाथ रेणु, हजारी प्रसाद द्विवेदी इस बात का जीवंत उदाहरण हैं। **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने पर बल देती है।** रिमझिम भाग 1 से 4 तक पिछली चारों पाठ्यपुस्तकों में बहुभाषिकता को स्थान देने के लिए अन्य भाषाओं से भी सामग्री ली गई है तथा अभ्यासों और गतिविधियों के अंतर्गत बच्चों को अपनी भाषा में लिखने, बोलने के अवसर भी दिए गए हैं। रिमझिम-5 में भी यह सिलसिला जारी है। ज़रूरत इस बात की है कि शिक्षक बच्चों को अपनी भाषा और बोली का इस्तेमाल करने का मौका कक्षा में अवश्य दें।

शब्दकोश से परिचय

बोलने-चालने में एक दूसरे की बोली समझना बहुत आसान होता है पर वही बोली जब लिखित रूप में सामने आ जाती है तो कई बार शब्दकोश का सहारा लेना ज़रूरी हो जाता है। बच्चे शब्दकोश से पहचान बनाएँ और उसे देखने की आदत डालें इसके लिए रिमझिम-5 में शब्द-अर्थ शब्दकोश के क्रमानुसार दिए गए हैं। इस काम में शिक्षक की मदद उन्हें शब्दकोश से आत्मीय रिश्ता जोड़ने में सहायक सिद्ध होगी।

कला और सौंदर्यबोध

साहित्य का कलाओं से सीधा संबंध होता है। **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 कला के माध्यम से अन्य विषयों को जोड़ने पर बल देती है।** राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में भारत की हस्तकला पर विशेष बल दिया गया है। **जहाँ चाह वहाँ राह** पाठ कसीदाकारी के महत्व को

© NCERT not to be republished

दर्शाता है। इस पाठ को पढ़ाने के दौरान अपने आस-पास के कारीगरों को बुलाएँ और प्रचलित हस्तकला का व्यावहारिक अनुभव बच्चों को दिलवाएँ। एक विकल्प यह भी हो सकता है कि अवसर एवं सुविधा होने पर इन कारीगरों तक बच्चों को स्कूल से ले जाएँ। इस प्रकार के अनुभव बच्चों के लिए बहुत मूल्यवान होते हैं और किसी अन्य अनुभव के विकल्प नहीं हो सकते।

शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि साहित्य के माध्यम से बच्चों में सौंदर्य बोध का विकास करें। जैसे किसी कविता को पढ़ने के बाद उस कविता को कैसे गाया जा सकता है, धुन में कैसे ढाला जा सकता है या कहानी को नाटक का रूप देकर रंगमंच पर अभिनीत करना। इससे कहानी या कविता के भाव पूर्णतया जीवंत हो उठेंगे और उसका अंतर्निहित अर्थ सजीव हो उठेगा।

बच्चों के लिए किसी भी पाठ्यपुस्तक का मुख्य आकर्षण उसके चित्र होते हैं। रिमझिम श्रृंखला चित्रों से सराबोर है। रिमझिम 1 से रिमझिम 5 तक आते-आते किताब में भाषा, विषयवस्तु आदि में बच्चे की बढ़ती आयु के अनुसार परिपक्वता आई है। ऐसा ही बदलाव चित्रों के स्वरूप में दिखाई देता है। लेकिन प्रयास किया गया है कि उनका आकर्षण बरकरार रहे।

संवेदनशीलता का विकास

भाषा और साहित्य की पढ़ाई का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य हमारी संवेदनशीलता का विकास करना होता है। **एक माँ की बेबसी, जहाँ चाह वहाँ राह, रात-भर बिलखते-चिंघाड़ते रहे** रचनाएँ इसी बात को मद्दे-नज़र रखते हुए दी गई हैं। उम्मीद की जाती है कि रिमझिम-5 में दी गई रचनाएँ पढ़ते-पढ़ाते समय शिक्षक उनमें निहित भावनाओं पर बच्चों के मन में उठी हलचल जान सकेंगे। इन रचनाओं से मिलती-जुलती अन्य रचनाएँ भी प्रस्तुत करें। ऐसी स्थितियों पर स्वयं रचना करें और बच्चों को कुछ लिखने के लिए भी प्रेरित करें। जैसे – किसी जानवर को सताते या किसी पेड़ को नुकसान पहुँचाते तुम देखते हो तो लिखो कि ऐसी स्थिति में पेड़ या जानवर को कैसा लगता होगा? साहित्यिक लेखन भावनात्मक विस्तार को फैलाने का एक अच्छा अवसर बच्चों को देता है।

रिमझिम 3 और 4 की तरह रिमझिम 5 में भी कुछ रचनाएँ (तारांकित रचनाएँ) सिर्फ़ पढ़ने के लिए दी गई हैं। इन पाठों से प्रश्न नहीं पूछे जाएँ बस बच्चों को इन्हें पढ़ने का आनंद लेने दें। ये रचनाएँ बच्चों को एक उत्साही पाठक बनने की ओर अग्रसर करेंगीं।

पाँचवीं कक्षा प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर के बीच एक सेतु है। इसमें शिक्षक पहले अर्जित भाषायी कौशलों का पूर्ण विकास करने की कोशिश करें। शिक्षक से यह अपेक्षा भी की जाती है कि प्रत्येक बच्चे के भाषायी कौशलों की जाँच ऐसे करें कि कोई भी बच्चा न छूटे। इन सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए यद्यपि इस पुस्तक में प्रचुर मात्रा में सामग्री दी गई है लेकिन फिर भी दी गई विषय-सामग्री से इतर सामग्री भी बच्चों को दें। भाषा के उद्देश्य एक पाठ्यपुस्तक से पूरे नहीं किए जा सकते। इस बात की चर्चा परिषद् द्वारा विकसित शिक्षक संदर्शिका **कैसे पढ़ाएँ रिमझिम भाग 1 और 2** में की गई है। यह संदर्शिका प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली से प्राप्त की जा सकती है।

उदाहरण के लिए, जोड़ासांको वाला घर शीर्षक रचना में एक जगह खयाल के रूप में उल्लेख है कि लड़कियाँ नीचे उतरते समय पहले बायाँ पैर उठाती हैं। कक्षा में बच्चों के साथ चर्चा करते हुए जेंडर से जुड़ी रूढ़िवादी सोच को तर्क के आधार पर समाप्त करने की कोशिश करें।

2020-21

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, प्राइमरी पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

अनीता रामपाल, *प्रोफ़ेसर*, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय

मुख्य सलाहकार

मुकुल प्रियदर्शिनी, *प्रवक्ता*, मिरांडा हाउस, नयी दिल्ली

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *शिक्षक*, नगर निगम प्राथमिक सहशिक्षा विद्यालय, राजपुर, नयी दिल्ली

अपूर्वानंद, *रीडर*, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

उषा द्विवेदी, *मुख्य अध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

कृष्ण कुमार, *निदेशक*, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

चंदन यादव, संस्था *मुस्कान* 5, पत्रकार कॉलोनी, लिंक रोड नं. 3, भोपाल

मंजुला माथुर, *प्रोफ़ेसर*, रीडिंग डेवलेपमेंट सैल, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

मालविका राय, *शिक्षिका*, हैरीटेज़ स्कूल, डी–II, वसंत कुंज, नयी दिल्ली

रमेश कुमार, *प्रवक्ता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

शारदा कुमारी, *प्रवक्ता*, जिला मंडलीय शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम्, नयी दिल्ली

सोनिका कौशिक, *कंसलटेंट*, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य समन्वयक

लता पाण्डे, *प्रवाचक*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

हम प्रोफ़ेसर कृष्णकांत वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में हर संभव सहयोग दिया।

परिषद् उन समस्त रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट नयी दिल्ली; *निदेशक, चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट*, नयी दिल्ली; प्रकाशक, *राजकमल प्रकाशन*, नयी दिल्ली; प्रकाशक, *रत्न सागर प्राइवेट लिमिटेड*, नयी दिल्ली; प्रकाशक, *किताब घर*, नयी दिल्ली; प्रकाशक, *साहित्य अकादमी* दिल्ली; प्रकाशक, *एकलव्य*, भोपाल; के हम आभारी हैं।

रात भर बिलखते–चिंघाड़ते रहे पाठ में छपी तसवीरों में सहयोग के लिए विजय बेदी के हम आभारी हैं।

हम माधवी कुमार, *रीडर*, रीडिंग डेवलेपमेंट सैल, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; के आभारी हैं, जिन्होंने रचनाओं के चयन में सहयोग दिया।

पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए शाकंबर दत्त, इंचार्ज कंप्यूटर कक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग; सीमा मेहमी, नरेश कुमार, विजय कौशल, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; राधा, *कॉपी एडीटर*; सुशीला शर्मा एवं निर्मल मेहता, *सहायक कार्यक्रम समन्वयक*; प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के हम आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं, इसके लिए हम आभारी हैं।

© NCERT not to be republished

कहाँ क्या है

आमुख *iii*

बड़ों से दो बातें *v*

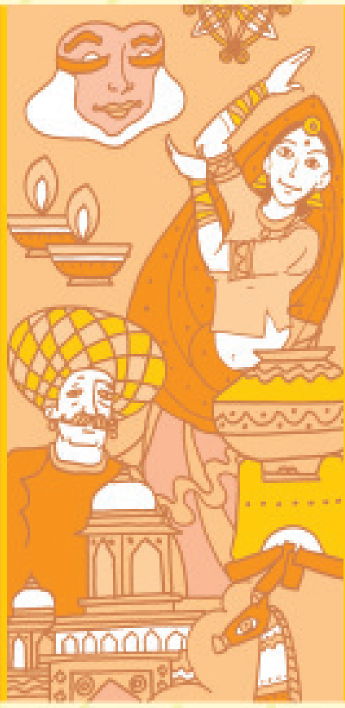

अपनी-अपनी रंगतें 1

1. राख की रस्सी (*लोककथा*) 5

*दुनिया की छत 11

2. फ़सलों के त्योहार (*लेख*) 13

3. खिलौनेवाला (*कविता*) 20

*ईदगाह 24

*हवाई छतरी 32

4. नन्हा फनकार (*कहानी*) 33

5. जहाँ चाह वहाँ राह (*लेख*) 41

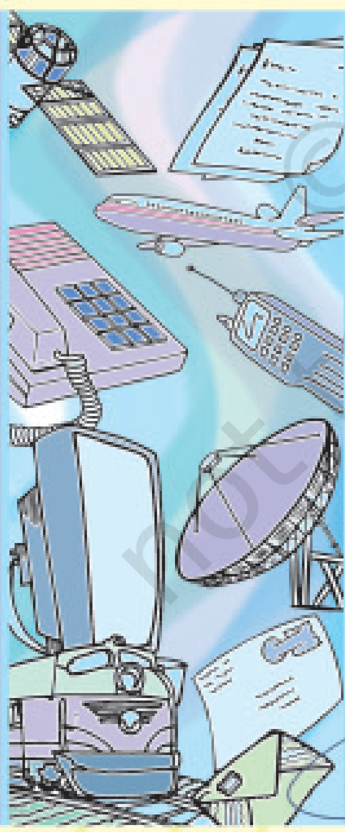

बात का सफ़र 47

*पत्र 51

6. चिट्ठी का सफ़र (*लेख*) 52

7. डाकिए की कहानी, कँवरसिंह की ज़ुबानी (*भेंटवार्ता*) 58

8. वे दिन भी क्या दिन थे (*विज्ञान कथा*) 62

9. एक माँ की बेबसी (*कविता*) 68

© NCERT not to be republished

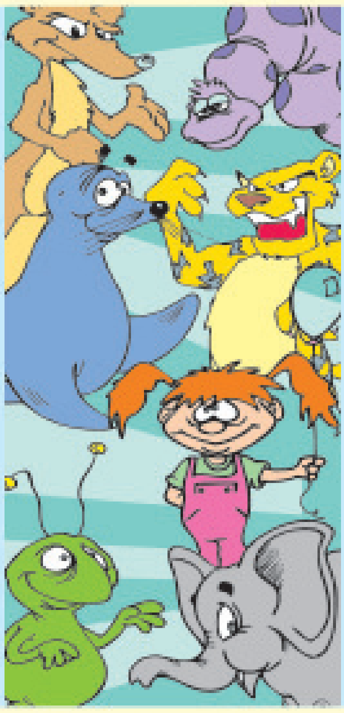

मज़ाखटोला 73

10. एक दिन की बादशाहत (*कहानी*) 77

11. चावल की रोटियाँ (*नाटक*) 83

12. गुरु और चेला (*कविता*) 93

*बिना जड़ का पेड़ 101

13. स्वामी की दादी (*कहानी*) 103

*कार्टून 108

आस-पास 110

14. बाघ आया उस रात (*कविता*) 113

*एशियाई शेर के लिए मीठी गोलियाँ 117

15. बिशन की दिलेरी (*कहानी*) 118

*रात भर बिलखते-चिंघाड़ते रहे 126

16. पानी रे पानी (*लेख*) 128

*नदी का सफ़र 132

17. छोटी-सी हमारी नदी (*कविता*) 134

*जोड़ासाँको वाला घर 137

18. चुनौती हिमालय की (*यात्रा वर्णन*) 140

*हम क्या उगाते हैं 147

शब्दार्थ 148

अपनी-अपनी रंगतें

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

अपनी-अपनी रंगतें

इस भाग में शामिल की गई रचनाएँ ऐसी चीज़ों के बारे में हैं जिन्हें आम तौर पर संस्कृति के अंतर्गत रखा जाता है। संस्कृति शब्द का दायरा बहुत बड़ा है। इसके अंदर विरासत भी शामिल है। अब शायद यह सोचना ज़रूरी है कि विरासत किसे कहते हैं। विरासत में उन सब बातों और चीज़ों को शामिल किया जाता है जो हमें अपने पूर्वजों की याद दिलाती हैं। पुरानी इमारतें और स्मारक, चित्र और पुस्तकें, बगीचे और सड़कें ऐसी चीज़ों में शामिल हैं। इस तरह की विरासत को हम अपनी आँखों से देख सकते हैं, लेकिन विरासत के और भी कई रूप हैं जो हमारे जीवन में इतने घुल-मिल गए हैं कि अक्सर हम उनके बारे में अलग से नहीं सोचते। उदाहरण के तौर पर जो खाना हम रोज़ खाते हैं, विशेष दिनों पर जो पकवान और मिठाइयाँ बनाते हैं, या जो कपड़े हम पहनते हैं, ये सब हमारी विरासत का अंग हैं और हमारे रोज़ाना के जीवन का अंग बन गए हैं। यदि हम इनमें अपनी भाषा, रीति-रिवाज, धार्मिक मान्यताओं और जीवन-शैली को जोड़ लें तो ये सारी बातें मिलकर हमारी **संस्कृति** कहलाएँगी।

पाठ्यपुस्तक के इस भाग में शामिल रचनाएँ संस्कृति के कुछ विशेष पहलुओं को उभारती हैं। **खिलौने वाला** शीर्षक कविता कई खिलौनों की याद दिलाती है जिनसे बच्चे खेलते रहे हैं। कविता में जिन खिलौनों का ज़िक्र आया है, उनमें से कुछ खिलौने मशीनों से बनाए जाते हैं, लेकिन ऐसे भी कई खिलौने बाज़ार में मिलते हैं जो मिट्टी, कपड़े या लकड़ी से बनाए जाते हैं। इन खिलौनों को हाथ से भी बनाया जा सकता है। इस तरह के पारंपरिक खिलौने भारत के विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग रूप में बनाए जाते हैं। हमारे देश के हर हिस्से में मिट्टी या कपड़े की गुड़िया बनाने का रिवाज रहा है। गुड़िया के कपड़े, बाल और जूते उस इलाके की जीवन-शैली से मेल खाते हैं जहाँ वे बनाए गए हों। इस दृष्टिकोण से गुड़िया की आकृति और उसकी वेशभूषा में पाई जाने वाली अलग-अलग तरह की सुंदरता को हम भारत की सांस्कृतिक विविधता का एक अच्छा उदाहरण या प्रतीक मान सकते हैं। हमारे देश में ऐसे कई त्योहार हैं जिन्हें मनाते समय खास तरह के खिलौने बनाने का रिवाज है। सावन के महीने में मिट्टी के खिलौने, लकड़ी की चकरियाँ और लट्टू बनाए जाते हैं। लकड़ी के इन खिलौनों पर लाख के रंगों की चमकदार पालिश रहती है।

© NCERT not to be republished

फ़सलों का त्योहार शीर्षक लेख में फ़सलों से जुड़े उत्सवों का ज़िक्र किया गया है जो देश के विभिन्न प्रांतों में अलग-अलग नामों से मनाए जाते हैं। ये त्योहार भी भारत की सांस्कृतिक विविधता का सुंदर नमूना है। इस पाठ को पढ़कर यह समझा जा सकता है कि संस्कृति में कितनी सारी बातें शामिल रहती हैं जो एक तरफ़ प्रकृति और भूगोल से संबंधित हैं तो दूसरी तरफ़ मनुष्य के द्वारा बनाई गई सामग्री से।

खाने-पीने की चीज़ें और कपड़े इसलिए बनाए जाते हैं क्योंकि उनके बिना हम जी नहीं सकते। लेकिन ऐसी भी कई चीज़ें मनुष्य रचता है जो सीधे-सीधे किसी उपयोग में नहीं आतीं, फिर भी हमारे जीवन में इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती हैं क्योंकि वे सुंदर हैं। **नन्हा फ़नकार** कहानी एक ऐसे लड़के के बारे में है जो पत्थर को तराशकर उन पर घंटियाँ बनाता था। देश का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ पत्थर, लकड़ी, मिट्टी, कपड़े या कागज़ की मदद से सुंदर चीज़ें न बनाई जाती हों। भारत की हस्तकला सारी दुनिया में अपनी सुंदरता के लिए मशहूर हैं। कपड़े पर कढ़ाई करना ऐसा ही एक कौशल है जिसका महत्व **जहाँ चाह वहाँ राह** शीर्षक रचना में समझा जा सकता है। हमारे घर पर तकिए का गिलाफ़, मेज़पोश या फिर माँ की शाल पर रंगीन धागों की कढ़ाई देखी जा सकती है। बच्चे इस कढ़ाई को बारीकी से देखें और सुई-धागा लेकर खुद ऐसी कढ़ाई करने की कोशिश करें तो वे समझ जाएँगे कि यह काम कितनी मेहनत माँगता है। गुड़िया, मिठाई और त्योहारों की तरह ही कढ़ाई की सैंकड़ों शैलियाँ हमारे देश के अलग-अलग हिस्सों में पाई जाती हैं।

संस्कृति का ही एक और रूप पुरानी कहानियों में अभिव्यक्त होता है। जो कहानियाँ सैकड़ों वर्षों से चली आ रही हैं, उन्हें **लोककथा** कहते हैं। ये कहानियाँ आज हमें किताबों में पढ़ने को मिलती हैं, लेकिन पुराने समय से लेकर आज तक ये लोगों की स्मृति में ही जीवित रही हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से सुनाई जाती रही हैं। दुनिया के हर समाज में लोककथाएँ सुनी-सुनाई जाती हैं। इनमें से कुछ कहानियाँ मिलती-जुलती होती हैं लेकिन हर जगह की लोककथा अपना कुछ अलग रूप भी लिए रहती है। **राख की रस्सी** शीर्षक कहानी **तिब्बत** की लोककथा है जो हमें वहाँ के समाज की एक झलक देती है। हम यदि अपने आस-पास के इलाकों की लोककथाएँ पढ़ें या किसी बड़े-बूढ़े से सुनें तो उस कहानी में भी समाज, संस्कृति और इतिहास के बारे में बहुत सारी बातें जान सकेंगे।

© NCERT not to be republished

1 राख की रस्सी

0525CH01

लोनपो गार तिब्बत के बत्तीसवें राजा सौनगवसैन गांपो के मंत्री थे। वे अपनी चालाकी और हाज़िरजवाबी के लिए दूर-दूर तक मशहूर थे। कोई उनके सामने टिकता न था। चैन से ज़िंदगी चल रही थी। मगर जब से उनका बेटा बड़ा हुआ था उनके लिए चिंता का विषय बना हुआ था। कारण यह था कि वह बहुत भोला था। होशियारी उसे छूकर भी नहीं गई थी। लोनपो गार ने सोचा, "मेरा बेटा बहुत सीधा-सादा है। मेरे बाद इसका काम कैसे चलेगा!"

एक दिन लोनपो गार ने अपने बेटे को सौ भेड़ें देते हुए कहा, "तुम इन्हें लेकर शहर जाओ। मगर इन्हें मारना या बेचना नहीं। इन्हें वापस लाना सौ जौ के बोरों के साथ। वरना मैं तुम्हें घर में नहीं घुसने दूँगा।" इसके बाद उन्होंने बेटे को शहर की तरफ़ रवाना किया।

लोनपो गार का बेटा शहर पहुँच गया। मगर इतने बोरे जौ खरीदने के लिए उसके पास रुपए ही कहाँ थे? वह इस समस्या पर सोचने-विचारने के लिए सड़क किनारे बैठ गया। मगर कोई हल उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था। वह बहुत दुखी था। तभी एक लड़की उसके सामने आ खड़ी हुई। "क्या बात है तुम इतने दुखी क्यों हो?" लोनपो गार के बेटे ने अपना हाल कह सुनाया। "इसमें इतना दुखी होने की कोई बात नहीं। मैं इसका हल निकाल देती हूँ।" इतना कहकर लड़की ने भेड़ों के

© NCERT not to be republished

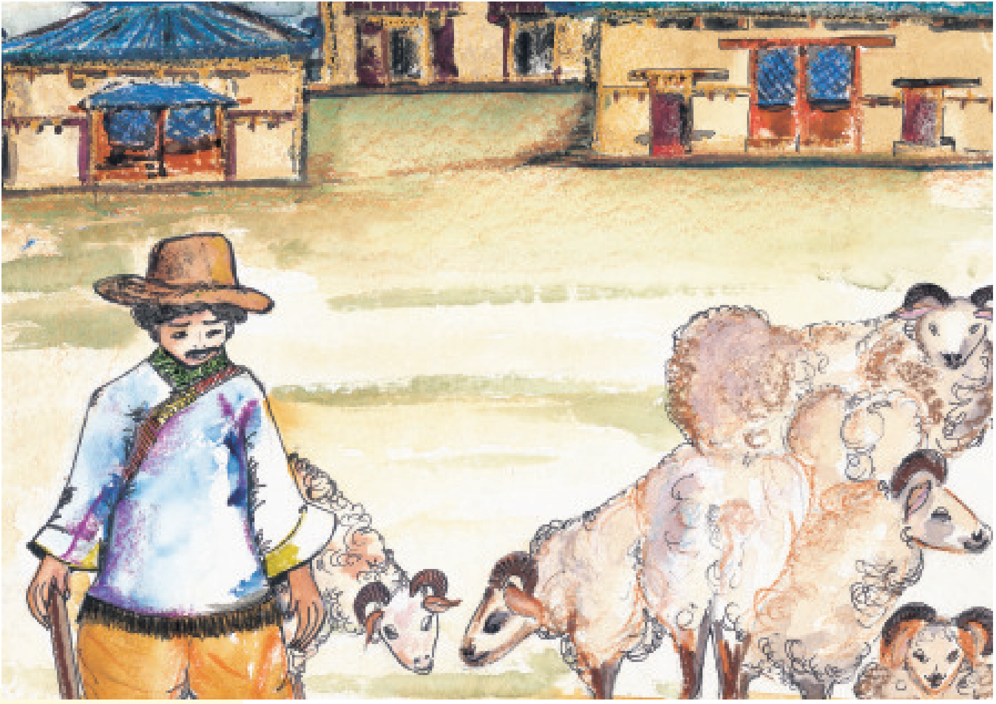

बाल उतारे और उन्हें बाज़ार में बेच दिया। जो रुपए मिले उनसे जौ के सौ बोरे खरीदकर उसे घर वापस भेज दिया।

लोनपो गार के बेटे को लगा कि उसके पिता बहुत खुश होंगे। मगर उसकी आपबीती पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। वे उठकर कमरे से बाहर चले गए। दूसरे दिन उन्होंने अपने बेटे को बुलाकर कहा, "पिछली बार भेड़ों के बाल उतारकर बेचना मुझे ज़रा भी पसंद नहीं आया। अब तुम दोबारा उन्हीं भेड़ों को लेकर जाओ। उनके साथ जौ के सौ बोरे लेकर ही लौटना।"

एक बार फिर निराश लोनपो गार का बेटा शहर में उसी जगह जा बैठा। न जाने क्यों उसे यकीन था कि वह लड़की उसकी मदद के लिए ज़रूर आएगी। और हुआ भी कुछ ऐसा ही, वह लड़की आई। उससे उसने अपनी मुश्किल कह सुनाई, "अब तो बिना जौ के सौ बोरों के मेरे पिता मुझे घर में नहीं घुसने देंगे।" लड़की सोचकर बोली, "एक तरीका है।" उसने भेड़ों के सींग काट लिए। उन्हें बेचकर जो रुपए मिले उनसे सौ बोरे जौ खरीदे। बोरे लोनपो गार के बेटे को सौंपकर लड़की ने उसे घर भेज दिया।

भेड़ें और जौ के बोरे पिता के हवाले करते हुए लोनपो गार का बेटा खुश था। उसने विजयी भाव से सारी कहानी कह सुनाई। सुनकर लोनपो गार बोले, "उस लड़की से कहो कि हमें नौ हाथ लंबी राख की रस्सी बनाकर दे।" उनके बेटे ने लड़की के पास जाकर पिता का संदेश दोहरा दिया। लड़की ने एक शर्त रखी, "मैं रस्सी बना तो दूँगी। मगर तुम्हारे पिता को वह गले में पहननी होगी।" लोनपो गार ने सोचा ऐसी रस्सी बनाना ही असंभव है। इसलिए लड़की की शर्त मंज़ूर कर ली।

अगले दिन लड़की ने नौ हाथ लंबी रस्सी ली। उसे पत्थर के सिल पर रखा

और जला दिया। रस्सी जल गई, मगर रस्सी के आकार की राख बच गई। इसे वह सिल समेत लोनपो गार के पास ले गई और उसे पहनने के लिए कहा। लोनपो गार रस्सी देखकर चकित रह गए। वे जानते थे कि राख की रस्सी को गले में पहनना तो दूर, उठाना भी मुश्किल है। हाथ लगाते ही वह टूट जाएगी। लड़की की समझदारी के सामने उनकी अपनी चालाकी धरी रह गई। बिना वक्त गँवाए लोनपो गार ने अपने बेटे की शादी का प्रस्ताव लड़की के सामने रख दिया। धूमधाम से उन दोनों की शादी हो गई।

अपनी बात

© NCERT not to be republished

भोला-भाला

1. तिब्बत के मंत्री अपने बेटे के भोलेपन से चिंतित रहते थे।

   (क) तुम्हारे विचार से वे किन-किन बातों के बारे में सोचकर परेशान होते थे?

   (ख) तुम तिब्बत के मंत्री की जगह होती तो क्या उपाय करती?

शहर की तरफ़

1. "मंत्री ने अपने बेटे को शहर की तरफ़ रवाना किया।"

   (क) मंत्री ने अपने बेटे को शहर क्यों भेजा था?

   (ख) उसने अपने बेटे को भेड़ों के साथ शहर में ही क्यों भेजा?

   (ग) तुम्हारे घर के बड़े लोग पहले कहाँ रहते थे? घर में पता करो। आस-पड़ोस में भी किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में पता करो जो किसी दूसरी जगह जाकर बस गया हो। उनसे बातचीत करो और जानने की कोशिश करो कि क्या वे अपने निर्णय से खुश हैं। क्यों? एक पुरुष, एक महिला और एक बच्चे से बात करो। यह भी पूछो कि उन्होंने वह जगह क्यों छोड़ दी?

2. 'जौ' एक तरह का अनाज है जिसे कई तरह से इस्तेमाल किया जाता है। इसकी रोटी बनाई जाती है, सत्तू बनाया जाता है और सूखा भूनकर भी खाया जाता है। अपने घर में और स्कूल में बातचीत करके कुछ और अनाजों के नाम पता करो।

गेहूँ	जौ
....	....
....	....

3. गेहूँ और जौ अनाज होते हैं और ये तीनों शब्द संज्ञा हैं। 'गेहूँ' और 'जौ' अलग-अलग किस्म के अनाजों के नाम हैं इसलिए ये दोनों व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं और 'अनाज' जातिवाचक संज्ञा है। इसी प्रकार 'रिमझिम' व्यक्तिवाचक संज्ञा है और 'पाठ्यपुस्तक' जातिवाचक संज्ञा है।

   (क) नीचे दी गई संज्ञाओं का वर्गीकरण इन दो प्रकार की संज्ञाओं में करो–

लेह	धातु	शेरवानी	भोजन
ताँबा	खिचड़ी	शहर	वेशभूषा

   (ख) ऊपर लिखी हर जातिवाचक संज्ञा के लिए तीन-तीन व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ खुद सोचकर लिखो।

तुम सेर, मैं सवा सेर

1. इस लड़की का तो सभी लोहा मान गए। था न सचमुच नहले पर दहला! तुम्हें भी यही करना होगा।

2020-21

तुम ऐसा कोई काम ढूँढ़ो जिसे करने के लिए सूझबूझ की ज़रूरत हो। उसे एक कागज़ में लिखो और तुम सभी अपनी-अपनी चिट को एक डिब्बे में डाल दो। डिब्बे को बीच में रखकर उसके चारों ओर गोलाई में बैठ जाओ। अब एक-एक करके आओ, उस डिब्बे से एक चिट निकालकर पढ़ो और उसके लिए कोई उपाय सुझाओ। जिस बच्चे ने सबसे ज़्यादा उपाय सुझाए वह तुम्हारी कक्षा का 'बीरबल' होगा।

2. मंत्री ने बेटे से कहा, "पिछली बार भेड़ों के बाल उतारकर बेचना मुझे ज़रा भी पसंद नहीं आया।"

   क्या मंत्री को सचमुच यह बात पसंद नहीं आई थी? अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

सींग और जौ

पहली बार में मंत्री के बेटे ने भेड़ों के बाल बेच दिए और दूसरी बार में भेड़ों के सींग बेच डाले। जिन लोगों ने ये चीज़ें खरीदी होंगी, उन्होंने भेड़ों के बालों और सींगों का क्या किया होगा? अपनी कल्पना से बताओ।

बात को कहने के तरीके

1. नीचे कहानी से कुछ वाक्य दिए गए हैं। इन बातों को तुम और किस तरह से कह सकती हो—
   (क) चैन से ज़िंदगी चल रही थी।
   (ख) होशियारी उसे छूकर भी नहीं गई थी।
   (ग) मैं इसका हल निकाल देती हूँ।
   (घ) उनकी अपनी चालाकी धरी रह गई।
2. 'लोनपो गार का बेटा होशियार नहीं था।'
   (क) 'होशियार' और 'चालाक' में क्या फ़र्क होता है? किस आधार पर किसी को तुम चालाक या होशियार कह सकती हो? इसी प्रकार 'भोला' और 'बुद्धू' के बारे में भी सोचो और कक्षा में चर्चा करो।
   (ख) लड़की को तुम 'समझदार' कहोगी या बुद्धिमान? क्यों?

© NCERT
not to be republished

नाम दो

कहानी में लोनपो गार के बेटे और लड़की को कोई नाम नहीं दिया गया है। नीचे तिब्बत में बच्चों के नामकरण के बारे में बताया गया है। यह परिचय पढ़ो और मनपसंद नाम छाँटकर बेटे और लड़की को कोई नाम दो।

नायिमा, डावा, मिगमार, लाखपा, नुखू, फू दोरजे–ये क्या हैं? कोई खाने की चीज़ या घूमने की जगहों के नाम। जी नहीं, ये हैं तिब्बती बच्चों के कुछ नाम। ये सारे नाम तिब्बत में शुभ माने जाते हैं। 'नायिमा' नाम दिया जाता है रविवार को जन्म लेने वाले बच्चों को। मानते हैं कि इससे बच्चे को उस दिन के देवता सूरज जैसी शक्ति मिलेगी और जब-जब उसका नाम पुकारा जाएगा, यह शक्ति बढ़ती जाएगी। सोमवार को जन्म लेने वाले बच्चों का नाम 'डावा' रखा जाता है। यह लड़का-लड़की दोनों का नाम हो सकता है। तिब्बती भाषा में डावा के दो मतलब होते हैं, सोमवार और चाँद। यानी डावा चाँद जैसी रोशनी फैलाएगी और अँधेरा दूर करेगी। तिब्बत में बुद्ध के स्त्री-पुरुष रूपों पर भी नामकरण करते हैं, खासकर दोलमा नाम बहुत मिलता है। यह बुद्ध के स्त्री रूप तारा का ही तिब्बती नाम है।

© NCERT not to be republished

* दुनिया की छत

किसी भी लोककथा को समझने के लिए उस इलाके की जलवायु, रहन-सहन, खान-पान और संस्कृति को समझना उपयोगी होता है, जिस इलाके में वह लोककथा सुनाई जाती है। **राख की रस्सी** शीर्षक लोककथा तिब्बत से संबंधित है, जिसे दुनिया की छत कहा जाता है क्योंकि यह बहुत ऊँचे पठार पर स्थित है। पठार ज़मीन के ऐसे भाग को कहते हैं जो मैदान से ऊँचा और पहाड़ से नीचा होता है। तिब्बत के पठार पर खड़े हैं ऊँचे-ऊँचे पहाड़ जो हिमालय का हिस्सा हैं। इन पहाड़ों की एक खासियत यह है कि ये कई रंग के हैं—भूरे, लाल, पीले, बैंगनी, गुलाबी, गेरुआ और हरे। ठीक वैसे ही जैसे छोटे बच्चे अपने चित्रों में मनचाहे रंग भर देते हैं। इन पथरीले पहाड़ों में तरह-तरह की मिट्टी और खनिज पदार्थ हैं। सूरज की बढ़ती और घटती किरणों के पड़ने से वे पहाड़ अनोखे रंगों में चमक उठते हैं।

तिब्बत की हवा में नमी बहुत कम है। इस वजह से यहाँ बरसात और बर्फ़बारी कम होती है। खुश्क मौसम में पेड़-पौधे बहुत नहीं होते हैं। तिब्बत का पूर्वी भाग ही ऐसा है जहाँ घने जंगल पाए जाते हैं। उन जंगलों में पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों की दुर्लभ किस्में मिलती हैं। तिब्बत की मिट्टी कहीं रेतीली है, कहीं लाल-पीली, तो कहीं काली।

तिब्बत में लगभग 1500 झीलें हैं। ये झीलें बनती हैं पहाड़ों की बर्फ़ पिघलने से। इनमें मानसरोवर झील का बहुत नाम है। यहीं से सांगपो यानी ब्रह्मपुत्र नदी निकलती है।

काफ़ी ऊँचाई पर बसा होने के कारण तिब्बत बहुत ठंडा प्रदेश है। यहाँ की सर्दी का हाल मत पूछो! ऐसा लगता है जैसे किसी ने फ्रिज़ में डाल दिया हो और ऊपर से तेज़ ठंडी

* **दुनिया की छत** बच्चों को तिब्बत के बारे में जानकारी देने के लिए दिया गया है। इसमें से प्रश्न नहीं पूछे जाएँ।

हवा चल रही हो। इसीलिए वहाँ के लोग हमेशा भारी - भरकम गर्म कपड़े पहने रहते हैं।

तिब्बती लोगों की घर बनाने की कारीगरी अनोखी है। यहाँ लकड़ी के बने हुए बहुमंज़िला घर हैं। लोग अब पत्थर, मिट्टी और सीमेंट के घर भी बनाने लगे हैं। खिड़कियाँ भी अधिक बनाई जाती हैं ताकि सूर्य की ढेर सारी रोशनी घर के अंदर जा सके। भूकंप से बचाव के लिए दीवारें अंदर की ओर थोड़ा झुकी होती हैं।

तिब्बत का सबसे बड़ा शहर है ल्हासा। 3650 मीटर की ऊँचाई पर स्थित होने के कारण यह दुनिया का सबसे ऊँचा शहर माना जाता है। कपड़ों तथा खाने-पीने के लिए यहाँ का बाज़ार बहुत प्रसिद्ध है। ल्हासा को तिब्बतियों का दिल माना जाता है।

2 फ़सलों के त्योहार

0525CH02

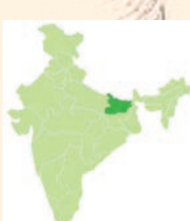

सारा दिन बोरसी के आगे बैठकर हाथ तापते हुए गुज़र जाता है। कहाँ तो खिचड़ी के समय धूप में गरमाहट की शुरुआत होनी चाहिए और यहाँ हम सूरज के इंतज़ार में आस लगाए बैठे हुए हैं। पूरे दस दिन हो गए सूरज लापता है। आज सुबह तो रज़ाई से निकलने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

बाहर देखने से तो समय का अंदाज़ा बिलकुल नहीं हो रहा लेकिन घर में हो रही चहल-पहल अब पता चल रही है। रह-रहकर कानों में कभी चाँपाकल के चलने और पानी के गिरने की आवाज़ तो कभी किसी के हाँक लगाने की आवाज़ आ रही थी, "जा भाग के देख केरा के पत्ता आइल की ना?"

"आज ई लोग के उठे के नईखे का? बोल जल्दी तैयार होखस।"

अब तो उठने में ही भलाई है।

नहा-धोकर हम सभी एक कमरे में इकट्ठा हुए। दादा और चाचा ने क्या सफ़ेद चकाचक माँड़ लगी धोती और कुर्ता पहना हुआ है! "खिचड़ी में अइसन ठाड़ हम पहिले कब्बो ना देख नी सारा देह कनकना दे ता!" पापा ने कहा। शायद आज धोती में उन्हें ठंड कुछ ज़्यादा लग रही है।

सामने मचिया पर खादी की सफ़ेद साड़ी पहने हुए दादी बैठी थीं। आज दादी ने अपने बाल धोए हैं—झक सफ़ेद सेमल की रुई जैसे हल्के-फुलके बाल। गौर से देखने पर भी एक काला बाल नज़र नहीं आता। बिल्कुल धुली-धुली सी लग रही हैं दादी। उनके सामने केले के कुछ पत्ते कतार में रखे हैं जिस पर तिल, मिट्ठा (गुड़), चावल आदि के छोटे-छोटे ढेर पड़े हुए हैं। हमें बारी-बारी से उन सभी चीज़ों को छूने और प्रणाम करने के लिए कहा गया। जब सबने ऐसा कर लिया तो उन सभी चीज़ों को एक जगह इकट्ठा करके दान दे दिया गया।

आज तो अप्पी दिदिया बुरी फँसी। उन्हें न तो चूड़ा-दही ही पसंद है और न ही खिचड़ी, पर आज तो फ़रमाइशी नाश्ता नहीं चलेगा। उन्हें दोनों ही चीज़ें खानी पड़ेंगी... आज खिचड़ी जो है! खिचड़ी खाने के बाद सभी ने 'गया' से आए तिल,

© NCERT not to be republished

गुड़ और चीनी के तिलकुट को बड़े चाव से खाया। खाते–खाते मैं सोच रही थी कि कितनी अलग है न यह खिचड़ी जो अभी हम मना रहे हैं। स्कूल में हम जो खिचड़ी मनाते थे उसकी अलग ही मस्ती हुआ करती थी। छुट्टी का दिन, नाव में बैठकर गंगा नदी की सैर और फिर टापू पर बालू में दौड़ते हुए पतंग उड़ाना या उड़ाने की कोशिश करना। कितना मज़ा आता था। इधर हम पतंग उड़ाते थे और वहीं थोड़ी दूर पर गुरुजी, विमला दिद्दा, आनंद जी, झिलमिट भैया सब मिलकर ईंट से बने चूल्हे पर बड़े–बड़े कड़ाहों में खिचड़ी बनाते थे। हम भी बीच–बीच में अपनी पतंगों को सुस्ताने का मौका देते हुए मटर और प्याज छीलने बैठ जाते। वैसी खिचड़ी फिर दुबारा खाने को नहीं मिली। वाकई, ढंग कैसा भी हो, पर है ये खुशियों का त्योहार!

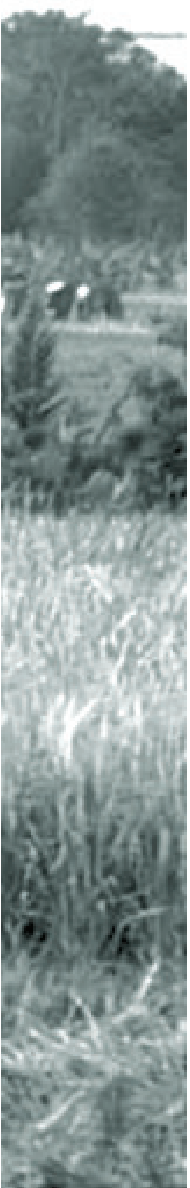

जनवरी माह के मध्य में भारत के लगभग सभी प्रांतों में फ़सलों से जुड़ा कोई–न–कोई त्योहार मनाया जाता है। कोई फ़सलों के तैयार हो जाने पर खुशी बाँटता है तो कुछ लोग इस उम्मीद में खुश होते हैं कि अब पाला कम होगा, सूरज की गर्मी बढ़ने से खेतों में खड़ी फ़सल तेज़ी से बढ़ेगी। सभी प्रांतों और इलाकों का अपना रंग और अपना ढंग नज़र आता है। इस दिन सब लोग अच्छी पैदावार की उम्मीद और फ़सलों के घर में आने की खुशी का इज़हार करते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश में मकर–संक्रांति या तिल संक्रांत, असम में बीहू, केरल में ओणम, तमिलनाडु में पोंगल, पंजाब में लोहड़ी, झारखंड में सरहुल, गुजरात में पतंग का पर्व सभी खेती और फ़सलों से जुड़े त्योहार हैं। इन्हें जनवरी से मध्य अप्रैल तक अलग–अलग समय मनाया जाता है।

झारखंड में सरहुल बड़े जोशो–खरोश के साथ मनाया जाता है। चार दिनों तक इसका जश्न चलता रहता है।

अलग–अलग जनजातियाँ इसे अलग–अलग समय में मनाती हैं। संथाल लोग फरवरी–मार्च में, तो ओरांव लोग इसे मार्च–अप्रैल में मनाते हैं। आदिवासी आमतौर पर प्रकृति की पूजा करते हैं। सरहुल के दिन विशेष रूप से 'साल' के पेड़ की पूजा की जाती है। यही समय है जब साल के पेड़ों में फूल आने लगते हैं और मौसम बहुत ही खुशनुमा हो जाता है। स्त्री–पुरुष दोनों ही ढोल–मंजीरे

© NCERT not to be republished

लेकर रात भर नाचते-गाते हैं। चारों ओर फैली हुई छोटी-छोटी घाटियाँ, लंबे-लंबे साल के वृक्षों का जंगल और वहीं आस-पास बसे छोटे-छोटे गाँव। लिपे-पुते, करीने से बुहारे और सजाए गए अपने घरों के सामने लोग एक पंक्ति में कमर में बाँहें डालकर नृत्य करते हैं। अगले दिन वे नृत्य करते हुए घर-घर जाते हैं और फूलों के पौधे लगाते हैं। घर-घर से चंदा माँगने की भी प्रथा है। पर चंदे में मालूम है क्या माँगते हैं? मुर्गा, चावल और मिश्री। फिर चलता है खाने-पीने और खेलों का दौर। तीसरे दिन जाकर पूजा होती है जिसके बाद लोग अपने कानों में सरई का फूल पहनते हैं।

इसी दिन से वसंत ऋतु की शुरुआत मानी जाती है। धान की भी पूजा होती है। पूजा किया हुआ आशीर्वादी धान अगली फ़सल में बोया जाता है।

तमिलनाडु में मकर-संक्रांति या फ़सलों से जुड़ा त्योहार 'पोंगल' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन खरीफ़ की फ़सलें चावल, अरहर, आदि कटकर घरों में पहुँचती हैं। लोग नए धान कूटकर चावल निकालते हैं। हर घर में मिट्टी का नया मटका लाया जाता है जिसमें नए चावल, दूध और गुड़ डालकर उसे पकाने के लिए धूप में रख देते हैं। हल्दी शुभ मानी जाती है इसलिए साबुत हल्दी को मटके के मुँह के चारों ओर बाँध देते हैं। यह मटका दिन में साढ़े दस-बारह बजे तक धूप में रखा जाता है। जैसे ही दूध में उफान आता है और दूध-चावल मटके से बाहर गिरने लगता है तो "पोंगला-पोंगल, पोंगला-पोंगल" (खिचड़ी में उफान आ गया) के स्वर सुनाई देते हैं।

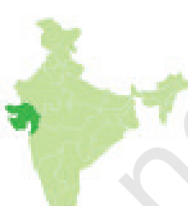

दूसरी ओर, गुजरात में पतंगों के बिना तो मकर-संक्रांति का जश्न अधूरा ही माना जाएगा। इस दिन आसमान की ओर यदि नज़र उठाएँ तो शायद हर आकार और रंग-रूप की पतंगें आकाश में लहराती हुई मिलें। प्रत्येक गुजराती चाहे वह किसी भी धर्म, जाति या आयु का हो, पतंग उड़ाता है। हज़ारों-लाखों पतंगों से सूर्य भी ढक-सा जाता है।

© NCERT not to be republished

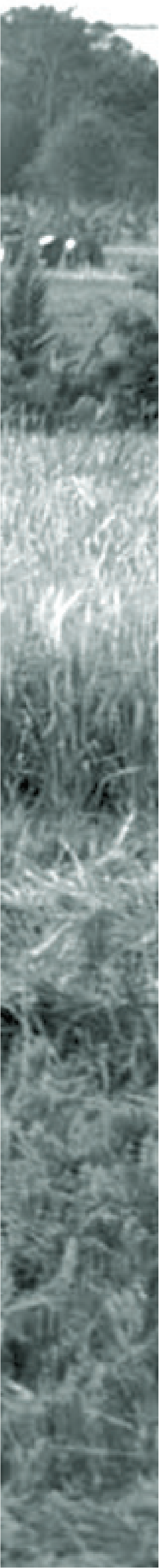

कुमाऊँ में मकर संक्रांति को घुघुतिया भी कहते हैं। इस दिन आटे और गुड़ को गूँधकर पकवान बनाए जाते हैं। इन पकवानों को तरह-तरह के आकार दिए जाते हैं जैसे-डमरू, तलवार, दाड़िम का फूल आदि। पकवान को तलने के बाद एक माला में पिरोया जाता है। माला के बीच में संतरा और गन्ने की गंडेरी पिरोई जाती है। यह काम बच्चे बहुत रुचि और उत्साह के साथ करते हैं। सुबह बच्चों को माला दी जाती है। बहुत ठंड के कारण पक्षी पहाड़ों से चले जाते हैं। उन्हें बुलाने के लिए बच्चे इस माला से पकवान तोड़-तोड़कर पक्षियों को खिलाते हैं और गाते हैं-

कौआ आओ
घुघूत आओ
ले कौआ बड़ौ
म कै दे जा सोने का घड़ौ
खा लै पूरी
म कै दे जा सोने की छुरी

इसके साथ ही जिस चीज़ की कामना हो, वह माँगते हैं।

है न कितने अलग-अलग अंदाज़ मकर-संक्रांति को मनाने के? कहीं दूध, चावल और गुड़ की खीर बनती है तो कोई पाँच प्रकार के नए अनाज की खिचड़ी बनाता है। कहीं-कहीं लोगों का सैलाब नदी में स्नान के लिए उमड़ पड़ता है। लोग ठंड से ठिठुरते रहेंगे पर बर्फ़ीले पानी में कम-से-कम एक डुबकी तो ज़रूर लगाएँगे। हाल यह होता है कि इन जगहों पर तिल रखने की भी जगह नहीं होती। तिल से याद आया! मकर संक्रांति के दिन पानी में तिल डालकर स्नान करना, तिल दान करना, आग में तिल डालना, तिल के पकवान बनाना विशेष महत्व रखता है। तुम्हारे घर या इलाके में इस त्योहार को कैसे मनाया जाता है? इसे खिचड़ी, पोंगल, मकर-संक्रांति या कुछ और कहा जाता है? या तुम फ़सलों से जुड़े कोई और त्योहार मनाती हो? यदि तुम आपस में बात करो तो तुम्हें यह जानकर हैरानी होगी कि कई बार एक ही इलाके में रहने वाले लोग भी इस त्योहार को अलग-अलग ढंग से मनाते हैं।

© NCERT not to be republished

मौसम का अंदाज़

1. "खिचड़ी में अइसन जाड़ा हम पहिले कब्बो ना देखनीं।"
   यहाँ तुम 'खिचड़ी' से क्या मतलब निकाल रही हो?
2. क्या कभी ऐसा हो सकता है कि सूरज बिल्कुल ही न निकले?
   अगर ऐसा हो तो ....

   ....

   ....

   ....

   ....

   अपने साथियों के साथ बातचीत करके लिखो।
3. बाहर देखने से समय का अंदाज़ा क्यों नहीं हो पा रहा था?
   जिनके पास घड़ी नहीं होती वे समय का अनुमान किस तरह से लगाते हैं?

तुम्हारी ज़ुबान

(क) "आज ई लोग के उठे के नईखे का?"

(ख) "जा भाग के देख केरा के पत्ता आइल की ना?"

इन वाक्यों को अपने घर की भाषा में लिखो।

भारत तेरे रंग अनेक

1. विविधता हमारे देश की पहचान है। 'फ़सलों के त्योहार' हमारे देश के विविध रंग-रूपों का एक उदाहरण है। नीचे विविधता के कुछ और उदाहरण दिए गए हैं। पाँच-पाँच बच्चों का समूह एक-एक उदाहरण ले और उस पर जानकारी इकट्ठी करे। (जानकारी चित्र, फ़ोटोग्राफ़, कहानी, कविता, सूचनापरक सामग्री के रूप में हो सकती है।) हर समूह इस जानकारी को कक्षा में प्रस्तुत करे।
   - भाषा
   - कपड़े
   - नया वर्ष
   - भोजन
   - लोक कला
   - लोक संगीत
2. तुम्हें कौन-सा त्योहार सबसे अच्छा लगता है और क्यों? इस दिन तुम्हारी दिनचर्या क्या रहती है?

अन्न के बारे में

(क) फ़सल के त्योहार पर 'तिल' का बहुत महत्व होता है। तिल का किन-किन रूपों में इस्तेमाल किया जाता है? पता करो।

(ख) क्या तुम जानती हो कि तिल से तेल बनता है? और किन चीज़ों से तेल बनता है और कैसे? हो सके तो तेल की दुकान में जाकर पूछो।

2020-21

© NCERT not to be republished

किसान और चीज़ों का सफ़र

किसान और खेती बहुत-से लोगों की जानी-पहचानी दुनिया का हिस्सा नहीं है। विशेष रूप से शहर के ज़्यादातर लोगों को यह अहसास नहीं है कि हमारी ज़िंदगी किस हद तक इनसे जुड़ी हुई है। देश के कई हिस्सों में आज किसानों को ज़िंदा रहने के लिए बहुत मेहनत और संघर्ष करना पड़ रहा है। अगर यह जानने की कोशिश करें कि हम दिनभर जो चीज़ें खाते हैं वे कहाँ से आती हैं–तो किसानों की हमारी ज़िंदगी में भूमिका को हम समझ पाएँगे। ***आलू की पकौड़ी, बर्फ़ी*** और ***आइसक्रीम***– इन तीन चीज़ों के बारे में नीचे दिए गए बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए जानकारी इकट्ठी करो और 'मेरी कहानी' के रूप में उसे लिखो।

- किन चीज़ों से बनती है?
- इन चीज़ों का जन्म कहाँ होता है?
- हम तक पहुँचने का उनका सफ़र क्या है?
- किन-किन हाथों से होकर हम तक पहुँचती है?
- इस पूरे सफ़र में किन लोगों की कितनी मेहनत लगती है?
- इन लोगों में से किसको कितना मुनाफ़ा मिलता है?

अगले वर्ष कक्षा छह में सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन के बारे में पढ़ोगी तो ऊपर लिखे सफ़र में शामिल लोगों की दिनचर्या पता करने का मौका भी मिलेगा।

खास पकवान

1. 'गया' शहर तिलकुट के लिए भी प्रसिद्ध है। हमारे देश में छोटी-बड़ी ऐसी कई जगहें हैं जो अपने खास पकवान के लिए मशहूर हैं। अपने परिवार के लोगों से पता करके उनके बारे में बताओ।
2. पिछले दो वर्षों में तुमने 'काम वाले शब्दों' के बारे में जाना।
इन शब्दों को *क्रिया* भी कहते हैं क्योंकि क्रिया का संबंध कोई काम 'करने' से है। नीचे खिचड़ी बनाने की विधि दी गई है। इसमें बीच-बीच में कुछ क्रियाएँ छूट गई हैं। उचित क्रियाओं का प्रयोग करते हुए इसे पूरा करो।

छौंकना	पीसना	पकाना	धोना	परोसना	भूनना

बंगाली 'खिचुरी' (5 व्यक्तियों के लिए)

सामग्री	मात्रा
अदरक	20 ग्राम
लहसुन	3 फाँकें
इलायची के दाने	3 छोटी
दालचीनी	2½ से.मी. का 1 टुकड़ा

© NCERT not to be republished

पानी	4 प्याले
मूँग दाल	½ प्याला
सरसों का तेल	3 बड़े चम्मच
तेज पत्ते	2
जीरा	½ छोटा चम्मच
प्याज़ बारीक कटा हुआ	1 मँझोला
चावल धुले हुए	1 प्याला
फूल गोभी बड़े-बड़े टुकड़ों में कटी हुई	200 ग्राम
आलू छीलकर चार-चार टुकड़ों में कटे हुए	2
मटर के दाने	½ प्याला
धनिया पिसा हुआ	1 बड़ा चम्मच
लाल मिर्च पिसी हुई	½ छोटा चम्मच
चीनी	1 छोटा चम्मच
घी	2 बड़े चम्मच
नमक और हल्दी	अंदाज़ से

विधि

इलायची, दालचीनी और लौंग में थोड़ा-थोड़ा पानी (एक छोटा चम्मच) डालते हुए............ लो। अदरक और लहसुन को इकट्ठा पीसकर पेस्ट बनाओ। दाल को कड़ाही में डालो और मध्यम आँच पर सुनहरी भूरी होने तक............ लो। अब दाल निकाल कर .... लो। तेल को कुकर में डालकर गरम करो। तेल गरम हो जाने पर तेजपत्ते और जीरा डालो। जीरा जब चटकने लगे तो प्याज़ डालकर सुनहरा भूरा होने तक भूनो। अब अदरक-लहसुन का पेस्ट डालकर कुछ मिनट............। धुली हुई दाल, चावल और सब्ज़ी डालो और अच्छी तरह मिलाओ। शेष पानी (चार प्याले) डालकर एक बार चलाओ। कुकर बंद करो। तेज़ आँच पर पूर्ण प्रेशर आने दो। अब आँच कम करके चार मिनट तक............। भाप निकल जाने पर कुकर खोलो, मसालों का पेस्ट मिलाओ। खिचुरी पर घी, हींग, जीरा, साबुत लाल मिर्च से............ कर .... गरमागरम।

छुट्टी के दिन घर में ऐसी खिचड़ी बनाने में बड़ों की मदद करो।

खाने से जुड़ी कुछ अन्य क्रियाएँ भी सोचो।

© NCERT not to be republished

0525CH03

3 खिलौनेवाला

वह देखो माँ आज
खिलौनेवाला फिर से आया है।
कई तरह के सुंदर-सुंदर
नए खिलौने लाया है।
हरा-हरा तोता पिंजड़े में
गेंद एक पैसे वाली
छोटी-सी मोटर गाड़ी है
सर-सर-सर चलने वाली।
सीटी भी है कई तरह की
कई तरह के सुंदर खेल
चाभी भर देने से भक-भक
करती चलने वाली रेल।
गुड़िया भी है बहुत भली-सी
पहिने कानों में बाली
छोटा-सा 'टी सेट' है
छोटे-छोटे हैं लोटा-थाली।
छोटे-छोटे धनुष-बाण हैं
हैं छोटी-छोटी तलवार
नए खिलौने ले लो भैया
ज़ोर-ज़ोर वह रहा पुकार।
मुन्नू ने गुड़िया ले ली है
मोहन ने मोटर गाड़ी
मचल-मचल सरला कहती है
माँ से लेने को साड़ी
कभी खिलौनेवाला भी माँ
क्या साड़ी ले आता है।
साड़ी तो वह कपड़े वाला
कभी-कभी दे जाता है
अम्मा तुमने तो लाकर के

© NCERT not to be republished

मुझे दे दिए पैसे चार
कौन खिलौना लेता हूँ मैं
तुम भी मन में करो विचार।
तुम सोचोगी मैं ले लूँगा।
तोता, बिल्ली, मोटर, रेल
पर माँ, यह मैं कभी न लूँगा
ये तो हैं बच्चों के खेल।
मैं तलवार खरीदूँगा माँ
या मैं लूँगा तीर-कमान
जंगल में जा, किसी ताड़का
को मारूँगा राम समान।
तपसी यज्ञ करेंगे, असुरों—
को मैं मार भगाऊँगा
यों ही कुछ दिन करते-करते
रामचंद्र बन जाऊँगा।
यहीं रहूँगा कौशल्या मैं
तुमको यहीं बनाऊँगा।
तुम कह दोगी वन जाने को
हँसते-हँसते जाऊँगा।
पर माँ, बिना तुम्हारे वन में
मैं कैसे रह पाऊँगा।
दिन भर घूमूँगा जंगल में
लौट कहाँ पर आऊँगा।
किससे लूँगा पैसे, रूठूँगा
तो कौन मना लेगा
कौन प्यार से बिठा गोद में
मनचाही चीज़ें देगा।

सुभद्रा कुमारी चौहान

© NCERT not to be republished

कविता और तुम

1. तुम्हें किसी-न-किसी बात पर रूठने के मौके तो मिलते ही होंगे—
   (क) अक्सर तुम किस तरह की बातों पर रूठती हो?
   (ख) माँ के अलावा घर में और कौन-कौन हैं जो तुम्हें मनाते हैं?
2. हम ऐसे कई त्योहार मनाते हैं जो बुराई पर अच्छाई की जीत पर बल देते हैं। ऐसे त्योहारों के बारे में और उनसे जुड़ी कहानियों के बारे में पता करके कक्षा में सुनाओ।
3. तुमने रामलीला के ज़रिए या फिर किसी कहानी के ज़रिए रामचंद्र के बारे में जाना-समझा होगा। तुम्हें उनकी कौन-सी बातें अच्छी लगीं?
4. नीचे दिए गए भाव कविता की जिन पंक्तियों में आए हैं, उन्हें छाँटो–
   (क) खिलौनेवाला साड़ी नहीं बेचता है।
   (ख) खिलौनेवाला बच्चों को खिलौने लेने के लिए आवाज़ें लगा रहा है।
   (ग) मुझे कौन-सा खिलौना लेना चाहिए–उसमें माँ की सलाह चाहिए।
   (घ) माँ के बिना कौन मनाएगा और कौन गोद में बिठाएगा।
5. 'मूँगफली ले लो मूँगफली!
   गरम करारी टाइम पास मूँगफली!'
   तुमने फेरीवालों को ऐसी आवाज़ें लगाते ज़रूर सुना होगा। तुम्हारे गली-मोहल्ले में ऐसे कौन-से फेरीवाले आते हैं और वे किस ढंग से आवाज़ लगाते हैं? उनका अभिनय करके दिखाओ। वे क्या बोलते हैं, उसका भी एक संग्रह तैयार करो।

© NCERT not to be republished

खेल-खिलौने

1. (क) तुम यहाँ लिखे खिलौनों में से किसे लेना पसंद करोगी। क्यों?

गेंद	हवाई जहाज़	मोटरगाड़ी
रेलगाड़ी	फिरकी	गुड़िया
बर्तन सेट	धनुष-बाण	बल्ला या कुछ और

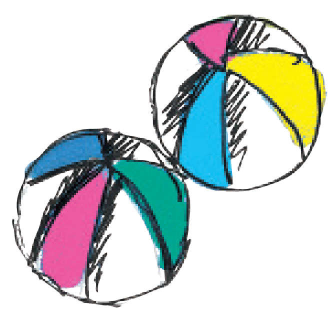

   (ख) तुम अपने साथियों के साथ कौन-कौन से खेल खेलती हो?

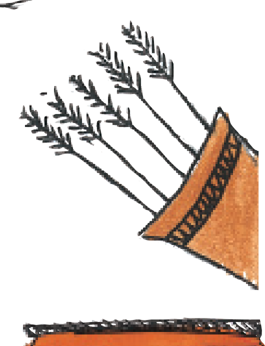

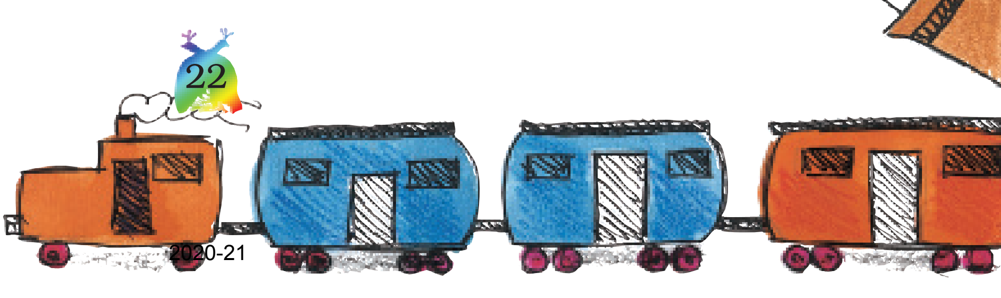

2. **खिलौनेवाला** शब्द संज्ञा में 'वाला' जोड़ने से बना है। नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित हिस्सों को ध्यान से देखो और संज्ञा, क्रिया आदि पहचानो।

- पानवाले की दुकान आज बंद है।
- मेरी दिल्लीवाली मौसी बस कंडक्टर हैं।
- महमूद पाँच बजे वाली बस से आएगा।
- नंदू को बोलने वाली गुड़िया चाहिए।
- दाढ़ीवाला आदमी कहाँ है?
- इस सामान को ऊपर वाले कमरे में रख दो।
- मैं रात वाली गाड़ी से जम्मू जाऊँगी।

तुम्हारी रामलीला

- क्या तुमने रामलीला देखी है? रामलीला की किसी एक लघु-कहानी को चुनकर कक्षा में अपनी रामलीला प्रस्तुत करो।

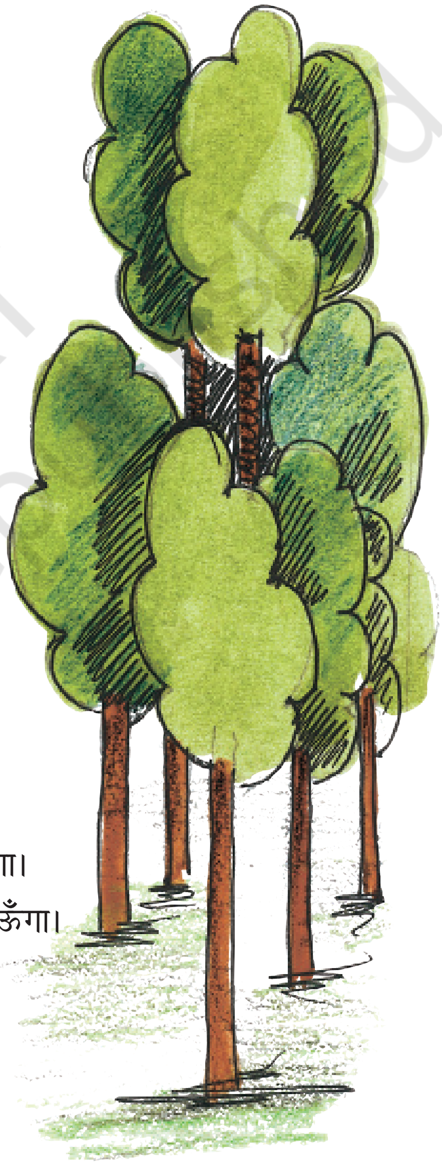

कविता में कथा

इस कविता में तीन नाम–
राम, कौशल्या और ताड़का आए हैं।

(क) ये तीनों नाम किस प्रसिद्ध कथा के पात्र हैं?

(ख) *यहीं रहूँगा कौशल्या मैं तुमको यहीं बनाऊँगा।*
इन पंक्तियों का कथा से क्या संबंध है?

(ग) इस कथा के कुछ संदर्भों की बात कविता में हुई है। अपने आस-पास पूछकर इनका पता लगाओ।

- तपसी यज्ञ करेंगे, असुरों को मैं मार भगाऊँगा।
- तुम कह दोगी वन जाने को हँसते-हँसते जाऊँगा।

© NCERT not to be republished

ईदगाह

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद ईद आई है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुर्ते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर से सुई-तागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जाएगी। लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोज़ा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज़ है। रोज़े बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज़ ईद का नाम रटते थे, आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। बार-बार जेब से अपना खज़ाना निकालकर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है, एक-दो, दस-बारह! उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पंद्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत पैसों में अनगिनत चीज़ें लाएँगे— खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और जाने क्या-क्या! और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद। हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सब-के-सब दौड़कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर

© NCERT not to be republished

साथवालों का इंतज़ार करते। ये लोग क्यों इतना धीरे-धीरे चल रहे हैं! हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं।

शहर आ गया। बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगीं, यह अदालत है, यह कॉलेज है, यह क्लब-घर है। इतने बड़े कॉलेज में कितने लड़के पढ़ते होंगे? सब लड़के नहीं हैं जी! बड़े-बड़े आदमी हैं, सच! उनकी बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। इतने बड़े हो गए, अभी तक पढ़ने जाते हैं। न जाने कब तक पढ़ेंगे और क्या करेंगे इतना पढ़कर। हामिद के मदरसे में दो-तीन बड़े-बड़े लड़के हैं, बिल्कुल तीन कौड़ी के! रोज़ मार खाते हैं, काम से जी चुरानेवाले। इस जगह भी उसी तरह के लोग होंगे और क्या।

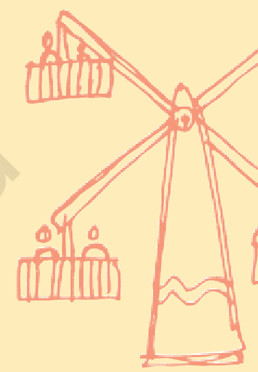

सहसा ईदगाह नज़र आया। नमाज़ खत्म हो गई है। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दुकान पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं हैं। यह देखो, हिंडोला है। एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगे, कभी ज़मीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट छड़ों से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मज़ा लो। महमूद और मोहसिन और नूरे और सम्मी इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का एक तिहाई ज़रा-सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चर्खियों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह-तरह के खिलौने हैं—सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती और धोबिन और साधू वाह! कितने सुंदर खिलौने हैं। अब बोलना ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ीवाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए। मालूम होता है, अभी कवायद किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर झुकी है, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। बस, मशक से पानी उड़ेलना ही चाहता है। नूरे को वकील से प्रेम है। कैसी विद्वता है उसके मुख पर! काला चोगा, नीचे सफ़ेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी ज़ंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी

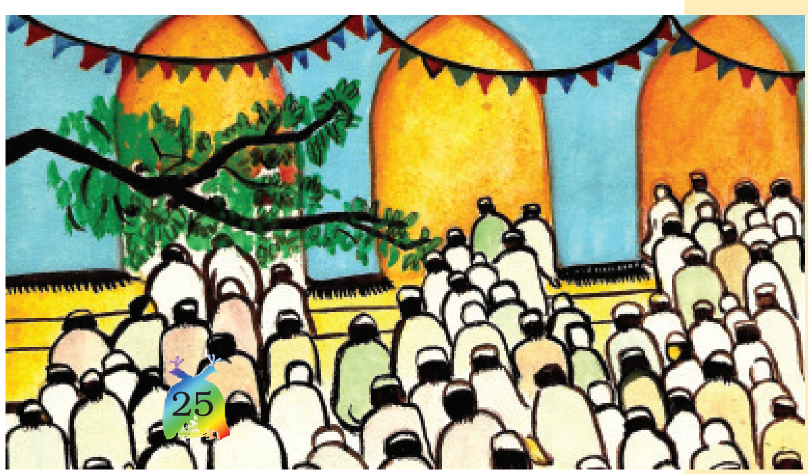

© NCERT not to be republished

किसी अदालत से जिरह या बहस किए चले आ रहे हैं। यह सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर-चूर हो जाए। ज़रा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाए। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा। लेकिन ललचाई हुई आँखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि ज़रा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता।

खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने सोहन हलवा, सभी मज़े से खा रहे हैं।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की हैं। कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज़ हो जाएगी। खिलौने से क्या फायदा?

हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं। सबील पर सब-के-सब शर्बत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं। इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते हैं, मेरे साथ खेलो। मेरा यह काम करो। अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा, तो पूछूँगा। खाएँ मिठाइयाँ, आप मुँह सड़ेगा, फोड़े-फुंसियाँ निकलेंगी, आप की ज़बान चटोरी हो जाएगी। सब-के-सब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है। हँसें! मेरी बला से! उसने दुकानदार से पूछा— यह चिमटा कितने का है?

दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा— यह तुम्हारे काम का नहीं है जी!

© NCERT not to be republished

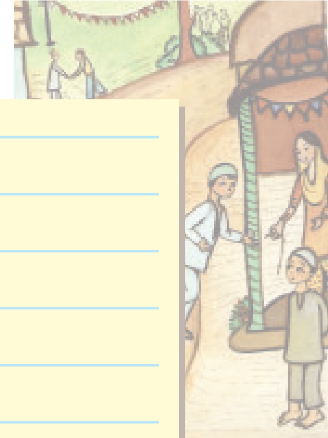

''बिकाऊ है कि नहीं ?''

''बिकाऊ क्यों नहीं है? और यहाँ क्यों लाद लाए हैं?''

''तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है?''

''छह पैसे लगेंगे।''

हामिद का दिल बैठ गया।

''ठीक-ठीक बताओ।''

''ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो लो, नहीं चलते बनो।''

हामिद ने कलेजा मज़बूत करके कहा— तीन पैसे लोगे ?

यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दी। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक है और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। ज़रा सुनें, सब-के-सब क्या-क्या आलोचनाएँ करते हैं।

मोहसिन ने हँसकर कहा — यह चिमटा क्यों लाया पगले, इससे क्या करेगा?

हामिद ने चिमटे को ज़मीन पर पटककर कहा — ज़रा अपना भिश्ती ज़मीन पर गिरा दो। सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जाएँ बच्चू की।

महमूद बोला — तो यह चिमटा कोई खिलौना है?

हामिद — खिलौना क्यों नहीं है। अभी कंधे पर रखा, बंदूक हो गई। हाथ में लिया, फ़कीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मंजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ, तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने कितना ही ज़ोर लगाएँ, मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है— चिमटा।

सम्मी ने खँजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला—मेरी खँजरी से बदलोगे, दो आने की है।

हामिद ने खँजरी की ओर उपेक्षा से देखा—मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, ढब-ढब बोलने लगी। ज़रा-सा पानी लग जाए तो खत्म हो जाए। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, आँधी में, तूफ़ान में बराबर डटा खड़ा रहेगा।

© NCERT not to be republished

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, लेकिन अब पैसे किसके पास धरे हैं। फिर मेले से दूर निकल आए हैं, नौ कब के बज गए, धूप तेज हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी हो रही है। बाप से जिद भी करें, तो चिमटा नहीं मिल सकता है। हामिद है बड़ा चालाक। इसीलिए बदमाश ने अपने पैसे बचा रखे थे।

अब बालकों के दो दल हो गए हैं। एक ओर मिट्टी है, दूसरी ओर लोहा। अगर कोई शेर आ जाए, मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जाए, मियाँ सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भागे, वकील साहब की नानी मर जाए, चोगे में मुँह छिपाकर ज़मीन पर लेट जाए। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रुस्तमे - हिंद लपककर शेर की गर्दन पर सवार हो जाएगा। और उसकी आँखें निकाल लेगा।

मोहसिन ने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाकर कहा—अच्छा, पानी तो नहीं भर सकता।

हामिद ने चिमटे को सीधा खड़ा करके कहा—भिश्ती को एक डाँट बताएगा, तो दौड़ा हुआ पानी लाकर द्वार पर छिड़कने लगेगा।

मोहसिन परास्त हो गया; पर महमूद ने कुमुक पहुँचाई—अगर बच्चू पकड़े जाएँ, तो अदालत में बँधे-बँधे फिरेंगे। तब वकील साहब के ही पैरों पड़ेंगे।

हामिद इस प्रबल तर्क का जवाब न दे सका। उसने पूछा—हमें पकड़ने कौन आएगा? नूरे ने अकड़कर कहा—यह सिपाही बंदूकवाला।

हामिद ने मुँह चिढ़ाकर कहा—यह बेचारे हम बहादुर रुस्तमे—हिंद को पकड़ेंगे! अच्छा लाओ, अभी ज़रा कुश्ती हो जाए। इसकी सूरत देखकर दूर से भागेंगे। पकड़ेंगे क्या बेचारे!

मोहसिन को एक नई चोट सूझ गई—तुम्हारे चिमटे का मुँह रोज आग में जलेगा।

उसने समझा था कि हामिद लाजवाब हो जाएगा; लेकिन यह बात न हुई। हामिद ने तुरंत जवाब दिया-आग में बहादुर ही कूदते हैं जनाब। आग में कूदना वह काम है, जो रुस्तमे हिंद ही कर सकता है।

महमूद ने एक ज़ोर लगाया – वकील साहब कुर्सी-मेज़ पर बैठेंगे, तुम्हारा चिमटा तो बावरचीखाने में ज़मीन पर पड़ा रहेगा।

© NCERT not to be republished

इस तर्क ने सम्मी और नूरे को भी सजीव कर दिया! कितने ठिकाने की बात कही है पट्ठे ने। चिमटा बावरचीखाने में पड़े रहने के सिवा और क्या कर सकता है?

हामिद को कोई फड़कता हुआ जवाब न सूझा, तो उसने धाँधली शुरू की–मेरा चिमटा बावरचीखाने में नहीं रहेगा। वकील साहब कुर्सी पर बैठेंगे, तो जाकर उन्हें ज़मीन पर पटक देगा और उनका कानून उनके पेट में डाल देगा।

कानून को पेट में डालने वाली बात छा गई। ऐसी छा गई कि तीनों शूरमा मुँह ताकते रह गए। हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमे हिंद है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती। औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च किए, पर कोई काम की चीज़ न ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा? टूट फूट जाएँगे। हामिद का चिमटा तो बना रहेगा बरसों!

संधि की शर्तें तय होने लगीं। मोहसिन ने कहा — ज़रा अपना चिमटा दो, हम भी देखें, तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तों के मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया, और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने खूबसूरत खिलौने हैं!

© NCERT not to be republished

हामिद ने हारनेवालों के आँसू पोंछे — मैं तुम्हें चिढ़ा रहा था, सच! यह चिमटा भला इन खिलौनों की क्या बराबरी करेगा? मालूम होता है, अब बोले, तब बोले।

मोहसिन — लेकिन इन खिलौनों के लिए कोई हमें दुआ तो न देगा।

महमूद — दुआ को लिए फिरते हो। उलटे मार न पड़े। अम्माँ ज़रूर कहेंगी कि मेले में यही मिट्टी के खिलौने मिले?

हामिद को स्वीकार करना पड़ा कि खिलौने को देखकर किसी की माँ इतनी खुश न होगी, जितनी दादी चिमटे को देखकर होंगी। फिर अब तो चिमटा रुस्तमे-हिंद है और सभी खिलौनों का बादशाह!

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके बाप ने केले खाने को दिए। महमूद ने केवल हामिद को साझी बनाया। उसके अन्य मित्र मुँह ताकते रह गए। यह उस चिमटे का प्रसाद था।

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गई। मेलेवाले आ गए। मोहसिन की छोटी बहन ने दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के जो उछली, तो मियाँ भिश्ती नीचे आ रहे और परलोक सिधारे। इस पर भाई-बहन में मार-पीट हुई। दोनों खूब रोए। उनकी अम्मा यह शोर सुनकर बिगड़ी और दोनों को ऊपर से दो-दो चाँटे और लगाए।

मियाँ नूरे के वकील का अंत इससे ज़्यादा गौरवमय हुआ। वकील ज़मीन पर या ताक पर तो नहीं बैठ सकता। दीवार में दो खूँटियाँ गाड़ी गईं। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर कागज़ का कालीन बिछाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब का चोला माटी में मिल गया। फिर बड़े ज़ोर-शोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थि घूरे पर डाल दी गई।

अब रहा महमूद का सिपाही। उसे चटपट गाँव का पहरा देने का चार्ज मिल गया। लेकिन पुलिस का सिपाही पालकी पर चलेगा। एक टोकरी आई, उसमें कुछ लाल रंग के फटे-पुराने चिथड़े बिछाए गए, जिसमें सिपाही साहब आराम से लेटे। नूरे ने यह टोकरी उठाई और अपने द्वार का चक्कर लगाने लगे। उनके दोनों छोटे भाई सिपाही की तरह 'छोनेवाले, जागते लहो' पुकारते चलते हैं। महमूद को ठोकर लग जाती है। टोकरी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है और मियाँ सिपाही अपनी बंदूक लिए

© NCERT not to be republished

जमीन पर आ जाते हैं और उनकी एक टाँग में विकार आ जाता है। महमूद को आज ज्ञात हुआ कि वह अच्छा डाक्टर है। उसको ऐसा मरहम मिल गया है, जिससे वह टूटी टाँग को आनन-फानन में जोड़ सकता है। टाँग जोड़ दी जाती है; लेकिन सिपाही को ज्यों ही खड़ा किया जाता है, टाँग जवाब दे देती है। शल्य-क्रिया असफल हुई, तब उसकी दूसरी टाँग भी तोड़ दी जाती है। अब कम-से-कम एक जगह आराम से बैठ तो सकता है।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

''यह चिमटा कहाँ था?''

''मैंने मोल लिया है।''

''कितने पैसे में?''

''तीन पैसे दिए।''

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, यह चिमटा!

''सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?''

हामिद ने कहा – तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।

बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्‌भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्‌गद हो गया।

वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थी।

प्रेमचंद

© NCERT not to be republished

हवाई छतरी

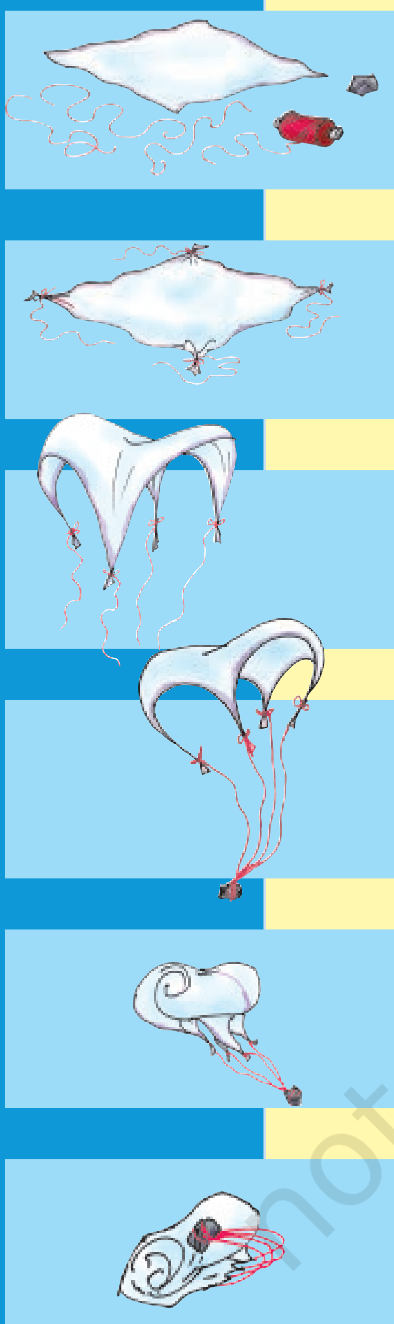

सामान

एक रूमाल, धागे के चार टुकड़े और एक पत्थर।

बनाने का तरीका

समान लंबाई के धागे के चारों टुकड़ों को रूमाल के चारों कोनों से बाँधो। रूमाल के चारों कोनों को बीच तक मोड़ो। चारों धागों से पत्थर बाँधने के पहले यह निश्चित कर लो कि उनकी लंबाई एक समान हो। अब इसे आकाश की ओर ज़ोर से उछालो और इसके धीमे-धीमे तैरते हुए नीचे आने का मज़ा लो।

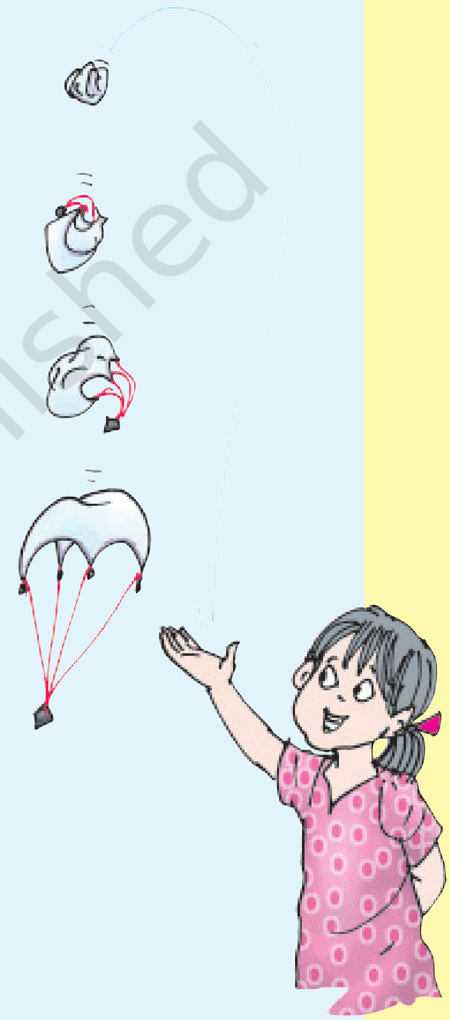

करो

रूमाल की जगह प्लास्टिक की शीट से हवाई छतरी बनाकर देखो।

जानो

क्या यह पैराशूट चंद्रमा पर, जहाँ बिल्कुल हवा नहीं होती, काम करेगा?

अगर रूमाल के बीच एक छेद हो तो क्या यह पैराशूट काम करेगा?

नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तक सुंदर सलोने भारतीय खिलौने (लेखक-सुदर्शन खन्ना, अनुवाद-अरविंद गुप्ता) से साभार

© NCERT not to be republished

4 नन्हा फ़नकार

0525CH04

वह लड़का एक चौकोर लाल पत्थर के पास बैठ गया। उसने जल्दी-जल्दी कोई प्रार्थना बुदबुदाई और छेनी-हथौड़ा उठाकर अपने काम में जुट गया।

कुछ दिन पहले ही उसने इस पत्थर पर घंटियों की कतारें और कड़ियाँ उकेरना शुरू किया था। लड़के ने एक अधबनी अधूरी घंटी पर छेनी की नोक टिकाई और सावधानीपूर्वक हथौड़े से घंटी पर नक्काशी करने में जुट गया।

हथौड़े के वार से पत्थर पर जो कटाव उभरता उससे पत्थर की किरचें छितरा जातीं और वह आँखें सिकोड़ लेता। साथ-साथ धीमी आवाज़ में वह कुछ गुनगुनाने भी लगता। उसके चारों ओर दूसरे संगतराश भी अपने-अपने काम में डूबे हुए थे।

केशव दस साल का था और अभी अपना काम सीख ही रहा था। पिता के एक बार करके दिखा देने पर वह सीधी लकीरों वाले और घुमावदार डिज़ाइन उकेर सकता था। अब तक उसने नक्काशी का जो भी काम किया था उनमें से इन घंटियों को बनाना ही सबसे ज़्यादा मुश्किल था। केशव जानता था कि एक दिन तो ऐसा ज़रूर आएगा जब वह बहुत बारीक जालियाँ, महीन-नफ़ीस बेल-बूटे, कमल के फूल, लहराते हुए साँप और इठलाकर चलते हुए घोड़े—ये सब पत्थर पर उकेर पाएगा... ठीक उसी तरह जैसे उसके पिता बनाते हैं।

कई साल पहले, जब वह पैदा भी नहीं हुआ था, उसके माता-पिता गुजरात से आगरा आकर बस गए थे। बादशाह अकबर उस वक्त आगरे का किला बनवा रहे थे और केशव के पिता को यहीं काम मिल गया। केशव का जन्म भी

आगरे में ही हुआ था। उसे गुजरात के पुश्तैनी गाँव जाने का तो कभी मौका ही नहीं मिला। आगरे की गलियाँ और अब सीकरी – बस यही उसका घर था।

चारों ओर हो रही छेनी-हथौड़ों की ठक-ठक, खड़-खड़ के बीच केशव को किसी के कदमों की आहट भी न सुनाई पड़ी। इसलिए अचानक कानों में एक आवाज़ पड़ने पर वह चौंक गया "माशा अल्लाह! ये घंटियाँ कितनी सुंदर हैं। तुमने खुद बनाई हैं?"

पीछे मुड़कर केशव ने आँखें उठाईं तो उसे एक आदमी दिखा।

"बेशक, मैंने ही ये घंटियाँ बनाई हैं। क्या मैं आपको पत्थरों पर नक्काशी करता नज़र नहीं आ रहा? देखते नहीं, मैं ही पत्थर को तराश रहा हूँ।" केशव ने बड़ी तल्खी से जवाब दिया।

"दिखता तो है। पर तुम इतने छोटे लगते हो न..." वह आदमी हँसते हुए बोला।

"मैं दस साल का हूँ!"

"दस! अच्छा," वह आदमी पास पड़े पत्थर पर बैठते हुए बोला, "तब तो काफ़ी बड़े हो। मैंने भी तेरह साल की उम्र में एक लड़ाई में हिस्सा लिया था।"

अब केशव उस आदमी को अच्छी तरह देख पा रहा था। उसकी उम्र रही होगी तीस से ऊपर, कद मँझोला था। वह सफ़ेद अँगरखा और पाजामा पहने हुए था। उसके लंबे बाल गहरे लाल रंग की पगड़ी में अच्छी तरह से ढके हुए थे।

"लगता है कोई बहुत बड़ा आदमी है," केशव ने उस आदमी के गले में पड़ी बड़े-बड़े मोतियों की माला और उँगलियों की अँगूठियों को देखते हुए सोचा। तीखी नाक, बड़ी-बड़ी आँखें, होंठों को ढकते हुए नीचे की तरफ़ आती घनी मूँछें। केशव उस आदमी के व्यक्तित्व का मुआयना कर ही रहा था कि तभी उस आदमी ने एक नक्काशी की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "इस लड़ी में अभी काफ़ी काम बाकी है।" इससे पहले कि केशव कोई जवाब देता, उसने किसी

© NCERT not to be republished

के तेज़ी से दौड़कर आने की आवाज़ सुनी। यह और कोई नहीं, महल का पहरेदार था। "हुज़ूर! माफ़ करें। मुझे आपके आने का पता ही नहीं चला।" हाँफते हुए उसने कहा। फिर वह मुड़कर भौंचक से खड़े केशव को घूरते हुए बोला, "बेवकूफ़, खड़ा हो! हुज़ूरे आला के सामने बैठने की जुर्रत कैसे की तूने, झुककर सलाम कर इन्हें।"

अब केशव का माथा ठनका। उसे कुछ-कुछ समझ आ रहा था। बदहवासी में छेनी हाथ से छूटकर नीचे गिरी और वह जल्दी से उठकर खड़ा हो गया। अरे कहीं ये बादशाह अकबर तो नहीं! यह ख़याल आते ही उसने झुककर सलाम किया और खरगोश की-सी कातर नज़रों से अकबर को देखने लगा।

अकबर को पहरेदार की यह दखलंदाज़ी भली न लगी।

उन्होंने खीझकर पहरेदार को वहाँ से जाने का इशारा करते हुए कहा, "ठीक है सिपाही! कुछ देर के लिए हमें अकेला छोड़ दो।"

पहरेदार तो चला गया मगर केशव असमंजस में था कि उसे क्या करना चाहिए। वापस अपना नक्काशी का काम शुरू करे या बादशाह के हुक्म के इंतज़ार में खड़ा रहे। दिल तो उसका अभी भी धक-धक कर रहा था। हाँ, पर अब वह डरा हुआ नहीं था क्योंकि अकबर प्यार से उसे देखते हुए मुस्करा रहे थे।

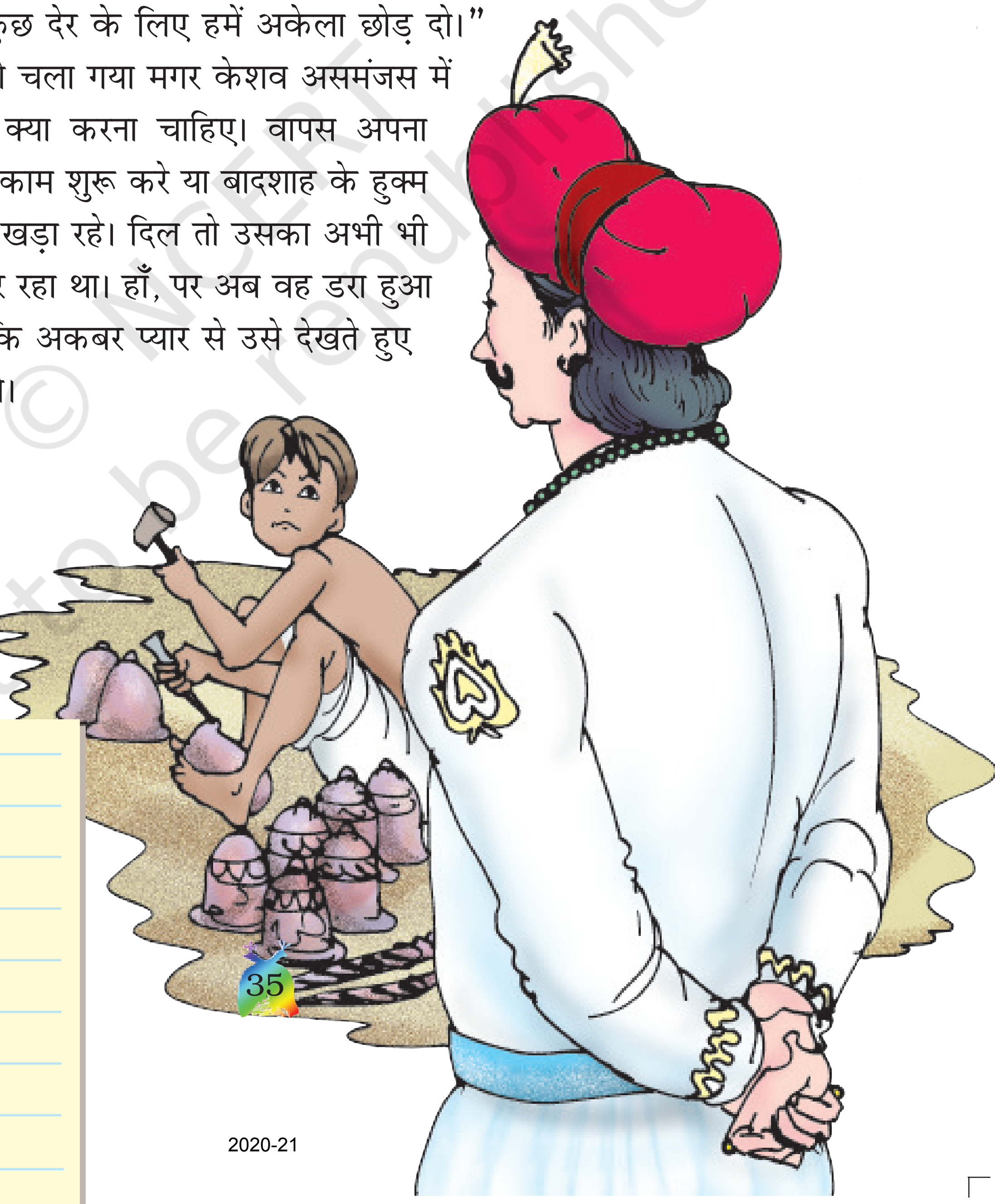

© NCERT not to be republished

"तुम्हारा नाम क्या है?" अकबर ने नरम आवाज़ में पूछा।

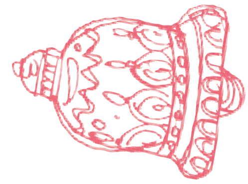

"केशव," उसने नपा-तुला जवाब दिया।

"केशव, क्या तुम मुझे नक्काशी करना सिखाओगे?"

उलझन में पड़े केशव ने तुरंत सिर हिला दिया।

"तब तो तुम्हें मेरे लिए हथौड़े और छेनी का भी इंतज़ाम करना होगा।"

केशव फुर्ती से अपने पिता के पास भागा गया और उनका छेनी-हथौड़ा उठाकर उलटे पाँव लौट आया।

दोस्ताना अंदाज़ में अकबर केशव के पास ज़मीन पर बैठ गए और पास में पड़े पत्थर को खींचते हुए बोले, "ठीक है, अब बताओ कि मुझे क्या करना है।"

केशव ने संदेह भरी नज़रों से अकबर की ओर देखा "हुज़ूर, क्या आप यह सब करेंगे?"

"क्यों नहीं? मुझे तो विश्वास है कि मैं सीख ही लूँगा।"

"नहीं... नहीं... मेरा मतलब ये नहीं था," केशव सकपका गया। "दरअसल मैं कहना चाहता था कि आप इतने बड़े बादशाह हैं। ये ठीक नहीं लगता।"

उसने कुछ अनमने भाव से कहा।

अकबर हँसकर बोले, "अच्छा, लेकिन पिछले हफ़्ते तो मैंने मिट्टी से भरी डलिया ढोने में किसी की मदद की थी। क्या यह काम उससे भी ज़्यादा मुश्किल है?"

केशव अभी भी असमंजस की स्थिति में था। वह अकबर के पास बैठ गया और उन्हें छेनी पकड़ने का सही तरीका सिखाने लगा। फिर जैसे कि केशव के पिता ने उसे सिखाया था, उसने कोयले के टुकड़े से पत्थर पर लकीरें खींचकर एक आसान-सा नमूना बनाया और गंभीरता से कहा "देखिए, सिर्फ़ इन्हीं लकीरों को बहुत ध्यान से तराशना है, अकबर ने पत्थर पर छेनी रखी और ज़ोर से हथौड़े से वार किया, जिससे कटाव ज़्यादा गहरा हो गया।

"अरे... अरे... नहीं, नहीं", केशव ने तुरंत गलती पकड़ी। हथौड़े को आहिस्ता से मारना है, ... ऐसे!" उसने करके दिखाया, "और हाँ, अपनी आँखें थोड़ी मींचकर रखें वरना किरचें उड़कर आँखों में चली जाएँगी।" अकबर मुस्कराए, "जी हुज़ूर।"

© NCERT not to be republished

जवाब में केशव भी मुस्करा उठा। वह लगभग भूल ही गया था कि उसकी बगल में बैठा यह व्यक्ति हिंदुस्तान का बादशाह है। एक अनाड़ी-से वयस्क पर अपने काम की धाक जमाने में उसे मज़ा आ रहा था। वह बड़े ध्यान से देख रहा था कि अकबर किस तरह लकीरों को उकेर रहे हैं। बादशाह से ज़रा-सी भी चूक हो जाने पर फ़ौरन उसकी त्यौरियाँ चढ़ जातीं।

काम करते-करते अकबर पूछ बैठते, "केशव, सही नहीं है क्या?" और केशव सिर हिलाकर अपनी असहमति जता देता।

अकबर इत्मीनान से बैठ गए और केशव को काम करता हुआ देखने लगे। अपने काम में खोए हुए उन दोनों को इस बात का एहसास नहीं हुआ कि आसपास मौजूद दूसरे संगतराश उन्हें बड़े कौतूहल से देख रहे हैं।

अकबर ने गौर किया कि केशव पत्थर पर बने नमूने को ही नहीं तराश रहा था बल्कि अपनी तरफ़ से भी उनमें कुछ जोड़ रहा था जिससे वे डिज़ाइन ज़्यादा खूबसूरत लग रहे थे।

लड़के के काम करने के अंदाज़ को देखकर अकबर ने धीमे से कहा, "केशव, देखना, एक दिन तुम बड़े फ़नकार बनोगे। हो सकता है कि एक दिन तुम मेरे कारखाने में काम करो।"

"कारखाना? कैसा कारखाना?"

"बस एक बार ये महल तैयार हो जाए और लोग आगरा से आकर यहाँ रहने लगें, तब मैं कारखाने बनवाऊँगा। इन कारखानों में मेरी सल्तनत के सबसे बढ़िया फ़नकार और शिल्पकार काम करेंगे। चित्र बनाने वाले कलाकार, गलीचों के बुनकर, संगतराश, पत्थर और लकड़ी पर नक्काशी करने वाले शिल्पकार सभी वहाँ काम करेंगे।

केशव का चेहरा चमक उठा। वह मुस्कराते हुए बोला, "मैं वहाँ ज़रूर काम करना चाहूँगा।"

© NCERT not to be republished

अकबर उठ खड़े हुए। जाते हुए बड़े प्यार से केशव का कंधा थपथपाया और कहा, "अच्छा बेटा, अपना काम जारी रखो।"

"हुज़ूर! क्या आप दुबारा आएँगे?" केशव ने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

"मैं ज़रूर आऊँगा केशव!"

फिर तो पूरे दिन संगतराशों के बीच केशव की धूम मची रही। वह बार-बार बादशाह से हुई अपनी मुलाकात सबको सुनाता रहा।

रात हो चली थी। केशव बहुत थका हुआ था, पर आँखों में नींद कहाँ? वह धीरे-से अपने पिता के बिस्तर में घुस गया। पिता ने मुस्कराकर कहा, "तुम तो अभी से इतने प्रसिद्ध हो गए हो।"

"बादशाह सलामत ने कहा है कि एक दिन मैं बहुत बड़ा कलाकार बनूँगा।" अपने सिर को पिता की बाँहों के सहारे टिकाकर केशव धीरे-से बोला, "हमारे बादशाह बहुत ही नेक इंसान हैं।" "बिल्कुल सही।" पिता ने कहा। कुछ सोचकर केशव ने पूछा, "बाबा, एक बात बताओ, बादशाह के पास आगरा में एक से बढ़कर एक खूबसूरत महल हैं। फिर वे सीकरी में यह शहर क्यों बनवा रहे हैं?"

पिता ने कुछ याद करते हुए बताना शुरू किया, "हाँ बेटा, बादशाह का आगरा बहुत सुंदर शहर है। पर सीकरी में नया शहर बनवाने का भी एक खास कारण है। मैंने सुना है कि जब बादशाह अकबर की कोई संतान नहीं थी। इस वजह से वे हर वक्त परेशान रहते थे। वे बहुत से साधु-संतों और फ़कीरों के पास गए। भटकते-भटकते बादशाह ख्वाजा सलीम चिश्ती के पास सीकरी आए। उन्होंने ही बादशाह को बताया कि उनके एक नहीं तीन-तीन संतानें होंगी।"

"शाहज़ादा सलीम, मुराद और दनियाल" केशव ने चहकते हुए कहा।

"बिल्कुल सही। तब बादशाह ने ख्वाजा सलीम चिश्ती के सम्मान में सीकरी में नगर बसाने का फ़ैसला किया था।"

केशव ने कहा, "अच्छा! अब समझा। इसीलिए बादशाह अकबर ने अपने बेटे का नाम सलीम रखा है।"

"हाँ, और इसी कारण हम यहाँ एक नए शहर के लिए पत्थरों को तराश रहे हैं।"

"हुँ ऽऽऽ" केशव उनींदी आवाज़ में बोला।

पिताजी ने देखा कि उनका लाडला बेटा सो गया है।

© NCERT not to be republished

केशव की घंटियाँ

1. "माशा अल्लाह! ये घंटियाँ कितनी सुंदर हैं! तुमने खुद बनाई हैं?"
   बादशाह अकबर ने यह बात किसलिए कही होगी–
   (क) केशव के काम की तारीफ़ में
   (ख) यह जानने के लिए कि घंटियाँ कितनी सुंदर हैं
   (ग) केशव से बातचीत शुरू करने के लिए
   (घ) घंटियाँ किसने बनाई, यह जानने के लिए
   (ङ) क्योंकि उन्हें यकीन नहीं था कि 10 साल का बच्चा केशव इतनी सुंदर घंटियाँ बना सकता है।
   (च) कोई और कारण जो तुम्हें ठीक लगता हो।
2. केशव पत्थर पर घंटियाँ तथा कड़ियाँ तराश रहा था। उसके द्वारा तराशी जा रही घंटियों और कड़ियों का चित्र अपनी कॉपी में बनाओ। तुम्हें क्या कोई खास इमारत याद आ रही है जिसमें नक्काशी की गई हो। संभव हो तो उसकी तस्वीर चिपकाओ।

आना-जाना

केशव के पिता गुजरात से आगरा आकर बस गए थे। हो सकता है तुम या तुम्हारे कुछ साथियों के माता-पिता भी कहीं और से यहाँ आकर बस गए हों। बातचीत करके पता लगाओ कि ऐसा करने के क्या कारण होते हैं?

कहानी से

3. अकबर को पहरेदार की दखलंदाज़ी अच्छी क्यों नहीं लगी?
4. "लगता है कोई बहुत बड़ा आदमी है", यहाँ पर 'बड़े आदमी' से केशव का क्या मतलब है?
5. "खरगोश की-सी कातर आँखें"
   पशु-पक्षियों से तुलना करते हुए और भी बहुत-सी बातें कही जाती हैं जैसे–'हिरन जैसी चाल'। ऐसे ही कुछ उदाहरण तुम भी बताओ।
6. अकबर ने जब नक्काशी सीखना चाहा, तो केशव ने उन्हें संदेहभरी नज़रों से क्यों देखा?
7. केशव दस साल का है। क्या उसकी उम्र के बच्चों का इस तरह के काम से जुड़ना ठीक है? अपने उत्तर के कारण ज़रूर बताओ।
8. "केशव बार-बार सबको सुनाता।"
   केशव सबसे क्या कहता होगा? कल्पना करके केशव के शब्दों में लिखो।

© NCERT not to be republished

शब्दों की निराली दुनिया

1. (क) नक्काशी जैसे किसी एक काम को चुनो (बढ़ईगिरि, मिस्त्री इत्यादि) जिसमें औज़ारों का इस्तेमाल होता है। उन खास औज़ारों के नाम और काम पता करके लिखो।

   (ख) छेनी, हथौड़ा, तराशना, किरचें—ये सब पत्थर के काम से जुड़े हुए शब्द हैं। लकड़ी के दुकानदार और बढ़ई से बात करके लकड़ी के काम से जुड़े शब्द इकट्ठे करो और कक्षा में उन पर सामूहिक रूप से बातचीत करो। कुछ शब्द हम यहाँ दे रहे हैं।

   आरी, रंदा, बुरादा, प्लाई, सूत ...

   (ग) हो सकता है कि तुम्हारे इलाके में इन चीज़ों और कामों के लिए कुछ अलग किस्म के शब्द इस्तेमाल होते हों। उन पर भी बातचीत करो।

2. 'कटाव' शब्द 'कट' क्रिया से पैदा हुआ है। नीचे लिखी संज्ञाएँ किन क्रियाओं से बनी हैं? इन संज्ञाओं का अर्थ समझो और वाक्य में प्रयोग करो।

   चुनाव　　　पड़ाव　　　बहाव　　　लगाव

3. "लड़के ने जल्दी-जल्दी कोई प्रार्थना बुदबुदाई।"

   रेखांकित शब्द और नीचे लिखे शब्दों में क्या अंतर है? वाक्य बनाकर अंतर स्पष्ट करो।

   फुसफुसाना　　　बड़बड़ाना　　　भुनभुनाना

4. ''बेवकूफ़, खड़ा हो। हुज़ूरे आला के सामने बैठने की जुर्रत कैसे की तूने! झुककर इन्हें सलाम कर।''

   महल के पहरेदार ने केशव से यह इसीलिए कहा, क्योंकि—

   (क) बादशाह के सामने बैठे रहना उनका अपमान करने जैसा है।

   (ख) पहरेदार यह कहकर अपनी वफ़ादारी दिखाना चाहता था।

   (ग) पहरेदार को बादशाह के आने का पता नहीं चला, इसीलिए वह घबरा गया था।

   (घ) बादशाह का केशव से बात करना पहरेदार को अच्छा नहीं लगा।

© NCERT not to be republished

5 जहाँ चाह वहाँ राह

मलमली धोती का बादामी रंग खिल उठा था। किनारों पर कसूती के टाँकों से पिरोई हुई बेल थी। पल्लू पर भरवाँ टाँके अपना कमाल दिखा रहे थे। सुनहरे-रूपहले बेल-बूटों से जान आ गई थी मलमल में। इन बेल-बूटों को सजाया था इला सचानी ने। इला की हिम्मत की अनूठी मिसाल हैं ये कढ़ाई के नमूने।

छब्बीस साल की इला गुजरात के सूरत ज़िले में रहती हैं। उनका बचपन अमरेली ज़िले के राजकोट गाँव में अपने नाना के यहाँ बीता।

साँझ होते ही मोहल्ले के बच्चे घरों से बाहर आ जाते। कुछ मिट्टी में आड़ी-तिरछी लकीरें खींचते, कुछ कनेर के पत्तों से पिटपिटी बजाते, कुछ गिट्टे खेलते, कुछ इधर-उधर से टूटे-फूटे घड़ों के ठीकरे बटोरकर पिट्ठू खेलते। जब इन खेलों से मन भर जाता तो पेड़ की डालियों पर झूला डालकर ऊँची-ऊँची पेंगे लेते और ऊँचे स्वर में एक साथ गाते-

कच्चे नीम की निंबौरी
सावन जल्दी अइयो रे!

इला गाने में तो उनका साथ देती, पर उनके साथ पेंगे नहीं ले पाती। रस्सी पकड़ने को हाथ बढ़ाती मगर हाथ तो उठते ही नहीं थे। वह चुपचाप एक किनारे बैठ जाती। मन-ही-मन सोचती, "मैं भी ऐसा कुछ क्यों नहीं कर पाती हूँ। बच्चे भी चाहते कि इला किसी-न-किसी तरह तो उनके साथ खेल सके। कभी-कभार वह पकड़म-पकड़ाई और विष-अमृत के खेल में शामिल हो जाती। साथियों के साथ जमकर दौड़ती मगर जब 'धप्पा' करने की बारी आती तो फिर निराश हो जाती। हाथ ही नहीं उठेंगे तो धप्पा कैसे देगी? वह बहुत कोशिश करती पर उसके हाथों ने तो जैसे उसका साथ न देने की ठान रखी हो। इला ने अपने हाथों की इस ज़िद को एक चुनौती माना।

उसने वह सब अपने पैरों से करना सीखा जो हम हाथों से करते हैं। दाल-भात खाना, दूसरों के बाल बनाना, फ़र्श बुहारना, कपड़े धोना, तरकारी काटना यहाँ तक कि तख्ती पर लिखना भी। उसने एक स्कूल में दाखिला ले लिया। दाखिला मिलने में भी उसे परेशानी हुई। कहीं तो उसकी सुरक्षा को लेकर चिंता थी, कहीं उसके काम करने की गति को लेकर। किसी काम को तो वह इतनी फुर्ती से कर जाती कि देखने वाले दंग रह जाते। पर किसी-किसी काम में थोड़ी बहुत परेशानी तो आती ही थी। वह परेशानियों के आगे घुटने टेकने वाली नहीं थी। उसने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की। वह दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर पाई। इला को यह मालूम न था कि परीक्षा के लिए उसे अतिरिक्त समय मिल सकता है। उसे ऐसे व्यक्ति की सुविधा भी मिल सकती थी जो परीक्षा में उसके लिए लिखने का काम कर सके। यह जानकारी इला को समय रहते मिल जाती तो कितना

© NCERT not to be republished

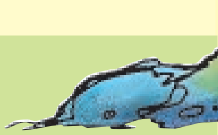

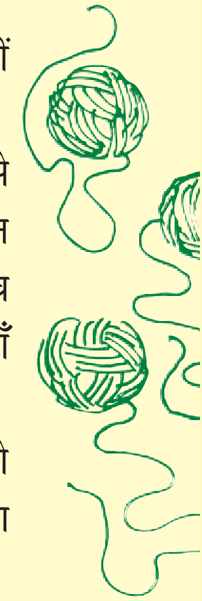

अच्छा रहता। उसे इस बात का दुख है। पर यहाँ आकर सब कुछ खत्म तो नहीं हो जाता न!

उसकी माँ और दादी कशीदाकारी करती थीं। वह उन्हें सुई में रेशम पिरोने से लेकर बूटियाँ उकेरते हुए देखती। न जाने कब उसने कशीदाकारी करने की ठान ली। यहाँ भी उसने अपने पैर के अँगूठों का सहारा लिया। दोनों अँगूठों के बीच सुई थामकर कच्चा रेशम पिरोना कोई आसान काम नहीं था। पर कहते हैं न, जहाँ चाह वहाँ राह। उसके विश्वास और धैर्य ने कुदरत को भी झुठला दिया।

पंद्रह–सोलह साल की होते–होते इला काठियावाड़ी कशीदाकारी में माहिर हो चुकी थी। किस वस्त्र पर किस तरह के नमूने बनाए जाएँ, कौन–से रंगों से नमूना खिल उठेगा और टाँके कौन–से लगें, यह सब वह समझ गई थी।

एक समय ऐसा भी आया अब उसके द्वारा काढ़े गए परिधानों की प्रदर्शनी लगी। इन परिधानों में काठियावाड़ के साथ–साथ लखनऊ और बंगाल भी झलक रहा था। इला ने काठियावाड़ी टाँकों के साथ–साथ और कई टाँके भी इस्तेमाल किए थे। पत्तियों को चिकनकारी से सजाया था। डंडियों को कांथा से उभारा था। पशु–पक्षियों की ज्यामितीय आकृतियों को कसूती और ज़ंजीर से उठा रखा था।

पारंपरिक डिज़ाइनों में यह नवीनता सभी को बहुत भाई।

इला के पाँव अब रुकते नहीं हैं। आँखों में चमक, होंठो पर मुस्कान और अनूठा विश्वास लिए वह सुनहरी रूपहली बूटियाँ उकेरते थकती नहीं हैं।

© NCERT not to be republished

जहाँ चाह वहाँ राह

1. इला या इला जैसी कोई लड़की यदि तुम्हारी कक्षा में दाखिला लेती तो तुम्हारे मन में कौन-कौन से प्रश्न उठते?
2. इस लेख को पढ़ने के बाद क्या तुम्हारी सोच में कुछ बदलाव आए?

मैं भी कुछ कर सकती हूँ...

1. यदि इला तुम्हारे विद्यालय में आए तो उसे किन-किन कामों में परेशानी आएगी?
2. उसे यह परेशानी न हो इसके लिए अपने विद्यालय में क्या तुम कुछ बदलाव सुझा सकती हो?

प्यारी इला...

इला के बारे में पढ़कर जैसे भाव तुम्हारे मन में उठ रहे हैं उन्हें इला को चिट्ठी लिखकर बताओ। चिट्ठी की रूपरेखा नीचे दी गई है।

....
....
....

प्रिय इला

....
....
....
....
....
....
....

तुम्हारा/तुम्हारी

© NCERT not to be republished

सवाल हमारे, जवाब तुम्हारे

1. इला को लेकर स्कूल वाले चिंतित क्यों थे? क्या उनका चिंता करना सही था या नहीं? अपने उत्तर का कारण लिखो।
2. इला की कशीदाकारी में खास बात क्या थी?
3. सही के आगे (✓) का निशान लगाओ।

   इला दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर सकी, क्योंकि...
   - परीक्षा के लिए उसने अच्छी तरह तैयारी नहीं की थी।
   - वह परीक्षा पास करना नहीं चाहती थी।
   - लिखने की गति धीमी होने के कारण वह प्रश्न-पत्र पूरे नहीं कर पाती थी।
   - उसको पढ़ाई करना कभी अच्छा लगा ही नहीं।
4. क्या इला अपने पैर के अँगूठे से कुछ भी करना सीख पाती, अगर उसके आस-पास के लोग उसके लिए सभी काम स्वयं कर देते और उसको कुछ करने का मौका नहीं देते?

कशीदाकारी

1. (क) इस पाठ में सिलाई-कढ़ाई से संबंधित कई शब्द आए हैं। उनकी सूची बनाओ। अब देखो कि इस पाठ को पढ़कर तुमने कितने नए शब्द सीखे।

______________	______________
______________	______________
______________	______________
______________	______________

   (ख) नीचे दी गई सूची में से किन्हीं दो से संबंधित शब्द (संज्ञा और क्रिया दोनों ही) इकट्ठा करो।

   फ़ुटबाल　　बुनाई (ऊन)　　बागबानी　　पतंगबाज़ी

______________	______________
______________	______________
______________	______________
______________	______________

© NCERT not to be republished

2. एक सादा रूमाल लो या कपड़ा काटकर बनाओ। उस पर नीचे दिए गए टाँकों में से किसी एक टाँके का इस्तेमाल करते हुए बड़ों की मदद से कढ़ाई करो।

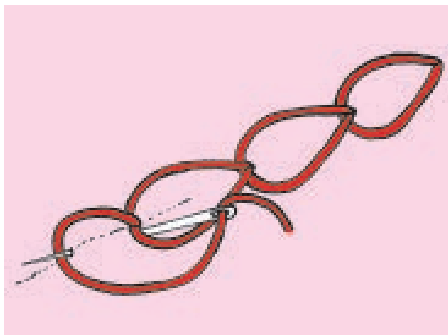

ज़ंजीर

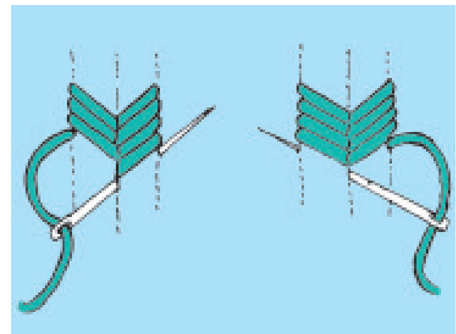

मछली टाँका

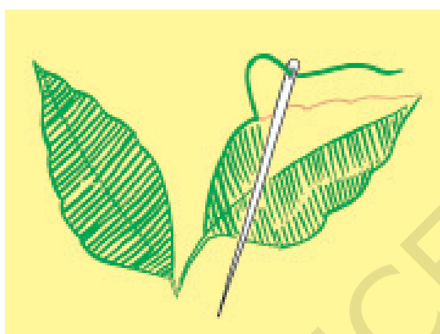

भरवाँ टाँका

उल्टी बखिया

खुला हुआ ज़ंजीर टाँका

ये काम कक्षा के लड़के-लड़कियाँ सब करें।

© NCERT not to be republished

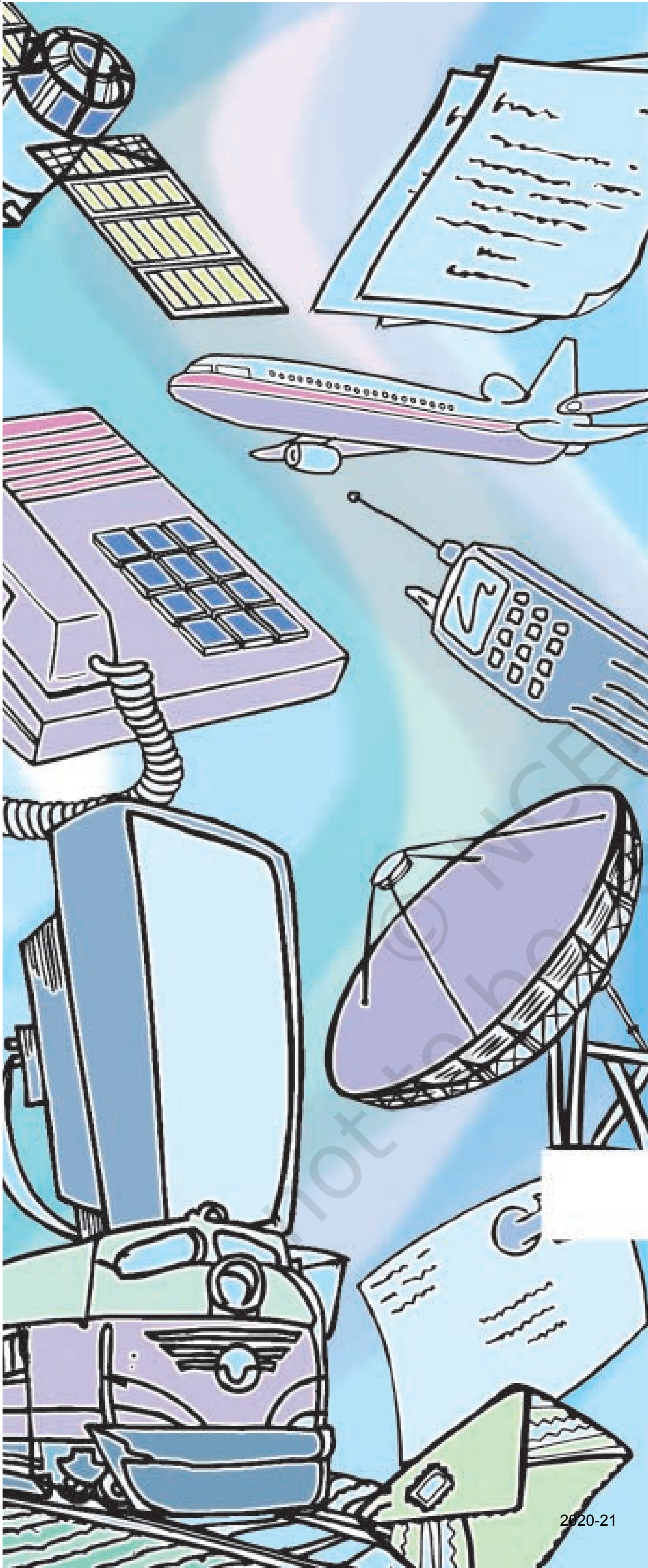

बात का सफ़र

© NCERT
not to be republished

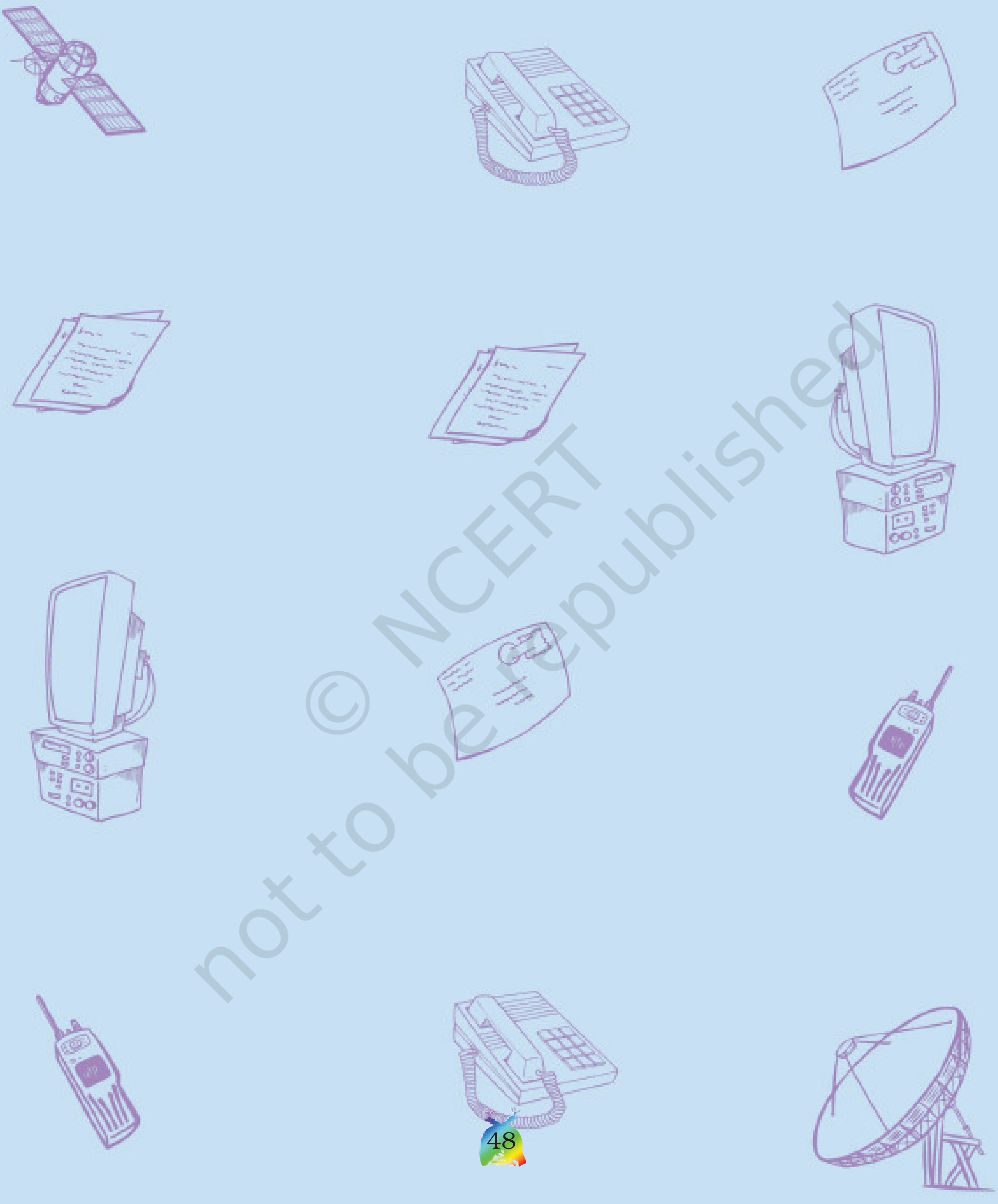

© NCERT
not to be republished

बात का सफ़र

वैब कैमरा, कम्यूनीकेटर, कबूतर, इंटरनैट, पोस्ट-कार्ड, हरकारा, संकेत भाषा, कूरियर, टैक्स्ट मैसेज, ई-मेल..., इस लंबी सूची में और क्या जोड़ा जा सकता है? इन सभी में क्या समानता है?

सड़कों के चौराहे पर खड़ा ट्रैफ़िक पुलिस का आदमी क्या करता है? कत्थक, भरतनाट्यम जैसे शास्त्रीय नृत्य की भाव-भंगिमाएँ क्या अभिव्यक्त करती हैं? या फिर एक क्लास में जहाँ टीचर पढ़ाने में मशगूल हो, दो बच्चे आँखों के इशारे से, होठों को हिलाकर या किसी कागज़ के टुकड़े पर कुछ लिखकर क्या कर रहे होंगे? ऐसा तो हर किसी के साथ ज़रूर होता होगा। अपनी बात कहने की ज़रूरत तो सभी को होती है। तरीका भले ही बदल जाए।

रिमझिम के इस भाग में बात है बीते कल की और ऐसे भविष्य की जो बच्चों को रोमांचित करे। **वे दिन भी क्या दिन थे** विज्ञान कथा के प्रसिद्ध लेखक आइज़क ऐसीमोव की लिखी कहानी है। यह कहानी आज से डेढ़ सौ साल बाद के स्कूलों की कल्पना करती है। कहानी पढ़कर शायद इन स्कूलों को कोई स्कूल ही न कहना चाहे। कल्पना है ऐसे भविष्य की जहाँ स्कूल में कोई शिक्षक न हो और विद्यार्थी एक ही हो। ऐसे स्कूल में बच्चे सीखेंगे किससे, बातें किससे करेंगे, खेलेंगे किसके साथ?

हम जो पत्र लिखते हैं, उसके जवाब का भी इंतज़ार करते हैं। पत्र को ले जाने वाला और उसका जवाब लाने वाला है डाकिया। **डाकिए की कहानी, कुँवरसिंह की ज़ुबानी** एक भेंटवार्ता है। रिमझिम की शृंखला में पहली बार भेंटवार्ता की विधा आ रही है। इसमें बच्चे देखेंगे कि किस तरह से ऐसे प्रश्न पूछे गए हैं जिनसे ज़्यादा-से-ज़्यादा जानकारी हासिल हो सके और व्यक्ति को अपने विचारों और अनुभवों को खुलकर अभिव्यक्त करने का मौका मिले। कुँवरसिंह जो पहाड़ी इलाके में डाक बाँटने का काम करते हैं, अपने

© NCERT not to be republished

काम, निजी ज़िंदगी और काम में पेश आने वाली दिक्कतों के बारे में बात करते हैं। डाक के ज़रिए संदेश पहुँचाने का काम थका देने वाला ही नहीं, जोखिम भरा भी हो सकता है।

चिट्ठी का सफ़र एक ऐसे सफ़र पर ले जाएगा जो अतीत और वर्तमान के संदेशवाहकों की झलकियाँ देगा। संदेश पहुँचाने की ज़रूरत इंसानों को हमेशा से रही है। आज डाक का क्षेत्र बेहद फैला हुआ है। समय के साथ यह तकनीकी भी हो गया है। कुछ दशकों पहले तक संदेश कुछ दिनों में पहुँचता था और आज पलक झपकते ही अपनी बात हम सैकड़ों मील दूर तक पहुँचा सकते हैं। अपनी बात किसी तक पहुँचाने का तरीका समय के साथ बदलता रहा है। समय के साथ संप्रेषण और संचार के माध्यमों में बदलाव आया है। इन माध्यमों का इस्तेमाल अलग-अलग उद्देश्यों के लिए, समाज के विभिन्न वर्गों के लिए हुआ है।

एक माँ की बेबसी– मन को छू लेने वाली कविता है। कविता पाठक को किस तरह से प्रभावित करती है यह पाठक के अनुभव पर निर्भर करेगा। यह कविता एक ऐसे बच्चे के बारे में है जो बोल नहीं सकता। गली-मोहल्ले के बच्चों के लिए वह 'अजूबा' था। बातचीत के ज़रिए हम दूसरों को समझ और जान पाते हैं। संवाद न होने से वह दूसरा हमारे लिए अनजाना बना रहता है। पर मौखिक बातचीत के अलावा भी दूसरों के भावों को समझने के कई तरीके हो सकते हैं।

© NCERT not to be republished

पत्र

बफ़लो, न्यूयॉर्क
20 मार्च, 1995

प्रिय नित्या,

तुम्हारा 17 जनवरी का पत्र मिला। तुम प्रतियोगिताओं में भाग ले रही हो, ये पढ़कर बड़ा अच्छा लगा। लेकिन एक बात ध्यान में रखना-जीतने पर घमंड से बचना और प्रथम न आने पर मन छोटा मत करना। जीत महत्वपूर्ण है लेकिन अपनी पूरी क्षमता से प्रतियोगिता में भाग लेना भी अपने आप में एक उपलब्धि है। तुमने सेंट्स एवं डॉलर की फ़रमाइश की है, ज़रूर लाऊँगा लेकिन मेरा ख्याल है कि घर में अमरीकी सिक्के तथा नोट होने चाहिए। अस्मि का दाखिला तुम्हारे स्कूल में हो गया, ये अच्छा हुआ। अब तुम्हें एक दूसरे से भिड़ंत और स्नेह का आदान-प्रादान करने के लिए शाम का इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा। अस्मिता का अँग्रेज़ी लहज़े में बोलने का शौक बुरा नहीं। बस एहतियात ये रखो कि हिंदी बोलो तो हिंदी, अँग्रेज़ी बोलो तो अँग्रेज़ी। हर वाक्य में दो भाषाओं की खिचड़ी अधकचरेपन की निशानी है। सिर्फ़ यदा-कदा तालमेल होना चाहिए। यहाँ बर्फ़ पिघल गई है। बसंत आने को है। बसंत के स्वागत में कौन-सा राग गाते हैं – मैं नहीं जानता। अस्मिता को आशीर्वाद।

सस्नेह
नरेंद्रनाथ

0525CH06

6 चिट्ठी का सफ़र

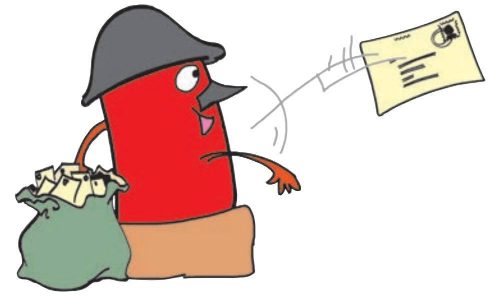

अपनी दस–बारह साल की ज़िंदगी में तुमने कुछ पत्र तो लिखे ही होंगे। वे पत्र अपने सही पते और समय पर किस तरह पहुँचे होंगे– यह बहुत–सी बातों पर निर्भर करता है। जैसे कि, चिट्ठी किस स्थान से किस स्थान पर भेजी जा रही है, संदेश पहुँचाने की कितनी जल्दी है, तुमने पूरा और ठीक पता लिखा है कि नहीं, तुमने उस पर डाकटिकट लगाया है कि नहीं, आदि। अब प्रश्न यह उठते हैं कि

- आखिर चिट्ठी पर डाकटिकट लगाया ही क्यों जाए?
- पूरे और ठीक पते से क्या मतलब है?
- ज़रूरत पड़ने पर संदेश को जल्दी कैसे पहुँचाया जाए?
- स्थान बदलने से चिट्ठी के पहुँचने पर क्या असर पड़ता है?

इनमें से कुछ सवालों के जवाब शायद तुम्हारे पास हों– खासकर तुममें से उनके पास जो डाकटिकटें इकट्ठा करने का शौक रखते हैं।

इन सवालों के जवाबों के लिए ज़रा नीचे दिए गए लिफ़ाफ़ों को गौर से देखो। दोनों पतों को दी गई जगह में लिखो।

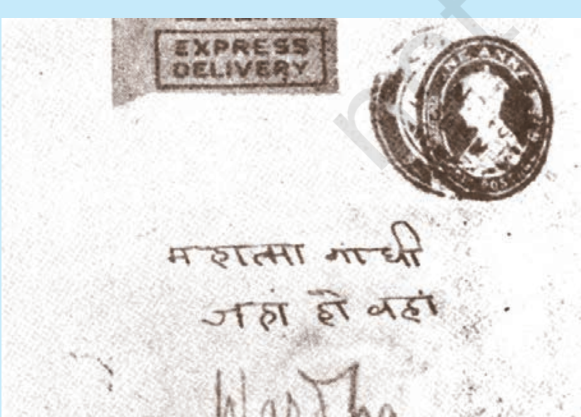

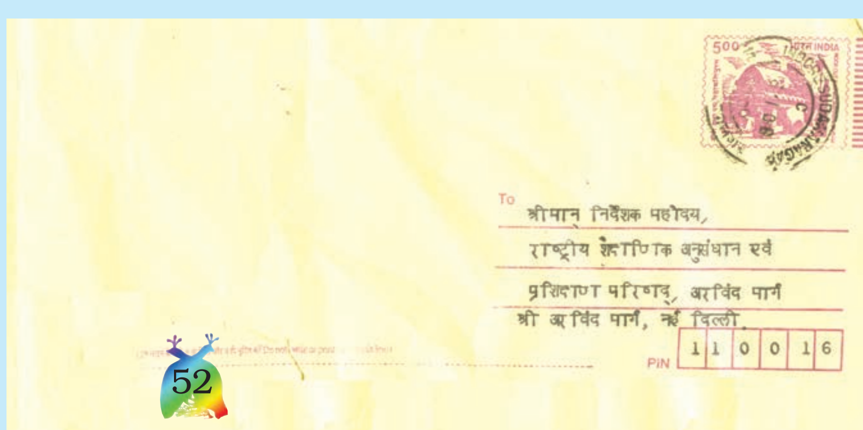

© NCERT not to be republished

ये दोनों पते किस तरह से भिन्न हैं? गांधीजी को भेजे गए पत्र में पते की जगह पर लिखा है – "महात्मा गांधी, जहाँ हो वहाँ वर्धा।" जबकि लिफ़ाफ़े पर इमारत या संस्थान से लेकर शहर तक का नाम लिखा हुआ है। पते में सबसे छोटी भौगोलिक इकाई से शुरू करके बड़ी की ओर बढ़े हैं। छोटी से बड़ी भौगोलिक इकाई का मतलब यह हुआ कि घर के नंबर के बाद गली–मोहल्ले का नाम, फिर गाँव, कस्बे, शहर के जिस हिस्से में है उसका नाम, फिर गाँव या शहर का नाम। शहर के नाम के बाद लिखे अंक को पिनकोड कहते हैं। हर जगह को एक पिनकोड दिया गया है। यह सोचने लायक बात है कि आखिर पिनकोड की ज़रूरत क्या है? हमारे देश में अनेक ऐसे कस्बे/गाँव/शहर हैं जिनके नाम एक जैसे हैं। पते के बाद पिन कोड लिखने से गंतव्य स्थान का पता लगाने में डाक छाँटने वाले कर्मचारियों को मदद मिलती है और पत्र जल्दी बाँटे जा सकते हैं।

पिनकोड की शुरुआत 15 अगस्त 1972 को डाक तार विभाग ने पोस्टल नंबर योजना के नाम से की। ज़ाहिर है कि गांधीजी को मिले इस पत्र पर और उन्हें मिले किसी भी पत्र पर पिनकोड

पिन शब्द पोस्टल इंडेक्स नंबर (**P**ostal **I**ndex **N**umber) का छोटा रूप है। किसी भी जगह का पिनकोड 6 अंकों का होता है। हर अंक का एक खास स्थानीय अर्थ है।
उदाहरण के लिए एन.सी.ई.आर.टी. को भेजे गए लिफ़ाफ़े पर लिखा अंक है– 110016
इसमें पहले स्थान पर दिया गया अंक यह बताता है कि यह पिनकोड दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब या जम्मू–कश्मीर का है। अगले दो अंक यानी 10 यह तय करते हैं कि यह दिल्ली (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) के उपक्षेत्र दिल्ली का कोड है। अगले तीन अंक यानी 016 दिल्ली उपक्षेत्र के ऐसे डाकघर का कोड है जहाँ से डाक बाँटी जाती है।

- अब तुम्हारा स्कूल जहाँ पर है उस इलाके का पिनकोड पता करो।
- अपने घर के इलाके का पिनकोड नंबर भी पता करो।
  पिनकोड की जानकारी डाकघर से प्राप्त की जा सकती है। डाकघरों में टेलीफ़ोन डाइरेक्टरी की तरह पिनकोड डाइरेक्टरी भी मिलती है। तुम्हारे इलाके का पिनकोड तो तुम्हारे मोहल्ले में लगे लैटर बॉक्स पर ही लिखा होगा।
- प्रमुख जगहों/शहरों के पिनकोड नंबर तुम्हें कहाँ–कहाँ मिल सकते हैं?

© NCERT not to be republished

टिकट-संग्रह का शौक काफी लोकप्रिय है। धीरे-धीरे इसमें टिकट-संग्रह के अलावा डाक से जुड़ी और बहुत-सी चीज़ें शामिल हो गई हैं। इसको डाक का विज्ञान कहना गलत नहीं होगा। क्या तुम जानते हो इस विज्ञान को क्या नाम दिया गया है? पता करो और यहाँ लिखो

. . . .

का इस्तेमाल नहीं किया गया था। फ़र्क सिर्फ़ पिनकोड का ही नहीं है। समय के साथ डाक सेवाओं में निरंतर बदलाव और विकास होता रहा है।

बहुत पुराने समय में कबूतरों के द्वारा संदेश भेजे जाते थे। जब संदेशवाहक कबूतरों की बात हो रही है तो उन इंसानों की बात कैसे न हो जो ऐसे समय से डाक पहुँचाने का काम करते रहे, जब संचार और परिवहन के साधन बेहद सीमित थे! बात हो रही है उन हरकारों की जो पैदल ही आम आदमी तक चिट्ठी-पत्री पहुँचाने का काम करते रहे। राजा, महाराजाओं के पास घुड़सवार हरकारे हुआ करते थे। हरकारों को न सिर्फ़ हर तरह की जगहों पर पहुँचना होता था, बल्कि डाक की रक्षा भी करनी होती थी। डाकू, लुटेरों या जंगली जानवरों की चपेट में आने का डर हमेशा बना रहता था। आज भी भारतीय डाक सेवा दुर्गम व पहाड़ी इलाकों तक डाक पहुँचाने के लिए हरकारों पर निर्भर करती है। जम्मू-कश्मीर के लद्दाख खंड में पदम (ज़ंस्कार) जैसी कई जगह हैं जहाँ हरकारे डाक पहुँचाते हैं।

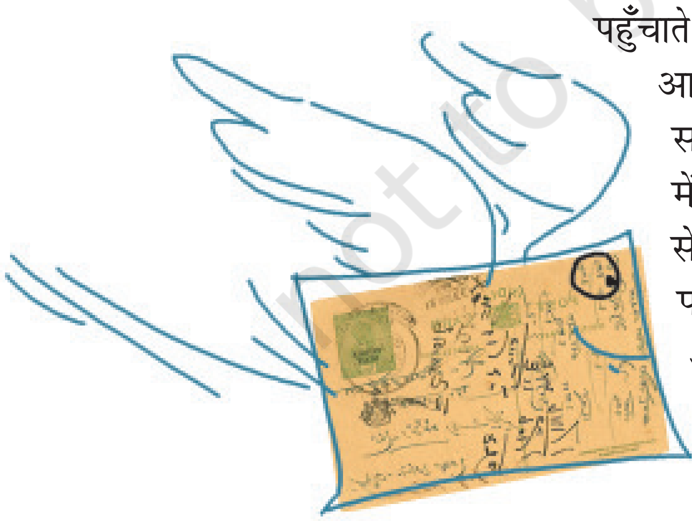

आजकल तो संदेश भेजने के नए-नए और तेज़ साधन आसानी से उपलब्ध हो गए हैं। डाक बाँटने में हवाई जहाज़, पानी के जहाज़ और जाने कौन-कौन से साधन इस्तेमाल किए जा रहे हैं। डाक-विभाग भी पत्र, मनीआर्डर के साथ-साथ ई-मेल, बधाई कार्ड आदि लोगों तक पहुँचा रहा है।

कबूतरों की उड़ान से लेकर हवाई डाक सेवाओं तक का सफ़र दिलचस्प करने वाला है। यह

सोचकर आश्चर्य होता है कि कबूतर जैसा पक्षी संदेशवाहक भी हो सकता है। कबूतर की कई प्रजातियाँ होती हैं और ये सभी संदेश लाने, ले जाने का काम नहीं कर सकतीं। गिरहबाज़ या हूमर वह प्रजाति है जिसे प्रशिक्षित करके डाक संदेश भेजने के काम में लाया जाता है। आखिर कबूतर अपना रास्ता ढूँढ़ कैसे लेता है? उन प्रवासी पक्षियों के बारे में सोचो और पता करो कि वे कैसे सैकड़ों मील का रास्ता और सही जगह तय कर पाते हैं।

उड़ीसा पुलिस खास तौर पर हूमर कबूतरों का इस्तेमाल राज्य के कई दुर्गम इलाकों में संदेश पहुँचाने के लिए कर रही है। कानून-व्यवस्था, संकट और अन्य मौकों पर संदेश के लिए ये कबूतर बहुत ही उपयोगी साबित हुए। कबूतरों की संदेश सेवा बहुत सस्ती है और उन पर खास खर्च नहीं आता है। इन कबूतरों का जीवन 15-20 साल होता है और 8-10 साल तक वे बहुत अच्छा काम करते हैं। स्वस्थ कबूतर एक दिन में एक हज़ार किलोमीटर तक का सफ़र कर सकता है। यदि कोई महत्वपूर्ण संदेश पहुँचाना हो तो दो कबूतरों को भेजा जाता है ताकि बाज़ के हमले जैसी अनहोनी स्थिति में भी दूसरा कबूतर संदेश पहुँचा दे।

शायद यह पढ़कर तुम एक ऐसे कबूतर की कहानी पढ़ना चाहो जो दूसरे विश्व युद्ध में संदेश पहुँचाता था। इस कबूतर की कहानी नेशनल बुक ट्रस्ट से अँग्रेज़ी में छपी एक किताब में दी गई है। किताब का नाम है '*ग्रे-नेक*', जो कि इस किताब के हीरो का भी नाम है। अगर तुम हिंदी में पढ़ना चाहते हो तो क्यों न नेशनल बुक ट्रस्ट को पत्र लिखो कि वे इस किताब को हिंदी में भी छापें। यह रहा उनका पता- नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया फ़ेज़ -11, वसंत कुंज, नई दिल्ली - 110070

© NCERT not to be republished

चिट्ठी-पत्री

1. गांधी जी को सिर्फ़ उनके नाम और देश के नाम के सहारे पत्र कैसे पहुँच गया होगा?
2. अगर एक पत्र में पते के साथ किसी का नाम न हो तो क्या पत्र ठीक जगह पर पहुँच जाएगा?
3. नाम न होने से क्या समस्याएँ आ सकती हैं?
4. पैदल हरकारों को किस-किस तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता होगा?
5. अगर तुम किसी को चिट्ठी लिख रहे हो तो पते में यह जानकारी किस क्रम में लिखोगे? गली/मोहल्ले का नाम, घर का नंबर, राज्य का नाम, खंड का नाम, कस्बे/शहर/गाँव का नाम, जनपद का नाम नीचे दी गई जगह में लिखो।

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

   तुमने इस क्रम में ही क्यों लिखा?
6. अपने घर पर कोई पुराना (या नया) पत्र ढूँढ़ो। उसे देखकर नीचे लिखे प्रश्नों का जवाब लिखो–

   (क) पत्र किसने लिखा?

   (ख) किसे लिखा?

   (ग) किस तारीख को लिखा?

   (घ) यह पत्र किस डाकखाने में तथा किस तारीख को पहुँचा?

   (ङ) यह उत्तर तुम्हें कैसे पता चला?
7. चिट्ठी भेजने के लिए आमतौर पर पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र या लिफ़ाफ़ा इस्तेमाल किया जाता है। डाकघर जाकर इनका मूल्य पता करके लिखो–

   पोस्टकार्ड ....

   अंतर्देशीय पत्र ....

   लिफ़ाफ़ा ....
8. डाकटिकट इकट्ठा करो। एक रुपये से लेकर दस रुपये तक के डाकटिकटों को क्रम में लगाकर कॉपी पर चिपकाओ। इकट्ठा किए गए डाकटिकटों पर अपने साथियों के साथ चर्चा करो।

© NCERT not to be republished

शब्दकोश

नीचे शब्दकोश का एक अंश दिया गया है जिसमें 'संचार' शब्द का अर्थ भी दिया गया है।

संज्ञीतज्ञ – संगीत जानने वाला, संगीत की कला में निपुण।

संग्रह – *पु.* 1. जमा करना, इकट्ठा करना, एकत्र करना, संचय। *प्र.* दीपक आजकल पक्षियों के पंखों का संग्रह करने में लगा है। 2. इकट्ठी की हुई चीज़ों का समूह या ढेर, संकलन; जैसे- टिकट-संग्रह, निबंध-संग्रह।

संचार – *पु.* 1. किसी संदेश को दूर तक या बहुत-से लोगों तक पहुँचाने की क्रिया या प्रणाली, कम्यूनिकेशन। *उ.* टेलीफ़ोन, टेलीविज़न, सेटेलाइट आदि संचार के माध्यमों से दुनिया आज छोटी हो गई है। 2. किसी चीज़ का प्रवाह, चलना, फैलना; जैसे-शरीर में रक्त का संचार, विद्युत का संचार।

(क) बताओ कि कौन-सा अर्थ पाठ के संदर्भ में ठीक है।

(ख) इस पन्ने को ध्यान से देखो और बताओ कि शब्दकोश में दिए गए शब्दों के साथ क्या-क्या जानकारी दी गई होती हैं।

© NCERT not to be republished

0525CH07

7 डाकिए की कहानी, कँवरसिंह की ज़ुबानी

शिमला की माल रोड पर जनरल पोस्ट ऑफ़िस है। उसी पोस्ट ऑफ़िस के एक कमरे में डाक छाँटने का काम चल रहा है। सुबह के 11:30 बजे हैं, खिड़की से गुनगुनी धूप छनकर आ रही है। इस धूप का मज़ा लेते हुए दो पैकर और तीन महिला डाकिया फटाफट डाक छाँटने का काम कर रहे हैं। वहीं पर मैंने सरकार से पुरस्कार पाने वाले डाकिया कँवरसिंह जी से बात की। यही बातचीत आगे दी जा रही है।

- **आपका शुभ नाम?**

  मेरा नाम कँवरसिंह है। मैं हिमाचल प्रदेश के शिमला ज़िले के नेरवा गाँव का निवासी हूँ। मेरी उम्र पैंतालीस साल है।

- **आपके परिवार में कौन-कौन हैं? उनके बारे में कुछ बताइए।**

  मेरे चार बच्चे हैं। तीन लड़कियाँ और एक लड़का। दो लड़कियों की शादी हो चुकी है। मेरा एक और बेटा भी था। वह मेरे गाँव में एक पहाड़ी से लकड़ियाँ लाते हुए गिर गया जिससे उसकी मौत हो गई।

- **आपके बेटे के साथ जो हुआ, उसका हमें बहुत दुख है। आपके इलाके में इस तरह की घटनाएँ क्या अक्सर होती हैं?**

  जी, ऐसी घटनाओं का होना असाधारण नहीं है। यहाँ हर साल तिरछी ढलानों या ढांकों से घास काटते हुए कई औरतें गिरकर मर जाती हैं। फिर भी यहाँ ऐसे ही रास्तों से चलना पड़ता है क्योंकि दूसरे कोई रास्ते होते ही नहीं।

  हमारे गाँव में अभी तक बस नहीं पहुँच पाती है। हिमाचल में हज़ारों ऐसे गाँव हैं जहाँ पैदल चलकर ही पहुँच सकते हैं।

- **फिर आपके बच्चे पढ़ने कैसे जाते होंगे?**

  मेरे बच्चे गाँव के स्कूल में पढ़ने जाते हैं। स्कूल लगभग पाँच किलोमीटर दूर है। मेरी एक लड़की दसवीं तक पढ़ी है, दूसरी बारहवीं तक। तीसरी लड़की बारहवीं कक्षा में पढ़ रही है। बेटा दसवीं में पढ़ता है।

© NCERT not to be republished

- **आप जहाँ काम करते हैं वहाँ आपके अलावा और कौन-कौन हैं? क्या आपको डाकिया ही कहकर बुलाते हैं?**

  पहले मैं भारतीय डाक सेवा में ग्रामीण डाक सेवक था। अब मैं पैकर बन गया हूँ। पर हूँ वही नीली वर्दी वाला डाक सेवक।

- **डाक सेवक को करना क्या-क्या होता है?**

  मुझे ! मुझे बहुत कुछ करना होता है। चिट्ठियाँ, रजिस्टरी पत्र, पार्सल, बिल, बूढ़े लोगों की पेंशन आदि छोड़ने गाँव-गाँव जाता हूँ।

- **क्या यह सब अभी भी करना पड़ता है? क्योंकि अब तो सूचना और संदेश देने के बहुत-से नए तरीके आ गए हैं।**

  शहरों में भले ही आज संदेश देने के कई साधन आ गए हैं, जैसे फ़ोन, मोबाइल, ई-मेल वगैरह, लेकिन गाँव में तो आज भी संदेश पहुँचाने का सबसे बड़ा ज़रिया डाक ही है। इसलिए गाँव में लोग डाकिए का बड़ा आदर और सम्मान करते हैं। अपनी चिट्ठी आदि पाने के लिए डाकिए का इंतज़ार करते हैं।

- **हमने सुना है कि हमारी डाक सेवा दुनिया की सबसे बड़ी डाक सेवा है, यह भला कैसे?**

  सुना तो आपने बिल्कुल ठीक है। हमारे देश की डाक सेवा आज भी दुनिया की सबसे बड़ी डाक सेवा है और सबसे सस्ती भी। केवल पाँच रुपए में देश के किसी भी कोने में हम चिट्ठी भेज सकते हैं। पोस्टकार्ड तो केवल पचास पैसे का ही है। यानी पचास पैसे में भी हम देश के हर कोने में अपना संदेश भेज सकते हैं।

- **आपको अपनी नौकरी में मज़ा तो बहुत आता होगा।**

  मुझे अपनी नौकरी बहुत अच्छी लगती है। जब मैं दूर नौकरी करने वाले सिपाही का मनीऑर्डर लेकर उसके घर पहुँचाता हूँ तो उसके बूढ़े माँ-बाप का खुशी भरा चेहरा देखते ही बनता है। ऐसे ही जब किसी का रजिस्टरी पत्र पहुँचाता हूँ जिसमें कभी रिज़ल्ट, कभी नियुक्ति पत्र होता है तो लोग बहुत खुश होते हैं। बूढ़े दादा और बूढ़ी नानी तो पेंशन के पैसे मिलने पर बहुत ही खुश होते हैं। छह महीनों तक वे मेरा इसके लिए इंतज़ार करते हैं। हिमाचल में बूढ़े लोगों को पेंशन हर छह महीनों के बाद इकट्ठी ही दी जाती है।

© NCERT not to be republished

- **आप क्या शुरू से इसी डाकघर में काम कर रहे हैं?**

शुरू में तो मैंने लाहौल स्पीति ज़िले के किब्बर गाँव में तीन साल तक नौकरी की है। यह हिमाचल का सबसे ऊँचा गाँव है। इसके बाद पाँच साल तक इसी जिले के काज़ा में और पाँच साल तक किन्नौर ज़िले में नौकरी की है। उस वक्त इन गाँव में टेलीफोन नहीं थे। बसें भी सिर्फ़ मुख्यालयों तक ही जाती थी। अभी भी कई ऐसे गाँव हैं जहाँ न तो बस जाती है और न ही वहाँ टेलीफोन है। ऐसी जगह में ग्रामीण डाकसेवक का बहुत मान किया जाता है।

- **आप पहाड़ी इलाके में रहते हैं। ज़ाहिर है डाक पहुँचाना आसान काम तो नहीं होगा।**

हाँ, मुश्किलें तो आती ही है। जब मैं किन्नौर ज़िले के मुख्यालय रिकांगपिओ में नौकरी करता था तो सुबह छह बजे मेरी ड्यूटी शुरू हो जाती थी। मैं छह बजे सुबह शिमला जाने वाली बस में डाक का बोरा रखता था और रात को आठ बजे शिमला से आने वाली बस से डाक का बोरा उतारता था। पैकर को ये सब काम करने पड़ते हैं। किन्नौर और लाहौल स्पीति हिमाचल प्रदेश के बहुत ठंडे तथा ऊँचे ज़िले हैं। इन ज़िलों में अप्रैल महीने में भी बर्फ़बारी हो जाती है। बर्फ़ में चलते हुए पैरों को ठंड से बचाना पड़ता है। वरना स्नोबाइट हो जाते हैं जिससे पैर नीले पड़ जाते हैं और उनमें गैंगरीन हो जाती है जिससे उँगलियाँ झड़ सकती हैं। इन ज़िलों में मुझे एक घर से दूसरे घर तक डाक पहुँचाने के लिए लगभग 26 किलोमीटर रोज़ाना चलना पड़ता था। हिमाचल में एक गाँव से दूसरे गाँव की दूरी लगभग चार या पाँच किलोमीटर तक होती है। हिमाचल के गाँव छोटे-छोटे होते हैं। एक गाँव में बस आठ से दस या कभी-कभी छह-सात घर ही होते हैं। इसीलिए चलना काफ़ी पड़ता है। चलना तो खैर हमारी आदत में ही शामिल हो चुका है ग्रामीण डाकिए की ज़िंदगी में तो चलना ही चलना है।

- **आपने बताया था कि पहले आप डाक सेवक थे, अब पैकर हैं, इसके आगे भी कोई प्रमोशन है क्या?**

पैकर के बाद डाकिया बन सकते हैं बस एक इम्तिहान पास करना पड़ता है। अभी तो काम के हिसाब से हमारा वेतन काफ़ी कम रहता है। सारा दिन कुर्सी पर बैठकर काम करने वाले बाबू का वेतन कहीं ज़्यादा होता है। पैकर का वेतन बाबू के जितना ही हो जाता है। अब तो डाकिए की नौकरी में लगना भी बहुत

© NCERT not to be republished

मुश्किल हो चुका है। हममें से जितने डाकिए रिटायर हो चुके हैं उनकी जगह नए डाकियों को नहीं रखा जा रहा है। इससे पुराने डाकियों पर काम का बोझ दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। न जाने, आने वाला समय कैसा होगा?

- **काम के दौरान कभी कोई बहुत खास बात हुई हो?**

एक घटना आपको सुनाता हूँ। मेरा तबादला शिमला के जनरल पोस्ट ऑफ़िस में हो गया था। वहाँ मुझे रात के समय रैस्ट हाउस और पोस्ट ऑफ़िस चौकीदारी का काम दिया गया था। यह 1998 की बात है। 29 जनवरी को रात लगभग साढ़े दस बजे का समय था। बाहर से किसी ने पोस्ट ऑफ़िस का दरवाज़ा खटखटाया। मैंने पूछा 'कौन है?' जबाव आया 'दरवाज़ा खोलो तुम से बात करनी है'। मैंने दरवाज़ा खोला तो अचानक पाँच-छह लोग अंदर घुसे और मुझे पीटना शुरू कर दिया। मैंने पूछा क्यों पीट रहे हैं तो उन्होंने कोई जबाव नहीं दिया। सारे ऑफ़िस की लाइटें बंद कर दीं। इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता मेरे सिर पर किसी भारी चीज़ से कई बार मारा जिससे मेरा सिर फट गया। मैं लगातार चिल्लाता रहा। उसके बाद मैं बेहोश हो गया और मुझे कुछ भी पता न चला। अगले दिन जब मुझे होश आया तो मैं शिमला के इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज के अस्पताल में दाखिल था। सिर में भयंकर दर्द हो रहा था। उन दिनों मेरा 17 साल का बेटा मेरे साथ ही रहता था। उसी से पता चला कि मेरे चिल्लाने की आवाज़ सुनकर लड़का और ऑफ़िस के दूसरे लोग जो नज़दीक ही रहते थे, दरवाज़ों के शीशे तोड़कर अंदर आए और मुझे अस्पताल पहुँचाया। मेरे सिर पर कई टाँके लगे थे। उसकी वजह से आज भी मेरी एक आँख से दिखाई नहीं देता।

सरकार ने मुझे जान पर खेलकर डाक की चीज़ें बचाने के लिए 'बैस्ट पोस्टमैन' का इनाम दिया। यह इनाम 2004 में मिला। इस इनाम में 500 रुपये और प्रशस्ति पत्र दिया जाता है। मैं और मेरा परिवार बहुत खुश हुए। आज भी मैं गर्व से कहता हूँ – "मैं बेस्ट पोस्ट मैन हूँ।"

प्रतिमा शर्मा

not to be republished © NCERT

8 वे दिन भी क्या दिन थे

घटना महत्वपूर्ण थी वरना कुम्मी अपनी डायरी में उसे क्यों लिखती। अपनी डायरी में उसने 17 मई सन् 2155 की रात को लिखा, "आज रोहित को सचमुच की एक पुस्तक मिली है।"

वह पुस्तक बहुत पुरानी थी। कुम्मी के दादा ने बताया था कि जब वे बहुत छोटे थे तब उनके दादा ने कहा था कि उनके ज़माने में सारी कहानियाँ कागज़ पर छपती थीं और पढ़ी जाती थीं। पुस्तकों में पृष्ठ होते थे जिन पर कहानियाँ छपी होती थीं और हर पृष्ठ पढ़ने के पश्चात् दूसरा पृष्ठ पलटकर आगे पढ़ना होता था। सारे शब्द स्थिर रहते थे, चलते नहीं थे जैसे आजकल पर्दे पर चलते हैं।

रोहित ने कहा था, "कितनी पुस्तकें बेकार जाती होंगी। एक बार पढ़ीं और फिर बेकार हो गईं। अब तो हमारे टेलीविज़न के पर्दे पर न जाने कितनी पुस्तकों की सामग्री आ जाती है और फिर भी यह पुस्तक नई की नई रहती है।"

कुम्मी ने भी रोहित की हाँ में हाँ मिलाई। फिर पूछा, "तुम्हें वह पुस्तक कहाँ मिली?"

रोहित ने बताया, "अपने घर में। एक पुराना डिब्बा कहीं दबा पड़ा था। उसी को फेंक रहे थे कि उसमें से यह पुस्तक मिली।"

"इसमें क्या लिखा है?"

"स्कूलों के बारे में लिखा है।"

"स्कूल?" कुम्मी ने प्रश्न किया। "उसके विषय में लिखने को है ही क्या? हर विद्यार्थी के घर पर एक मशीन होती है जिसमें टेलीविज़न की तरह का एक पर्दा होता है। रोज़ नियमित रूप उसके सामने

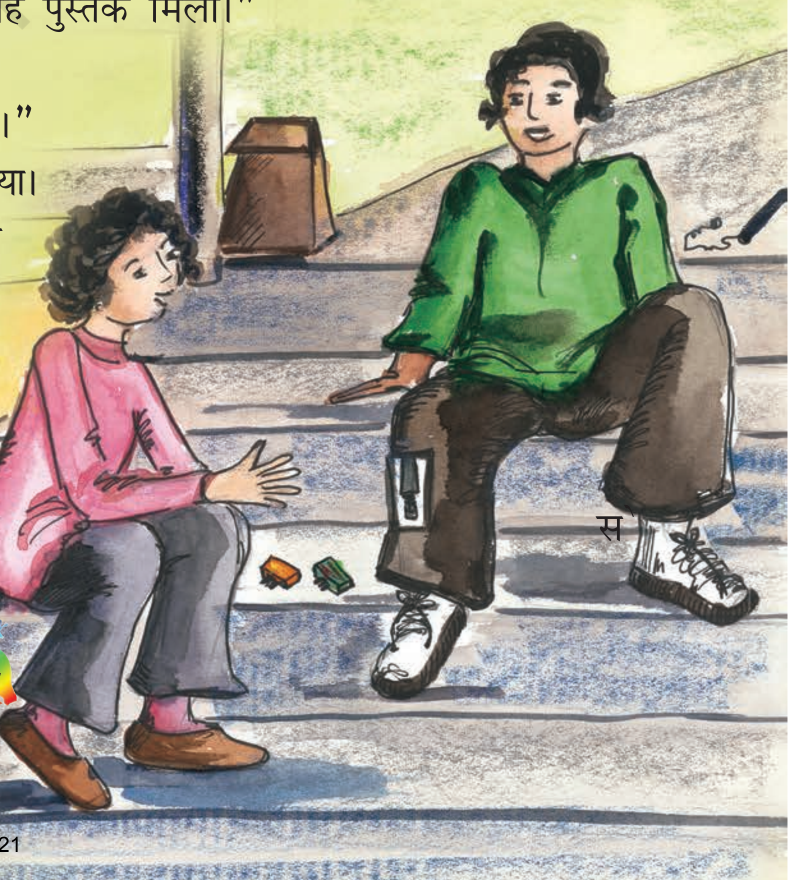

© NCERT not to be republished

बैठकर हमें वह सब याद करना होता है जो वह मशीन हमें बताती है। सारा गृहकार्य करके दूसरे दिन उसी मशीन में डाल देना होता है। हमारी गलतियाँ बताकर फिर वह हमें समझाती है। एक विषय पूरा होने पर वही मशीन हमारी परीक्षा लेकर हमें आगे पढ़ाना आरंभ कर देती है..." कहते-कहते कुम्मी थक गई थी। अंत में बोली, "कितना उबाऊ होता है यह सारा स्कूल का काम!"

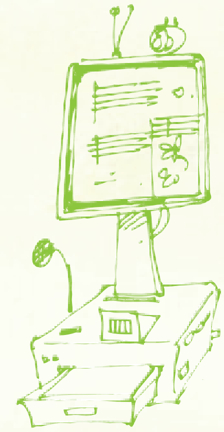

रोहित मुस्कराते हुए उसकी बातें सुन रहा था, "अरे बुद्धू, जैसे स्कूल का वर्णन इस पुस्तक में है, वह इससे भिन्न होता था। इसमें तो उन स्कूलों के बारे में लिखा है जो सदियों पहले होते थे।"

कुम्मी के मन में कुछ उत्सुकता जगी, बोली, "फिर भी उनके यहाँ मशीन के बने अध्यापक तो होते ही होंगे?"

कुम्मी को याद आया कि एक बार जब उससे भूगोल में रोज़ वही गलतियाँ होने लगी थीं, तो उसकी माँ ने मुहल्ले के अध्यक्ष को बताया था। तब एक आदमी आया था और उसने उस मशीन के पुर्ज़े-पुर्ज़े अलग कर दिए थे। तब उसने मन-ही-मन यह मनाया था कि वह आदमी इस बोर करने वाले अध्यापक को पुनः जोड़ न पाए, तो उसे हमेशा के लिए छुट्टी मिल जाए। लेकिन उस आदमी ने मशीन को फिर से जोड़कर उसकी माँ को बताया था, "लगता है मशीन के भूगोल की चक्की कुछ तेज़ रफ़्तार पर थी, सो आपकी लड़की के लिए उसे समझना कठिन हो गया था। मैंने अब उसकी गति कुछ धीमी कर दी है, सो आशा है अब ठीक रहेगा।"

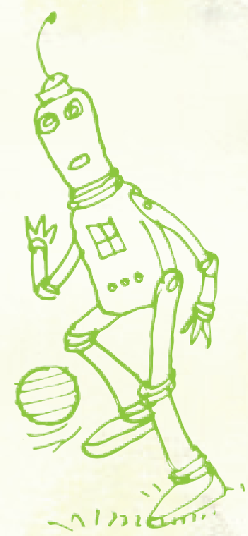

और कुम्मी को उसी समय भूगोल का सबक सीखने बैठ जाना पड़ा था। मन-ही-मन वह उस मशीनी-अध्यापक को कोसती रही थी।

तभी रोहित ने कुम्मी के सोचने के सिलसिले को तोड़ा। बोला, "हाँ, तब अध्यापक तो होते थे परंतु मशीन नहीं, स्त्रियाँ और पुरुष होते थे।"

"क्या कहा? कहीं कोई स्त्री या पुरुष इतने सारे विषय हमें सिखा सकता है?"

"क्यों नहीं? वह बच्चों को सारे विषय समझाते थे, गृहकार्य देते थे और प्रश्न पूछते थे। अध्यापक बच्चों के घर नहीं जाते थे बल्कि बच्चे एक विशेष भवन में जाते थे जिसे स्कूल कहते थे।"

© NCERT not to be republished

कुम्मी का अगला प्रश्न था, "तो क्या सब बच्चे एक समय में एक जैसी ही चीज़ें सीखते थे?"

"हाँ। एक आयु के बच्चे एक साथ बैठते थे।"

"लेकिन माँ कहती हैं कि मशीनी अध्यापक हर बच्चे की समझ के अनुसार पढ़ाता है, फिर पुराने ज़माने में यह कैसे संभव होता था?"

"तब वे लोग इस प्रकार नहीं करते थे। रहने दो, तुम्हारी इच्छा नहीं है तो मैं वह पुस्तक तुम्हें नहीं दूँगा।"

कुम्मी झट बोली, "नहीं नहीं, मैं उसे पढ़ना चाहूँगी कि तब स्कूल कैसे होते थे। कितनी अजीब-अजीब बातें जानने को मिलेंगी!"

इतने में अंदर से माँ की आवाज़ सुनकर कुम्मी बोली, "लगता है सबक का समय हो गया है।"

रोहित भी उठा और अपने घर की ओर चला गया। कुम्मी अपने घर की ओर चली गई। अंदर मशीन आगे का सबक देने को तैयार थी। मशीन से आवाज़ आनी आरंभ हो गई "आज सबसे पहले तुम्हें गणित सीखना है। कल का होम-वर्क छेद में डालो..."

कुम्मी ने वैसा ही किया। वह सोच रही थी कि कितने अच्छे होते होंगे वे पुराने स्कूल जहाँ एक ही आयु के सारे बच्चे हँसते, खेलते-कूदते स्कूल जाते होंगे... और पढ़ाने वाले पुरुष और स्त्रियाँ होते होंगे...

इतने में मशीन से स्वर आना आरंभ हो गया था और पर्दे पर चलते हुए अक्षर एवं अंक आने शुरू हो गए थे।

और कुम्मी सोच रही थी कि तब स्कूल जाने में कितना आनंद आता होगा, कितने खुश रहते होंगे सारे बच्चे!

आइज़क असीमोव

© NCERT not to be republished

सोचो

1. कुम्मी के हाथ जो किताब आई थी वह कब छपी होगी?
2. रोहित ने कहा था, "कितनी पुस्तकें बेकार जाती होंगी। एक बार पढ़ीं और फिर बेकार हो गईं।" क्या सचमुच में ऐसा होता है?
3. कागज़ के पन्नों की किताब और टेलीविज़न के पर्दे पर चलने वाली किताब। तुम इनमें से किसको पसंद करोगे? क्यों?
4. तुम कागज़ पर छपी किताबों से पढ़ते हो। पता करो कि कागज़ से पहले की छपाई किस-किस चीज़ पर हुआ करती थी?
5. तुम मशीन की मदद से पढ़ना चाहोगे या अध्यापक की मदद से? दोनों के पढ़ाने में किस-किस तरह की सरलता और कठिनाइयाँ हैं?

" वे दिन भी क्या दिन थे!"

बीते दिनों की प्रशंसा में कही जाने वाली यह बात तुमने कभी किसी-से सुनी है? अपने बीते हुए दिनों के बारे में सोचो और बताओ कि उनमें से किस समय के बारे में तुम "वे दिन भी क्या दिन थे!" कहना चाहोगे?

कल, आज और कल

1. 1967 में हिंदी में छपी इस कहानी में कल्पना की गई है कि सालों बाद स्कूल की जगह मशीनें ले लेंगी। तुम भी कल्पना करो कि बहुत सालों बाद ये चीज़ें कैसी होंगी–
   - पेन
   - घड़ी
   - टेलीफ़ोन/मोबाइल
   - टेलिविज़न
   - कोई और चीज़ जिसके बारे में तुम सोचना चाहो...
2. नीचे कुछ वस्तुओं के नाम दिए गए हैं। बड़ों से पूछकर पता करो कि बीस साल पहले इनकी क्या कीमत थी और अब इनका कितना दाम है?

आलू	लड्डू	शक्कर
दाल	चावल	दूध

© NCERT not to be republished

3. आज हमारे कई काम कंप्यूटर की मदद से होते हैं। सोचो और लिखो कि अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में हम कंप्यूटर का इस्तेमाल किन-किन उद्देश्यों के लिए करते हैं?

व्यक्तिगत	सार्वजनिक
• ____________	• ____________
• ____________	• ____________
• ____________	• ____________
• ____________	• ____________
• ____________	• ____________

• जानकारी देने या लेने के लिए कई तरीके अपनाए जाते हैं। हम जो कुछ सोचते या महसूस करते हैं उसे अभिव्यक्त करने या बताने के भी कई ढंग हो सकते हैं। बॉक्स में ऐसे कुछ साधन दिए गए हैं। उनका वर्गीकरण करके नीचे दी गई तालिका में लिखो।

संदेश	अभिनय	रेडियो	नृत्य के हाव-भाव
फ़ोन	विज्ञापन	नोटिस	संकेत-भाषा
चित्र	मोबाइल	टी.वी.	मोबाइल संदेश
फ़ैक्स	इंटरनेट	तार	इश्तहार

जानकारी	भावनाएँ
____________	____________
____________	____________
____________	____________
____________	____________
____________	____________

ऊपर लिखी चीज़ें इकतरफ़ा भी हो सकती हैं और दो तरफ़ा भी। जिन चीज़ों के ज़रिए इकतरफ़ा संप्रेषण होता है उनके आगे (→) का निशान लगाओ। दो तरफ़ा संवाद की चीज़ों के आगे (↔) का निशान लगाओ।

© NCERT not to be republished

तुम्हारी डायरी

- डायरी लिखना एक निजी काम या शौक है। तुम अपनी डायरी किसी और को पढ़ने को देते हो या नहीं यह तुम्हारी अपनी मर्ज़ी है। कई व्यक्तियों ने अपनी डायरियाँ छपवाई भी हैं, ताकि अन्य लोग उन्हें पढ़ सकें। ऐसी ही कोई डायरी खोजकर पढ़ो और उसका कोई अंश कक्षा में सुनाओ।
- अपनी डायरी बनाओ और उसमें खुद से जुड़ी बातें लिखो।
- डायरी में तुम अपने स्कूल के बारे में क्या लिखना चाहोगे?

तुम भी कल्पना करो

दोस्तों के साथ बात करके अंदाज़ा लगाओ कि 50 साल बाद इनमें क्या-क्या बदलाव आएगा-

- फ़िल्मों में ....
- गाँव की हालत में ....
- तुम्हारी परिचित किसी नदी में ....
- स्कूल में ....

था, है, होगा

1. असीमोव की कहानी 2155 यानी भविष्य में आने वाले समय के बारे में है। फिर भी कहानी में 'थे' का इस्तेमाल हुआ है जो बीते समय के बारे में बताता है। ऐसा क्यों है?
2. (क) 'जब मुझे बहुत डर लगा था...' 'मैं जब छोटा था.....' इस शीर्षक से जुड़े किसी अनुभव का वर्णन करो।

   (ख) तुम्हें 'मैं' शीर्षक से एक अनुच्छेद लिखना है। अपने स्वभाव, अच्छाइयों, कमियों, पसंद-नापसंद के बारे में सोचो और लिखो। या किसी मैच का आँखों देखा हाल ऐसे लिखो मानो वह अभी तुम्हारी आँखों के सामने हो रहा है।

   (ग) अगली छुट्टियों में तुम्हें नानी के पास जाना है। वहाँ तुम क्या-क्या करोगे, कैसे वक़्त बिताओगे-इस पर एक अनुच्छेद लिखो।

   तुमने जो तीन अनुच्छेद लिखे उनमें से पहले का संबंध उससे है जो बीत चुका है। दूसरे में अभी की बात है और तीसरे में बाद में घटने वाली घटनाओं का वर्णन है। इन अनुच्छेदों में इस्तेमाल की गई क्रियाओं को ध्यान से देखो। ये बीते हुए, अभी के और बाद के समय के बारे में बताती हैं।

© NCERT not to be republished

9 एक माँ की बेबसी

इस कविता को पढ़ते समय, आँखों के सामने कई चित्र बनते हैं। बचपन का चित्र, बचपन के खास समय–खेल और साथियों का चित्र, उन साथियों में एक खास साथी रतन का और एक माँ का चित्र। इसे पढ़ो और महसूस करो।

कविता धीरे-धीरे पढ़ने की चीज़ है। उसे मन में उतरने में काफ़ी समय लगता है। कभी-कभी तो बरसों बाद हम बचपन की पढ़ी कविता पढ़ते हैं तो लगता है–पहली बार पढ़ा है इसे। कविता पढ़ने के बाद मन के किसी कोने में घर बना लेती हैं। किसी मौके पर वह उभर आती है।

कविता, कहानी, सबके साथ यह होता है। इसीलिए हमें इससे चिंतित होने की ज़रूरत नहीं कि कविता एक बार में पूरी तरह समझ में आ रही है या नहीं। अगर उससे सिर्फ़ एक चित्र ही उभरता है तो भी कविता कामयाब है।

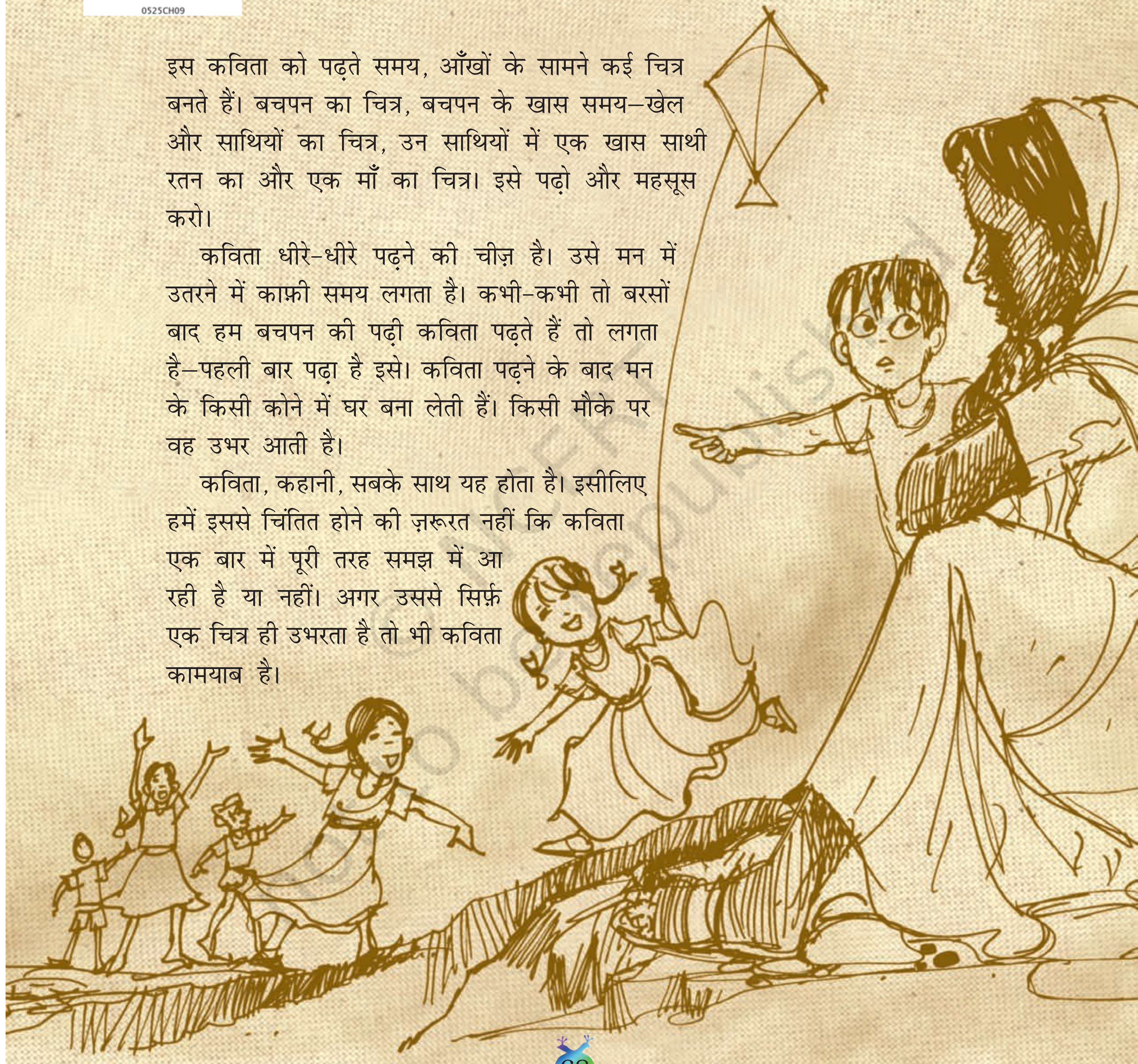

न जाने किस अदृश्य पड़ोस से
निकल कर आता था वह
खेलने हमारे साथ–
रतन, जो बोल नहीं सकता था
खेलता था हमारे साथ
एक टूटे खिलौने की तरह
देखने में हम बच्चों की ही तरह
था वह भी एक बच्चा।
लेकिन हम बच्चों के लिए अजूबा था
क्योंकि हमसे भिन्न था।
थोड़ा घबराते भी थे हम उससे
क्योंकि समझ नहीं पाते थे
उसकी घबराहटों को,
न इशारों में कही उसकी बातों को,
न उसकी भयभीत आँखों में
हर समय दिखती
उसके अंदर की छटपटाहटों को।
जितनी देर वह रहता
पास बैठी उसकी माँ
निहारती रहती उसका खेलना।
अब जैसे-जैसे
कुछ बेहतर समझने लगा हूँ
उनकी भाषा जो बोल नहीं पाते हैं
याद आती
रतन से अधिक
उसकी माँ की आँखों में
झलकती उसकी बेबसी।

कुँवर नारायण

© NCERT not to be republished

कविता से

1. यह बच्चा कवि के पड़ोस में रहता था, फिर भी कविता 'अदृश्य पड़ोस' से शुरू होती है। इसके कई अर्थ हो सकते हैं, जैसे–

    (क) कवि को मालूम नहीं था कि यह बच्चा ठीक-ठीक किस घर में रहता था।

    (ख) पड़ोस में रहने वाले बाकी बच्चे एक-दूसरे से बातें करते थे, पर यह बच्चा बोल नहीं पाता था, इसलिए पड़ोसी होने के बावजूद वह दूसरे बच्चों के लिए अनजाना था।

    इन दो में से कौन-सा अर्थ तुम्हें ज़्यादा सही लगता है? क्या कोई और अर्थ भी हो सकता है?

2. 'अंदर की छटपटाहट' उसकी आँखों में किस रूप में प्रकट होती थी?

    (क) चमक के रूप में

    (ख) डर के रूप में

    (ग) जल्दी घर लौटने की इच्छा के रूप में

तरह-तरह की भावनाएँ

1. नीचे लिखी भावनाएँ कब या कहाँ महसूस होती हैं?

    (क) **छटपटाहट**

    - अधीरता – कहीं जाने की जल्दी हो और जाना संभव न हो जैसे–स्कूल की छुट्टी में अभी काफ़ी देर हो, पर घर पर ऐसा कोई मेहमान आने वाला हो जिसे तुम बहुत पसंद करते हो
    - इच्छा – किसी चीज़ को पाने की इच्छा हो पर वह तुरंत न मिल सकती हो जैसे भूख लगी हो, पर खाना तैयार न हो
    - संदेश – हम कोई संदेश देना चाह रहे हों पर दूसरे समझ न पा रहे हों जैसे शिक्षक से कहना हो कि घंटी बज गई है, अब पढ़ाना बंद करें, पर उन्हें घंटी सुनाई न दी हो

    इनमें से कौन-सा अर्थ या संदर्भ इस बच्चे पर लागू होता है?

    (ख) **घबराहट**

    हमें जब किसी बात की आशंका हो तो घबराहट महसूस होती है। जैसे–

    (क) अँधेरा होने वाला हो और हम घर से काफ़ी दूर हों या अकेले हों

    (ख) समय कम हो और हमें कोई काम पूरा कर लेना हो– जैसे परीक्षा में देखा जाता है

    (ग) यह डर हो कि दूसरे के मन में क्या चल रहा है

    जैसे–पापा को मालूम चल गया हो कि काँच का गिलास तुमसे टूटा है

2. जो बच्चा बोल नहीं सकता, वह किस-किस बात की आशंका से 'घबराहट' महसूस कर सकता है?

© NCERT not to be republished

3. "थोड़ा घबराते भी थे हम उससे, क्योंकि समझ नहीं पाते थे उसकी घबराहटों को"
   - रतन क्या सोचकर घबराता होगा?
   - अपने दोस्तों से पूछकर पता करो, कौन क्या सोचकर और किस काम को करने में घबराता है। कारण भी पता करो।

दोस्त/सहेली का नाम	किस बात से घबराता है?	घबराने का कारण
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

भाषा के रंग

1. कवि ने इस बच्चे को 'टूटे खिलौने' की तरह बताया है। जब कोई खिलौना टूट जाता है तो वह उस तरह से काम नहीं कर पाता जिस तरह से पहले करता था। संदर्भ के अनुसार खाली स्थान भरो।

खिलौना	टूटने का कारण	नतीजा
गाड़ी	पहिया निकल जाने पर	चल नहीं पाती
गुड़िया	सीटी निकल जाने पर	....
गेंद	....	....
जोकर	चाबी निकल जाने पर	....

2. 'बेबस' शब्द 'बे' और 'वश' को जोड़कर बना है। यहाँ बे का अर्थ 'बिना' है। नीचे दिए शब्दों में यही 'बे' छिपा है। इस सूची में तुम और कितने शब्द जोड़ सकती हो?

बेजान	बेचैन	....	....
बेसहारा	बेहिसाब	....	....

देखने के तरीके

1. इस कविता में देखने से संबंधित कई शब्द आए हैं। ऐसे छह शब्द छाँटकर लिखो।
2. "माँ की आँखों में झलकती उसकी बेबसी"
   आँखें बहुत कुछ कहती हैं। वे तरह-तरह के भाव लिए हुए होती हैं। नीचे ऐसी कुछ आँखों का वर्णन है। इनमें से कौन-सी नज़रें तुम पहचानते हो-

© NCERT not to be republished

- सहमी नज़रें
- प्यार भरी नज़रें
- क्रोध भरी आँखें
- उनींदी आँखें
- शरारती आँखें
- डरावनी आँखें

3. नीचे आँखों से जुड़े कुछ मुहावरे दिए गए हैं। तुम इनका प्रयोग किन संदर्भों में करोगे?
   - आँख दिखाना
   - नज़र चुराना
   - आँख का तारा
   - नज़रें फेर लेना
   - आँख पर पर्दा पड़ना

माँ

"याद आती रतन से अधिक
उसकी माँ की आँखों में झलकती उसकी बेबसी"

1. रतन की माँ की आँखों में किस तरह की बेबसी झलकती होगी?
2. अपनी माँ के बारे में सोचते हुए नीचे लिखे वाक्यों को पूरे करो–

(क) मेरी माँ बहुत खुश होती हैं जब ....

....

(ख) माँ मुझे इसलिए डाँटती हैं, क्योंकि ....

....

(ग) मेरी माँ चाहती हैं कि मैं ....

....

(घ) माँ उस समय बहुत बेबस हो जाती हैं जब ....

....

(ङ) मैं चाहती/ता हूँ कि मेरी माँ ....

....

© NCERT not to be republished

मज़ाखटोला

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

मज़ाखटोला

किताब का यह भाग हास्य या हँसी की रचनाओं का है। 'किसी बात या रचना में ऐसा क्या है कि उसे सुनने या पढ़ने से हमें हँसी आ जाती है?' इस प्रश्न का उत्तर हम एक चुटकुले की मदद से ढूँढ़ सकते हैं–

अध्यापक– 'मैंने तुम्हें गाय और घास का चित्र बनाने के लिए कहा था, पर तुम्हारा कागज़ तो कोरा पड़ा है।'

दिनेश– 'सर, मैं घास और गाय का चित्र बना रहा था पर जब तक चित्र पूरा होता, गाय घास खाकर अपने घर चली गई।'

इस चुटकुले में तीन ऐसी चीज़ें साफ़-साफ़ देखी जा सकती हैं जो लगभग हरेक हास्य रचना में होती हैं–

1. स्थिति का दबाव या लाचारी
2. लाचारी से निपटने के लिए कोई एकदम नई कल्पना या सूझ
3. शुरू की स्थिति का उलट जाना

चुटकुले की शुरुआत में दिनेश पर यह दबाव है कि वह अपना चित्र दिखाए। चित्र उसने बनाया ही नहीं है, दिखाएगा क्या? मगर अपनी कल्पना से वह एक ऐसा उत्तर देता है जिसमें कमी ढूँढ़ना मुश्किल है। उसके उत्तर को हम कल्पनाशील कह सकते हैं। जो चीज़ हमें हँसने के लिए मजबूर करती है, वह यही कल्पनाशीलता या सूझबूझ है जो एक दबाव वाली स्थिति को बदल देती है।

इस तरह देखें तो हम कह सकते हैं कि हर हास्य रचना एक काल्पनिक स्थिति का निर्माण करती है। हमें हँसाकर वह रोज़ाना की वास्तविक दुनिया या ज़िंदगी के दबावों से थोड़ी देर के लिए मुक्ति दिलाती है। हास्य रचनाएँ हमें कुछ सिखाने की कोशिश नहीं करतीं, वे केवल हँसाती हैं। पर ऐसी रचनाओं को गौर से देखकर हम यह समझ सकते हैं कि कोई रचना या उसकी भाषा हमें क्यों और कैसे हँसाती है।

ऊपर दी गई तीन विशेषताओं को इस खंड में शामिल रचनाओं में ढूँढ़ा जा सकता है। **चावल की रोटियाँ** शीर्षक नाटक में कोको नाम के लड़के की लाचारी बढ़ती चली जाती है। चावल की रोटियाँ अकेले

© NCERT not to be republished

बैठकर खाने की उसकी इच्छा अंत तक पूरी नहीं होती। दूसरी तरफ़ **एक दिन की बादशाहत** में रोज़ाना रहने वाली स्थिति उलट जाती है। घर के बड़ों को एक दिन बच्चों की तरह जीना पड़ता है।

उलटी हुई स्थिति का मज़ा हम **गुरु और चेला** में भी देख सकते हैं। यह एक ऐसी अँधेर नगरी की कहानी है जहाँ हर चीज़ एक समान कीमत पर बिकती है। ऐसी नगरी में गुरु और चेला एक मुसीबत में बुरी तरह फँस जाते हैं, पर अंत में एक अनोखी स्थिति बनती है और वे बच जाते हैं। इस कविता की भाषा पर ध्यान दें तो हम शब्दों और मुहावरों के प्रयोग में छिपी हँसी को पहचान सकते हैं।

स्वामी की दादी शीर्षक कहानी में स्वामीनाथन के भोले-भाले प्रश्न सुनकर उसकी दादी मन-ही-मन खुश होती है। शायद दो बातें इस कहानी को मज़ेदार बनाती हैं– एक, दादी स्वामी के सवालों को बहुत ज़्यादा गंभीरता से लेती हैं। दूसरे, दादी-पोता दोनों में अपनी-अपनी बात कहने का उतावलापन और होड़ होती है।

पहेली बुझाने वाली कहानियाँ भी एक अलग तरह का आनंद देती हैं। अकबर-बीरबल के **किस्से** इसीलिए लोकप्रिय हैं कि उनमें अकबर के कठिन प्रश्नों का जवाब बीरबल बड़ी चतुराई से देते हैं। गोनू झा के किस्से भी इसी प्रकार के हैं।

मज़ा देने वाली रचनाओं को हम एक और कोण से देख सकते हैं– हाज़िरजवाबी, व्यंग्य और हँसाने वाली परिस्थितियाँ, घटनाक्रम तथा अतिशयोक्ति। यदि हम **मज़ाखटोला** की रचनाओं को इस दृष्टि से देखें तो **गुरु और चेला** तथा गोनू झा का किस्सा **बिना जड़ का पेड़** हाज़िरजवाबी और सूझबूझ के नमूने हैं। **चावल की रोटियाँ** और **एक दिन की बादशाहत** में हास्य के तत्त्व परिस्थितियों और घटनाक्रम से पैदा होते हैं। **स्वामी की दादी** हमें हँसाता नहीं है, पर दादी-पोते के बीच मज़ेदार संवाद पढ़कर हम मुस्कुराते ज़रूर हैं। **ढब्बू जी** के पहले कार्टून में अतिशयोक्ति से हास्य पैदा होता है तो दूसरा कार्टून व्यंग्य का उदाहरण है।

बच्चों में स्वस्थ और बुद्धिमत्ता पूर्ण हास्यबोध पैदा करने के लिए हाज़िरजवाबी और सूझबूझ की लोककथाएँ, कार्टून और हास्य-व्यंग्य की रचनाएँ अधिक-से-अधिक उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

© NCERT not to be republished

10 एक दिन की बादशाहत

"आरिफ़...सलीम...चलो, फ़ौरन सो जाओ," अम्मी की आवाज़ ऐन उस वक्त आती थी, जब वे दोस्तों के साथ बैठे कव्वाली गा रहे होते थे। या फिर सुबह बड़े मज़े में आइसक्रीम खाने के सपने देख रहे होते कि आपा झिंझोड़कर जगा देतीं "जल्दी उठो, स्कूल का वक्त हो गया,"

दोनों की मुसीबत में जान थी। हर वक्त पाबंदी, हर वक्त तकरार। अपनी मर्ज़ी से चूँ भी न कर सकते थे। कभी आरिफ़ को गाने का मूड आता, तो भाई-जान डाँटते "चुप होता है या नहीं? हर वक्त मेंढक की तरह टर्राए जाता है!"

बाहर जाओ, तो अम्मी पूछतीं "बाहर क्यों गए?" अंदर रहते, तो दादी चिल्लातीं "हाय, मेरा दिमाग फटा जा रहा है शोर के मारे! अरी रज़िया, ज़रा इन बच्चों को बाहर हाँक दे!" जैसे बच्चे न हुए मुर्गी के चूज़े हो गए!

दोनों घंटों बैठकर इन पाबंदियों से बच निकलने की तरकीबें सोचा करते। उन दोनों से तो सारे घर को दुश्मनी हो गई थी। लिहाज़ा दोनों ने मिलकर एक योजना बनाई और अब्बा की खिदमत में एक दरखास्त पेश की कि एक दिन उन्हें बड़ों के सारे अधिकार दे दिए जाएँ और सब बड़े छोटे बन जाएँ!

"कोई ज़रूरत नहीं है ऊधम मचाने की!" अम्मी ने अपनी आदत के अनुसार डाँट पिलाई। लेकिन अब्बा जाने किस मूड में थे कि न सिर्फ़ मान गए बल्कि यह इकरार भी कर बैठे कि कल दोनों को हर किस्म के अधिकार मिल जाएँगे।

अभी सुबह होने में कई घंटे थे कि आरिफ़ ने अम्मी को झिंझोड़ डाला "अम्मी, जल्दी उठिए, नाश्ता तैयार कीजिए!"

© NCERT not to be republished

अम्मी ने चाहा एक झापड़ रसीद करके सो रहें, मगर याद आया कि आज तो उनके सारे अधिकार छीने जा चुके हैं।

फिर दादी ने सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद दवाएँ खाना और बादाम का हरीरा पीना शुरू किया, तो आरिफ़ ने उन्हें रोका "तौबा है, दादी! कितना हरीरा पिएँगी आप...पेट फट जाएगा!" और दादी ने हाथ उठाया मारने के लिए।

नाश्ता मेज़ पर आया, तो आरिफ़ ने खानसामा से कहा "अंडे और मक्खन वगैरह हमारे सामने रखो, दलिया और दूध-बिस्कुट इन सबको दे दो!"

आपा ने कहर-भरी नज़रों से उन्हें घूरा, मगर बेबस थी क्योंकि रोज़ की तरह आज वह तर माल अपने लिए नहीं रख सकती थीं।

सब खाने बैठे, तो सलीम ने अम्मी को टोका "अम्मी, ज़रा अपने दाँत देखिए, पान खाने से कितने गंदे हो रहे हैं!"

"मैं तो दाँत माँज चुकी हूँ," अम्मी ने टालना चाहा!

"नहीं, चलिए, उठिए!" अम्मी निवाला तोड़ चुकी थीं, मगर सलीम ने ज़बरदस्ती कंधा पकड़कर उन्हें उठा दिया।

अम्मी को गुसलखाने में जाते देखकर सब हँस पड़े, जैसे रोज़ सलीम को जबरदस्ती भगा के हँसते थे।

फिर वह अब्बा की तरफ़ मुड़ा "ज़रा अब्बा की गत देखिए! बाल बढ़े हुए, शेव नहीं की, कल कपड़े पहने थे और आज इतने मैले कर डाले! आखिर अब्बा के लिए कितने कपड़े बनाए जाएँगे!"

यह सुनकर अब्बा का हँसते-हँसते बुरा हाल हो गया। आज ये दोनों कैसी सही नकल उतार रहे थे सबकी! मगर फिर अपने कपड़े देखकर वह सचमुच शर्मिंदा हो गए।

थोड़ी देर बाद जब अब्बा अपने दोस्तों के बीच बैठे अपनी नई गज़ल लहक-लहक कर सुना रहे थे, तो आरिफ़ फिर चिल्लाने लगा "बस कीजिए, अब्बा! फ़ौरन ऑफ़िस जाइए, दस बज गए!"

2020-21

“चु...चु...चोप...” अब्बा डाँटते-डाँटते रुक गए। बेबसी से गज़ल की अधूरी पंक्ति दाँतों में दबाए पाँव पटकते आरिफ़ के साथ हो लिए।

“रज़िया, ज़रा मुझे पाँच रुपये तो देना,” अब्बा दफ़्तर जाने को तैयार होकर बोले।

“पाँच रुपये का क्या होगा? कार में पैट्रोल तो है।” आरिफ़ ने तुनककर अब्बा जान की नकल उतारी, जैसे अब्बा कहते हैं कि इकन्नी का क्या करोगे, जेब-खर्च तो ले चुके!

थोड़ी देर बाद खानसामा आया “बेगम साहब, आज क्या पकेगा?”

“आलू, गोश्त, कबाब, मिर्चों का सालन...” अम्मी ने अपनी आदत के अनुसार कहना शुरू किया।

“नहीं, आज ये चीज़ें नहीं पकेंगी!” सलीम ने किताब रखकर अम्मी की नकल उतारी, “आज गुलाब-जामुन, गाजर का हलवा और मीठे चावल पकाओ!”

“लेकिन मिठाइयों से रोटी कैसे खाई जाएगी?” अम्मी किसी तरह सब्र न कर सकीं।

“जैसे हम रोज़ सिर्फ़ मिर्चों के सालन से खाते हैं!” दोनों ने एक साथ कहा।

दूसरी तरफ़ दादी किसी से तू-तू मैं-मैं किए जा रही थीं।

“ओफ़्फ़ो! दादी तो शोर के मारे दिमाग पिघलाए दे रही हैं!” आरिफ़ ने दादी की तरह दोनों हाथों में सिर थामकर कहा।

इतना सुनते ही दादी ने चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया कि आज ये लड़के मेरे पीछे पंजे झाड़ के पड़ गए हैं। मगर अब्बा के समझाने पर खून का घूँट पीकर रह गईं।

कॉलेज का वक्त हो गया, तो भाई जान अपनी सफ़ेद कमीज़ को आरिफ़-सलीम से बचाते दालान में आए “अम्मी, शाम को मैं देर से आऊँगा, दोस्तों के साथ फिल्म देखने जाना है।”

© NCERT not to be republished

“खबरदार!” आरिफ़ ने आँखें निकालकर उन्हें धमकाया। “कोई ज़रूरत नहीं फिल्म देखने की! इम्तिहान करीब हैं और हर वक्त सैर-सपाटों में गुम रहते हैं आप!”

पहले तो भाई जान एक करारा हाथ मारने लपके, फिर कुछ सोचकर मुस्करा पड़े। “लेकिन, हुज़ूरे-आली, दोस्तों के साथ खाकसार फिल्म देखने की बात पक्की कर चुके हैं इसलिए इजाज़त देने की मेहरबानी की जाए!” उन्होंने हाथ जोड़ के कहा।

“बना करे... बस, मैंने एक बार कह दिया!” उसने लापरवाही से कहा और सोफ़े पर दराज़ होकर अखबार देखने लगा।

उसी वक्त आपा भी अपने कमरे से निकली। एक निहायत भारी साड़ी में लचकती-लटकती बड़े ठाठ से कॉलेज जा रही थीं।

“आप...!” सलीम ने बड़े गौर से आपा का मुआयना किया। “इतनी भारी साड़ी क्यों पहनी? शाम तक गारत हो आएगी। इस साड़ी को बदलकर जाइए। आज वह सफ़ेद वॉयल की साड़ी पहनना!”

“अच्छा अच्छा...बहुत दे चुके हुक्म...” आपा चिढ़ गई। “हमारे कॉलेज में आज फ़ंक्शन है,” उन्होंने साड़ी की शिकनें दुरस्त कीं।

“हुआ करे... मैं क्या कह रहा हूँ... सुना नहीं...?” अपनी इतनी अच्छी नकल देखकर आपा शर्मिंदा हो गईं-बिल्कुल इसी तरह तो वह आरिफ़ और सलीम से उनकी मनपसंद कमीज़ उतरवाकर निहायत बेकार कपड़े पहनने का हुक्म लगाया करती हैं।

दूसरी सुबह हुई।

सलीम की आँख खुली, तो आपा नाश्ते की मेज़ सजाए उन दोनों के उठने का इंतज़ार कर रही थीं। अम्मी खानसामा को हुक्म दे रहीं थीं कि हर खाने के साथ एक मीठी चीज़ ज़रूर पकाया करो। अंदर आरिफ़ के गाने के साथ भाई जान मेज़ का तबला बजा रहे थे और अब्बा सलीम से कह रहे थे “स्कूल जाते वक्त एक चवन्नी जेब में डाल लिया करो... क्या हर्ज़ है...!”

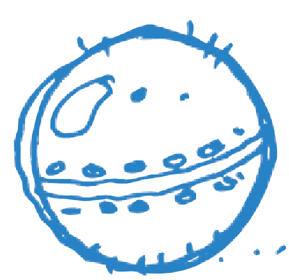

जीलानी बानो

उर्दू से अनुवाद-लक्ष्मीचंद्र गुप्त

© NCERT not to be republished

कहानी की बात

1. अब्बा ने क्या सोचकर आरिफ़ की बात मान ली?
2. वह एक दिन बहुत अनोखा था जब बच्चों को बड़ों के अधिकार मिल गए थे। वह दिन बीत जाने के बाद इन्होंने क्या सोचा होगा–
   - आरिफ़ ने
   - अम्मा ने
   - दादी ने

तुम्हारी बात

1. अगर तुम्हें घर में एक दिन के लिए सारे अधिकार दे दिए जाएँ तो तुम क्या-क्या करोगी?
2. कहानी में ऐसे कई काम बताए गए हैं जो बड़े लोग आरिफ़ और सलीम से करने के लिए कहते थे। तुम्हारे विचार से उनमें से कौन-कौन से काम उन्हें बिना शिकायत किए कर लेने चाहिए थे और कौन-कौन से कामों के लिए मना कर देना चाहिए था?

तरकीब

"दोनों घंटों बैठकर इन पाबंदियों से बच निकलने की तरकीबें सोचा करते थे।"

1. तुम्हारे विचार से वे कौन-कौन सी तरकीबें सोचते होंगे?
2. कौन-सी तरकीब से उनकी इच्छा पूरी हो गई थी?
3. क्या तुम उन दोनों को इस तरकीब से भी अच्छी तरकीब सुझा सकती हो?

अधिकारों की बात

"...आज तो उनके सारे अधिकार छीने जा चुके हैं।''

1. अम्मी के अधिकार किसने छीन लिए थे?
2. क्या उन्हें अम्मी के अधिकार छीनने चाहिए थे?
3. उन्होंने अम्मी के कौन-कौन से अधिकार छीने होंगे?

बादशाहत

1. 'बादशाहत' क्या होती है? चर्चा करो।
2. तुम्हारे विचार से इस कहानी का नाम 'एक दिन की बादशाहत' क्यों रखा गया है? तुम भी अपने मन से सोचकर कहानी को कोई शीर्षक दो।
3. कहानी में उस दिन बच्चों को सारे बड़ों वाले काम करने पड़े थे। ऐसे में कौन एक दिन का असली 'बादशाह' बन गया था?

© NCERT not to be republished

तर माल

"रोज़ की तरह आज वह तर माल अपने लिए न रख सकती थी।"

1. कहानी में किन-किन चीज़ों को तर माल कहा गया है?
2. इन चीज़ों के अलावा और किन-किन चीज़ों को 'तर माल' कहा जा सकता है?
3. कुछ ऐसी चीज़ों के नाम भी बताओ, जो तुम्हें 'तर माल' नहीं लगतीं।
4. इन चीज़ों को तुम क्या नाम देना चाहोगी? सुझाओ।

मनपसंद कपड़े

"बिल्कुल इसी तरह तो वह आरिफ़ और सलीम से उनकी मनपसंद कमीज़ उतरवाकर निहायत बेकार कपड़े पहनने का हुक्म लगाया करती हैं।"

1. तुम्हें भी अपना कोई खास कपड़ा सबसे अच्छा लगता होगा। उस कपड़े के बारे में बताओ। वह तुम्हें सबसे अच्छा क्यों लगता है?
2. कौन-कौन सी चीजें तुम्हें बिल्कुल बेकार लगती हैं?

   (क) पहनने की चीज़ें ....

   (ख) खाने-पीने की चीज़ें ....

   (ग) करने के काम ....

   (घ) खेल ....

हल्का-भारी

(क) "इतनी भारी साड़ी क्यों पहनी?"

यहाँ पर 'भारी साड़ी' से क्या मतलब है?

- साड़ी का वज़न ज़्यादा था।
- साड़ी पर बड़े-बड़े नमूने बने हुए थे।
- साड़ी पर बेल-बूटों की कढ़ाई थी।

(ख) • भारी साड़ी • भारी अटैची • भारी काम • भारी बारिश

ऊपर 'भारी' विशेषण का चार अलग-अलग संज्ञाओं के साथ इस्तेमाल किया गया है। इन चारों में 'भारी' का अर्थ एक-सा नहीं है। इनमें क्या अंतर है?

(ग) 'भारी' की तरह हल्का का भी अलग-अलग अर्थों में इस्तेमाल करो।

© NCERT not to be republished

11 चावल की रोटियाँ

0525CH11

पात्र-परिचय

कोको	आठ साल का एक बर्मी लड़का, कुछ मोटा
नीनी	नौ साल का बर्मी लड़का, **कोको** का दोस्त
तिन सू	आठ साल का बर्मी लड़का, **कोको** का दोस्त
मिमि	सात साल की बर्मी लड़की, **कोको** की दोस्त
उ बा तुन	जनता की दुकान का प्रबंधक (इसका अभिनय कोई लंबे कद का लड़का नकली मूँछें और चश्मा लगाकर कर सकता है)

(एक सादा कमरा, दीवारों पर बाँस की चटाइयाँ। एक दीवार के सहारे रखी अलमारी। अलमारी के ऊपर एक रेडियो, चाय की केतली, कुछ कप और खाली गुलाबी फूलदान रखा है। कमरे के बीच फ़र्श पर एक चटाई बिछी है जिसके ऊपर कम ऊँचाई वाली गोल मेज़ रखी है। दो दरवाज़े। एक दरवाज़ा पीछे की ओर खुलता है और दूसरा एक किनारे की ओर। पंछियों के चहचहाने के साथ-साथ पर्दा उठता है। दूर कहीं मुर्गा बाँग देता है। कुत्ता भौंकता है। कहीं प्रार्थना की घंटियाँ बजती हैं। को को आता है, जम्हाई लेकर अपने को सीधा करता है।)

कोको माता-पिता धान लगाने खेतों में चले गए हैं। जब तक माँ खाना बनाने के लिए लौटकर नहीं आती मुझे घर की देखभाल करनी है। हूँ... ऊँ... ऊँ... देखता हूँ माँ ने नाश्ते में मेरे लिए क्या बनाकर रखा है।

© NCERT not to be republished

(वह अलमारी की तरफ़ जाता है और उसे खोलकर देखता है। एक तश्तरी निकालकर देखता है कि चावल की चार रोटियाँ हैं। वह होंठों पर जीभ फेरता है और मुस्कुराता है।)

कोको आहा... मज़ा आ गया। चावल की रोटियाँ। मेरी मनपसंद चीज़। *(वह पेट मलता हुआ रोटियों को मेज़ पर रखता है और बैठ जाता है।)*

कोको आज तो डट कर नाश्ता होगा। *(वह एक रोटी उठाकर मुँह में डालने लगता है, तभी कोई दरवाज़े पर दस्तक देता है।)*

नीनी कोको... ए कोको! दरवाज़ा खोलो। मैं हूँ नीनी।

कोको गजब हो गया। यह तो भुक्खड़ नीनी है। उसकी नज़र में रोटियाँ पड़ीं तो ज़रूर माँगेगा। मैं इन्हें छिपा देता हूँ।

नीनी दरवाज़ा खोलो कोको, तुम क्या कर रहे हो? इतनी देर लगा दी।

कोको मैं इन्हें कहाँ छिपाऊँ? कहाँ छिपाऊँ? *(रेडियो की तरफ़ देखकर)* मैं तश्तरी को रेडियो के पीछे छिपा दूँगा। *(ज़ोर से)* अभी आता हूँ नीनी... ज़रा रुको।

कोको आओ, नीनी। अंदर आ जाओ। *(नीनी अंदर आता है।)*

नीनी दरवाज़ा खोलने में इतनी देर क्यों लगाई?

कोको कुछ खास नहीं... मैंने अभी-अभी नाश्ता किया और मुँह धोने लगा था। बोलो, सुबह-सुबह कैसे आना हुआ?

नीनी क्या? यह मत कहना कि तुम भूल गए थे। परीक्षा के बारे में रेडियो पर खास सूचना आने वाली है।

कोको लेकिन तुम्हारे घर भी तो रेडियो है।

नीनी वह खराब है। इसीलिए सोचा तुम्हारे रेडियो पर सुनूँगा। *(नीनी गोल मेज़ के पास बैठ जाता है।)*

© NCERT not to be republished

नीनी रेडियो उठाकर यहीं ले आओ ताकि हम आराम से लेटे-लेटे सुन सकें।

कोको नीनी, हमारे रेडियो में भी कुछ खराबी है।

नीनी आओ, कोशिश करके देखें। मैं उठाकर ले आता हूँ।
(*नीनी अलमारी की तरफ़ जाने लगता है।*)

कोको नहीं, नहीं। नीनी, इसे मत छूना। छुओगे तो करंट लगेगा।
(*नीनी रुक जाता है।*)

नीनी मैंने तो इसे छू ही लिया था। भई, मैं वह खबर ज़रूर सुनना चाहता हूँ। तिन सू के घर जाता हूँ। तुम आओगे?

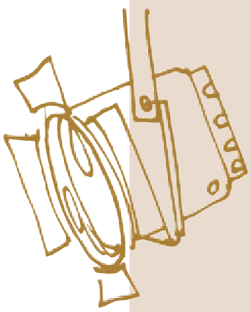

कोको नहीं। अच्छा, फिर मिलेंगे।
(*नीनी तेज़ी से बाहर निकल जाता है।*)

कोको (*गहरी साँस लेकर*) बाल-बाल बचे। अब चलकर नाश्ता किया जाए। मेरे पेट में चूहे दौड़ने लगे हैं।
(*कोको तश्तरी उठाकर मेज़ के पास आता है। एक रोटी उठाकर खाने लगता है, तभी दरवाज़े पर दस्तक सुनाई देती है।*)

कोको (*तश्तरी नीचे रखकर*) जाने अब कौन आ टपका।

मिमि कोको, दरवाज़ा खोलो। मैं हूँ मिमि।

कोको बाप रे। यह तो मिमि है। उसे चावल की रोटियाँ मेरी ही तरह बहुत अच्छी लगती हैं। और वह हमेशा भूखी होती है। मुझे रोटियाँ छिपा देनी चाहिए। लेकिन कहाँ? वह तो कुछ खाने की चीज़ ढूँढ़ने के लिए सारे कमरे की तलाशी लेगी।

मिमि (*फिर दरवाज़ा खटखटाकर*) कोको, दरवाज़ा खोलो न... इतनी देर क्यों लगा रहे हो?

© NCERT not to be republished

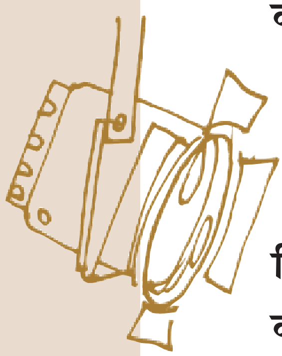

कोको कहाँ छिपाऊँ? कहाँ छिपाऊँ? (*कमरे के चारों तरफ़ देखकर*) ठीक, इस फूलदान के अंदर छिपा दूँ।

(*कोको फूलदान में तश्तरी रखकर दरवाज़ा खोलता है। मिमि कागज़ में लिपटा बंडल उठाए कमरे में आती है।*)

मिमि दरवाज़ा खोलने में इतनी देर क्यों कर दी?

कोको मैंने अभी-अभी नाश्ता किया था और मुँह धोने लगा था। आओ बैठो।

(*कोको और मिमि मेज़ के इर्द-गिर्द बैठते हैं।*)

मिमि मुझे अभी-अभी तुम्हारे माता-पिता मिले। तुम्हारी माताजी ने कहा कि तुम्हारे लिए चावल की कुछ रोटियाँ रखी हैं। मैंने सोचा...

कोको चावल की रोटियाँ? हाँ थीं तो। लेकिन मैंने सब खा लीं।

मिमि एक भी नहीं बची?

कोको सॉरी मिमि, मैंने सब खा लीं। (*हाथ से पेट को मलते हुए*) पेट एकदम भर गया है। लगता है आज तो दोपहर का खाना भी नहीं खाया जाएगा।

मिमि बहुत बुरी बात। मेरी माँ ने केले के पापड़ बनाए थे। मैंने सोचा तुम्हारे साथ बाँटकर खाऊँगी। मैं चार पापड़ लाई हूँ। दो तुम्हारे लिए, दो अपने लिए। सोचा था तुम्हारी चावल की रोटियाँ और मोटे पापड़, दोनों का बढ़िया नाश्ता रहेगा।

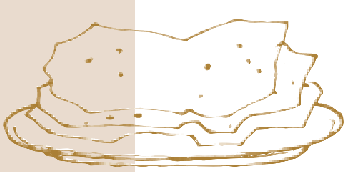

(*मिमि कागज़ का बंडल खोलती है और पापड़ निकालती है। वह उन्हें एक तश्तरी में डालकर मेज़ पर रखती है।*)

मिमि गरमागरम हैं और स्वादिष्ट भी। तुम्हारी भी क्या बदकिस्मती है कि तुम्हारा पेट बिल्कुल भरा हुआ है और तुम कुछ भी नहीं खा सकते।

कोको (*पापड़ देखकर होठों पर जीभ फेरकर, स्वगत*) मैंने बड़ी गलती की जो उसे बताया कि मेरा पेट भरा हुआ है। लेकिन मैं समझता हूँ कि वह चारों पापड़ तो खा नहीं सकती। शायद दो मेरे लिए छोड़ जाए।

मिमि (*एक पापड़ उठाकर*) क्या इन्हें निगलने के लिए चाय है?

© NCERT not to be republished

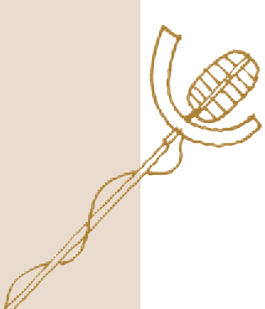

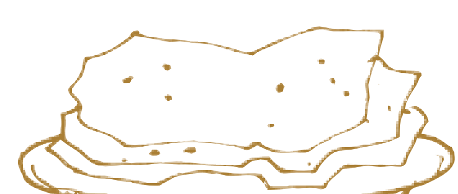

को को हाँ, हाँ, अलमारी पर है। मैं ले आता हूँ।
(*कोको चाय की केतली और दो कप उठा लाता है। मिमि एक कप में चाय डालती है।*)

मिमि तुम तो चाय पिओगे नहीं। पेट भरा होगा।

कोको (*स्वगत*) मेरा पेट भूख से गुड़गुड़ कर रहा है। भगवान करे मिमि को यह गुड़गुड़ न सुनाई दे।

मिमि (*पापड़ खाते हुए*) यह कैसी आवाज़ है?

कोको आवाज़? कैसी आवाज़?

मिमि हल्की-सी गड़गड़ाने की आवाज़। यह फिर हुई। सुना तुमने?

कोको यह...? हमारे घर में चूहा घुस आया है। वही यह आवाज़ करता है।
(*दरवाज़े पर दस्तक*)

कोको कौन?

तिन सू मैं हूँ तिन सू।
(*कोको उठने लगता है।*)

मिमि तुम बैठे रहो। आराम करो। तुम्हारा पेट बहुत भरा हुआ है। मैं खोलती हूँ।
(*मिमि दरवाज़ा खोलती है। तिन सू गेंदे के फूलों का गुच्छा लिए आता है।*)

तिन सू आहा! मिमि भी यहाँ है।

मिमि आओ तिन सू।

तिन सू (*मेज़ के पास जाकर*) हैलो कोको। क्या बात है? तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है क्या?

कोको हैलो तिन सू।
(*मिमि और तिन सू मेज़ के पास बैठते हैं।*)

© NCERT not to be republished

मिमि (*तिन सू से*) वह ठीक हैं। बस, नाश्ते में चावल की रोटियाँ ज़्यादा खा ली हैं।

तिन सू (*केले के पापड़ों की तरफ़ देखकर*) आहा, केले के पापड़!

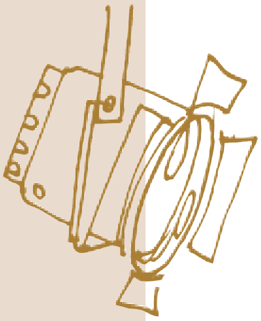

मिमि मैं कोको के लिए भी ले आई थी। लेकिन चूँकि उसका पेट एकदम भरा हुआ है, तुम इन्हें खत्म करने में मेरी मदद करो।

तिन सू नेकी और पूछ-पूछ? तुम्हारी माँ गाँव में सबसे बढ़िया पापड़ बनाती है।

(*तिन सू एक पापड़ उठाकर खाने लगता है। मिमि उसके लिए कप में चाय डालती है।*)

मिमि (*कप देकर*) यह लो चाय के साथ खाओ।

तिन सू (*चाय की चुस्की लेकर होंठों पर जीभ फिराकर*) बहुत बढ़िया चाय है। मेरी खुशकिस्मती जो इस वक्त यहाँ आ गया।

कोको (*स्वगत*) तुम्हारी खुशकिस्मती और मेरी बदकिस्मती।

(*मिमि और तिन सू एक-एक पापड़ खा लेते हैं और मिमि दूसरा उठाती है।*)

मिमि यह लो तिन सू। एक और खाओ।

तिन सू नहीं, मेरे लिए तो एक ही काफ़ी है।

मिमि आधा तो ले लो। दूसरा आधा मैं खा लूँगी। एक कोको के लिए रहा। शाम को खा लेगा।

तिन सू तुम ज़ोर डालती हो तो ले लेता हूँ।

कोको (*स्वगत*) चलो, एक तो मेरे लिए छोड़ रहे हैं। मैं भूख से मरा जा रहा हूँ।

तिन सू यह आवाज़ कैसी है?

मिमि यहाँ एक बड़ा चूहा घुस आया है। कोको कहता है, वही यह आवाज़ करता है।

तिन सू ऐसा लगा कि किसी का पेट भूख से गुड़गुड़ा रहा है।

(*तिन सू और मिमि पापड़ खत्म करते हैं*)

मिमि अच्छा, ये फूल कैसे हैं?

तिन सू ओह! मैं तो भूल ही गया था। मेरी माँ ने कहा है कि कोको की माँ ने कल दुकान से एक फूलदान खरीदा था। उन्होंने ये फूल उस फूलदान में रखने के लिए भेजे हैं। (*इधर-उधर देखता है। उसे*

© NCERT not to be republished

अलमारी के ऊपर फूलदान दिखाई देता है।) वह रहा फूलदान, अलमारी पर।

मिमि मुझे दो। मैं इन्हें फूलदान में रख आती हूँ।

(*तिन सू उसके हाथ में फूल देता है। वह उठने लगती है।*)

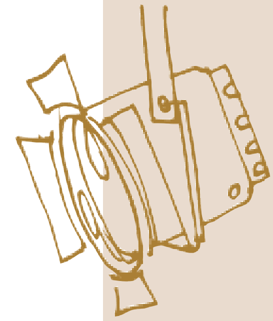

कोको नहीं, नहीं, मिमि।

मिमि तुमने तो मुझे डरा ही दिया। क्या बात है?

कोको ये फूल... ये फूल। मेरी माँ को इस फूल से एलर्जी है। जब भी वह यह फूल देखती हैं उनके जिस्म में फुँसियाँ निकल आती हैं।

तिन सू ओह, मुझे इस बात का पता नहीं था। खैर मैं इन फूलों को वापस ले जाऊँगा।

कोको (*चैन की साँस लेकर, स्वगत*) मुझे अपनी रोटियों को बचाने के लिए कितने झूठ बोलने पड़ेंगे।

(*दरवाज़े पर दस्तक*)

कोको कौन?

उ बा तुन मैं हूँ। दुकान का मैनेजर उ बा तुन।

मिमि (*कोको से*) तुम मत उठो को को। मैं खोलती हूँ दरवाज़ा। (*ज़ोर से*) अभी आई उ बा तुन चाचा।

(*उ बा तुन नीला फूलदान लिए आता है*)

उ बा तुन हैलो बच्चो (*मेज़ की तरफ़ देखकर*) लगता है छोटी-मोटी पार्टी चल रही है।

मिमि आओ चाचा, आओ।

(*उ बा तुन मेज़ के पास बैठ जाता है*)

मिमि चाय लेंगे आप?

उ बा तुन कोई एतराज़ नहीं। बहुत-बहुत शुक्रिया!

(*मिमि अलमारी की तरफ़ जाकर कप ले आती है और चाय डालकर उ बा तुन को देती है।*)

उ बा तुन (*कप से चुस्की लेकर*) क्या मज़ेदार चाय है। खुशबूदार ताज़गी लाने वाली।

तिन सू चाचा, आपने नाश्ता कर लिया है?

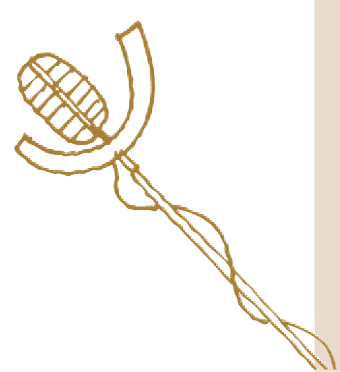

© NCERT not to be republished

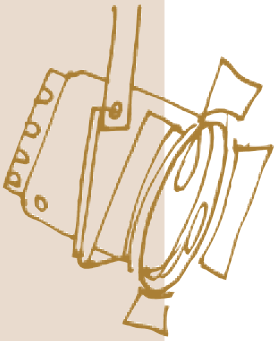

उ बा तुन अभी किया नहीं। मैं सोच रहा था, किसी चाय की दुकान पर रुककर कर लूँगा।

मिमि चाय की दुकान पर जाने की क्या ज़रूरत? आप यह पापड़ ले सकते हैं।

उ बा तुन लेकिन... मैं तुममें से किसी का हिस्सा नहीं मारना चाहता।

तिन सू कोई बात नहीं चाचा। हम सबके पेट तो भर गए हैं। (*उँगली से गले को छूता है।*)

उ बा तुन बहुत-बहुत शुक्रिया। अरे, यह आवाज़ कैसी है?

तिन सू यह चूहे की आवाज़ है। अक्सर यह आवाज़ करता है।

उ बा तुन मुझे लगा किसी का पेट भूख से कुलबुला रहा है। (*उ बा तुन पापड़ उठाकर खाने लगता है।*)

उ बा तुन कोको, तुम आज बहुत चुप हो। तबियत तो ठीक है?

कोको कुछ नहीं चाचा। मैं बिल्कुल ठीक हूँ।

मिमि उसका पेट बहुत भरा हुआ है। नाश्ता बहुत डटकर किया है। (*उ बा तुन पापड़ खत्म करके हाथ से मुँह पोंछता है।*)

उ बा तुन कोको, तुम्हारी माँ हमारी दुकान से एक फूलदान लाई थीं (*इधर-उधर देखकर*) हाँ, वह रहा।

कोको क्यों? फूलदान का क्या करना है?

उ बा तुन तुम्हारी माँ ने नीला फूलदान माँगा था। उस वक्त मेरे पास वह रंग नहीं था, इसलिए वह गुलाबी ही ले आईं। उनके जाने के बाद मुझे एक नीला फूलदान मिल गया। मैं उसे बदलने आया हूँ। (*उ बा तुन अलमारी के पास जाकर गुलाबी फूलदान उठा लेता है और उसकी जगह नीला फूलदान रख देता है।*)

उ बा तुन (*कोको से*) मुझे यकीन है, तुम्हारी माँ नीला फूलदान देखेंगी तो बहुत खुश होंगी। अब मैं चलूँगा। शुक्रिया और गुडबाई।

मिमि-तिन सू गुडबाई चाचा।

कोको गुडबाई चाचा। (*स्वगत*) और गुडबाई मेरी चावल की रोटियो!

पी.औंग खिन

अनुवाद-मस्तराम कपूर

© NCERT not to be republished

मंच और मंचन

एक सादा कमरा, दीवारों पर बाँस की चटाइयाँ। एक दीवार के सहारे रखी अलमारी। अलमारी के ऊपर एक रेडियो, चाय की केतली, कुछ कप और खाली गुलाबी फूलदान रखा है। कमरे के बीच फ़र्श पर एक चटाई बिछी है जिसके ऊपर कम ऊँचाई वाली गोल मेज़ रखी है। दो दरवाज़े। एक दरवाज़ा पीछे की ओर खुलता है और दूसरा एक किनारे की ओर। पंछियों के चहचहाने के साथ-साथ पर्दा उठता है। दूर कहीं मुर्गा बाँग देता है।

ऊपर लिखी पंक्तियों में कोको के घर के एक कमरे का वर्णन किया गया है। दरअसल नाटक के लिए मंच सज्जा कैसी हो यह निर्देश उसके लिए है। तुम इस वर्णन को पढ़कर उस मंच का एक चित्र बनाओ जो ठीक वैसा ही होना चाहिए जैसा कि बताया गया है।

नाटक की बात

1. नाटक में हिस्सा लेने वालों को पात्र कहते हैं। जिन पात्रों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है उन्हें 'मुख्य पात्र' और जिनकी भूमिका ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं होती है उन्हें 'गौण पात्र' कहते हैं। बताओ इस नाटक में कौन-कौन मुख्य और गौण पात्र कौन हैं?
2. पात्रों को जो बात बोलनी होती है उसे संवाद कहते हैं। क्या तुम किसी एक परिस्थिति के लिए संवाद लिख सकती हो? (इसके लिए तुम टोलियों में भी काम कर सकती हो।) उदाहरण के लिए खो-खो या कबड्डी जैसा कोई खेल खेलते समय दूसरे दल के खिलाड़ियों से बहस।
3. क्या आपने कभी कोई चीज़ या बात दूसरों से छिपाई है या छिपाने की कोशिश की है? उस समय क्या-क्या हुआ था?
4. कहते हैं, एक झूठ बोलने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं। क्या तुम्हें कहानी पढ़कर ऐसा लगता है? कहानी की मदद से इस बात को समझाओ।

© NCERT not to be republished

एक चावल कई-कई रूप

1. कोको की माँ ने उसके लिए चावल की रोटियाँ बनाकर रखी थीं। भारत के विभिन्न प्रांतों में चावल अलग-अलग तरीके से इस्तेमाल किया जाता है-भोजन के हिस्से के रूप में भी और नमकीन और मीठे पकवान के रूप में भी। तुम्हारे प्रांत में चावल का इस्तेमाल कैसे होता है? घर में बातचीत करके पता करो और एक तालिका बनाओ। कक्षा में अपने दोस्तों की तालिका के साथ मिलान करो तो पाओगी कि भाषा, कपड़ों और रहन-सहन के साथ-साथ खान-पान की दृष्टि से भी भारत अनूठा है।
2. अपनी तालिका में से चावल से बनी कोई एक खाने की चीज़ बनाने की विधि पता करो और उसे नीचे दिए गए बिंदुओं के हिसाब से लिखो।
   - सामग्री
   - तैयारी
   - विधि
3. "कोको के माता-पिता धान लगाने के लिए खेतों में गए।"
   "कोको की माँ ने उसके लिए चावल की रोटियाँ बनाईं।"
   एक ही चीज़ के विभिन्न रूपों के अलग-अलग नाम हो सकते हैं। नीचे ऐसे कुछ शब्द दिए गए हैं। उनमें अंतर बताओ।
   चावल - धान - भात - मुरमुरा - चिउड़ा
   साबुत दाल - धुली दाल - छिलका दाल
   गेहूँ - दलिया - आटा - मैदा - सूजी

के, में, ने, को, से...

"कोको की माँ ने कल दुकान से एक फूलदान खरीदा था।"

ऊपर लिखे वाक्य में जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है वे वाक्य में शब्दों का आपस में संबंध बताते हैं। नीचे एक मज़ेदार किताब "अनारको के आठ दिन" का एक अंश दिया गया है। उसके खाली स्थानों में इस प्रकार के सही शब्द लिखो।

अनारको एक लड़की है। घर .... लोग उसे अन्नो कहते हैं। अन्नो नाम छोटा जो है, सो उस .... हुक्म चलाना आसान होता है। अन्नो, पानी ले आ, अन्नो धूप में मत जाना, अन्नो बाहर अँधेरा है-कहीं मत जा, बारिश .... भीगना मत, अन्नो! और कोई बाहर .... घर में आए तो घरवाले कहेंगे-ये हमारी अनारको है, प्यार से हम इसे अन्नो कहते हैं। प्यार .... हुँ-ह-ह !

आज अनारको सुबह सोकर उठी तो हाँफ रही थी। रात सपने .... बहुत बारिश हुई। अनारको .... याद किया और उसे लगा, आज .... सपने में जितनी बारिश हुई उतनी तो पहले के सपनों .... कभी नहीं हुई। कभी नहीं। जमके बारिश हुई थी आज .... सपने .... और जमकर उसमें भीगी थी अनारको। खूब उछली थी, कूदी थी, चारों तरफ़ पानी छिटकाया था और खूब-खूब भीगी थी।

2020-21

12

गुरु और चेला

गुरु एक थे और था एक चेला,
चले घूमने पास में था न धेला।
चले चलते-चलते मिली एक नगरी,
चमाचम थी सड़कें चमाचम थी डगरी।

मिली एक ग्वालिन धरे शीश गगरी,
गुरु ने कहा तेज़ ग्वालिन न भग री।
बता कौन नगरी, बता कौन राजा,
कि जिसके सुयश का यहाँ बजता बाजा।

कहा बढ़के ग्वालिन ने महाराज पंडित,
पधारे भले हो यहाँ आज पंडित।
यह अंधेर नगरी है अनबूझ राजा,
टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

गुरु ने कहा-जान देना नहीं है,
मुसीबत मुझे मोल लेना नहीं है।
न जाने की अंधेर हो कौन छन में?
यहाँ ठीक रहना समझता न मन में।

गुरु ने कहा किंतु चेला न माना,
गुरु को विवश हो पड़ा लौट जाना।
गुरुजी गए, रह गया किंतु चेला,
यही सोचता हूँगा मोटा अकेला।

© NCERT not to be republished

चला हाट को देखने आज चेला,
तो देखा वहाँ पर अजब रेल-पेला।
टके सेर हल्दी, टके सेर जीरा,
टके सेर ककड़ी टके सेर खीरा।

टके सेर मिलती थी रबड़ी मलाई,
बहुत रोज़ उसने मलाई उड़ाई।
सुनो और आगे का फिर हाल ताज़ा।
थी अंधेर नगरी, था अनबूझ राजा।

बरसता था पानी, चमकती थी बिजली,
थी बरसात आई, दमकती थी बिजली।
गरजते थे बादल, झमकती थी बिजली,
थी बरसात गहरी, धमकती थी बिजली।

गिरी राज्य की एक दीवार भारी,
जहाँ राजा पहुँचे तुरत ले सवारी।
झपट संतरी को डपट कर बुलाया,
गिरी क्यों यह दीवार, किसने गिराया?

कहा संतरी ने—महाराज साहब,
न इसमें खता मेरी, ना मेरा करतब!
यह दीवार कमज़ोर पहले बनी थी,
इसी से गिरी, यह न मोटी घनी थी।

© NCERT not to be republished

खता कारीगर की महाराज साहब,
न इसमें खता मेरी, या मेरा करतब!
बुलाया गया, कारीगर झट वहाँ पर,
बिठाया गया, कारीगर झट वहाँ पर।

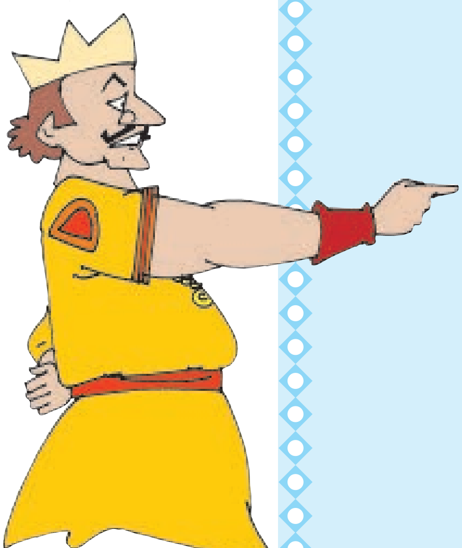

कहा राजा ने–कारीगर को सज़ा दो,
खता इसकी है आज इसको कज़ा दो।
कहा कारीगर ने, ज़रा की न देरी,
महाराज! इसमें खता कुछ न मेरी।

यह भिश्ती की गलती यह उसकी शरारत,
किया गारा गीला उसी की यह गफ़लत।
कहा राजा ने–जल्द भिश्ती बुलाओ।
पकड़ कर उसे जल्द फाँसी चढ़ाओ।

चला आया भिश्ती, हुई कुछ न देरी,
कहा उसने–इसमें खता कुछ न मेरी।
यह गलती है जिसने मशक को बनाया,
कि ज़्यादा ही जिसमें था पानी समाया।

मशकवाला आया, हुई कुछ न देरी,
कहा उसने इसमें खता कुछ न मेरी।
यह मंत्री की गलती, है मंत्री की गफ़लत,
उन्हीं की शरारत, उन्हीं की है हिकमत।

© NCERT not to be republished

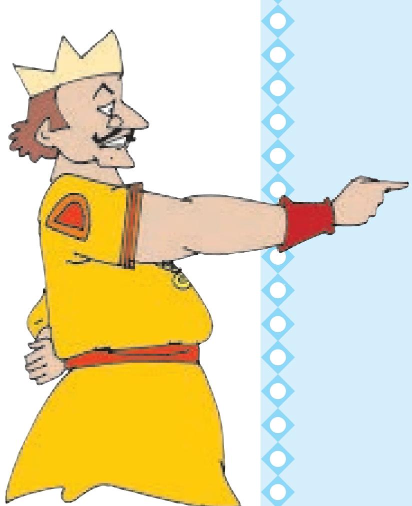

बड़े जानवर का था चमड़ा दिलाया,
चुराया न चमड़ा मशक को बनाया।
बड़ी है मशक खूब भरता है पानी,
ये गलती न मेरी, यह गलती बिरानी।

है मंत्री की गलती तो मंत्री को लाओ,
हुआ हुक्म मंत्री को फाँसी चढ़ाओ।
चले मंत्री को लेके जल्लाद फ़ौरन,
चढ़ाने को फाँसी उसी दम उसी क्षण।

मगर मंत्री था इतना दुबला दिखाता,
न गर्दन में फाँसी का फंदा था आता।
कहा राजा ने जिसकी मोटी हो गर्दन,
पकड़ कर उसे फाँसी दो तुम इसी क्षण।

चले संतरी ढूँढ़ने मोटी गर्दन,
मिला चेला खाता था हलुआ दनादन।
कहा संतरी ने चलें आप फ़ौरन,
महाराज ने भेजा न्यौता इसी क्षण।

बहुत मन में खुश हो चला आज चेला,
कहा आज न्यौता छकूँगा अकेला!!
मगर आके पहुँचा तो देखा झमेला,
वहाँ तो जुड़ा था अजब एक मेला।

© NCERT not to be republished

यह मोटी है गर्दन, इसे तुम बढ़ाओ,
कहा राजा ने इसको फाँसी चढ़ाओ!
कहा चेले ने–कुछ खता तो बताओ,
कहा राजा ने–'चुप' न बकबक मचाओ।

मगर था न बुद्धू–था चालाक चेला,
मचाया बड़ा ही वहीं पर झमेला!!
कहा पहले गुरु जी के दर्शन कराओ,
मुझे बाद में चाहे फाँसी चढ़ाओ।

गुरुजी बुलाए गए झट वहाँ पर,
कि रोता था चेला खड़ा था जहाँ पर।
गुरु जी ने चेले को आकर बुलाया,
तुरत कान में मंत्र कुछ गुनगुनाया।

झगड़ने लगे फिर गुरु और चेला,
मचा उनमें धक्का बड़ा रेल-पेला।
गुरु ने कहा–फाँसी पर मैं चढ़ूँगा,
कहा चेले ने–फाँसी पर मैं मरूँगा।

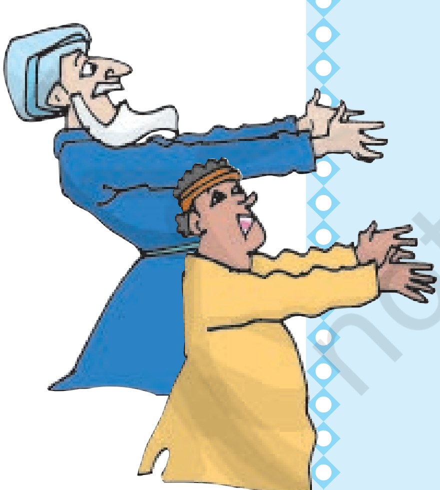

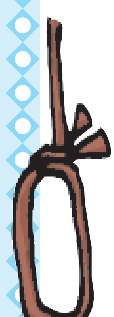

हटाए न हटते अड़े ऐसे दोनों,
छुटाए न छुटते लड़े ऐसे दोनों।
बढ़े राजा फ़ौरन कहा बात क्या है?
गुरु ने बताया करामात क्या है।

© NCERT not to be republished

चढ़ेगा जो फाँसी महूरत है ऐसी,
न ऐसी महूरत बनी बढ़िया जैसी।
वह राजा नहीं, चक्रवर्ती बनेगा,
यह संसार का छत्र उस पर तनेगा।

कहा राजा ने बात सच गर यही
गुरु का कथन, झूठ होता नहीं है
कहा राजा ने फाँसी पर मैं चढ़ूँगा
इसी दम फाँसी पर मैं ही टँगूँगा।

चढ़ा फाँसी राजा बजा खूब बाजा
प्रजा खुश हुई जब मरा मूर्ख राजा
बजा खूब घर-घर बधाई का बाजा।
थी अंधेर नगरी, था अनबूझ राजा

सोहन लाल द्विवेदी

© NCERT
be republished

टके की बात

1. टका पुराने ज़माने का **सिक्का** था। अगर आजकल सब चीज़ें एक रुपया किलो मिलने लगें तो उससे किस तरह के फ़ायदे और नुकसान होंगे?
2. भारत में कोई चीज़ खरीदने-बेचने के लिए 'रुपये' का इस्तेमाल होता है और बांग्लादेश में 'टके' का। 'रुपया' और 'टका' क्रमशः भारत और बांग्लादेश की मुद्राएँ हैं। नीचे लिखे देशों की मुद्राएँ कौन-सी हैं?

   सऊदी अरब   जापान   फ्रांस   इटली   इंग्लैंड

कविता की कहानी

1. इस कविता की कहानी अपने शब्दों में लिखो।
2. क्या तुमने कोई और ऐसी कहानी या कविता पढ़ी है जिसमें सूझबूझ से बिगड़ा काम बना हो, उसे अपनी कक्षा में सुनाओ।
3. कविता को ध्यान से पढ़कर 'अंधेर नगरी' के बारे में कुछ वाक्य लिखो।
   (सड़कें, बाज़ार, राजा का राजकाज)
4. क्या ऐसे देश को 'अंधेर नगरी' कहना ठीक है? अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

कविता की बात

1. "प्रजा खुश हुई जब मरा मूर्ख राजा।"

   (क) अँधेर नगरी की प्रजा राजा के मरने पर खुश क्यों हुई?

   (ख) यदि वे राजा से परेशान थे तो उन्होंने उसे खुद क्यों नहीं हटाया? आपस में चर्चा करो।
2. *"गुरु का कथन, झूठ होता नहीं है।"*

   (1) गुरुजी ने क्या बात कही थी?

   (2) राजा यह बात सुनकर फाँसी पर लटक गया। तुम्हारे विचार से गुरुजी ने जो बात कही, क्या वह सच थी?

   (3) गुरुजी ने यह बात कहकर सही किया या गलत? आपस में चर्चा करो।

© NCERT not to be republished

अलग तरह से

- अगर कविता ऐसे शुरु हो तो आगे किस तरह बढ़ेगी?
  थी बिजली और उसकी सहेली थी बदली
  ....
  ....
  ....
  ....

क्या होता यदि ...

1. मंत्री की गर्दन फँदे के बराबर की होती?
2. राजा गुरुजी की बातों में न आता?
3. अगर संतरी कहता कि "दीवार इसीलिए गिरी क्योंकि पोली थी" तो महाराज किस-किस को बुलाते? आगे क्या होता?

शब्दों की छानबीन

1. नीचे लिखे वाक्य पढ़ो। जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है, उन्हें आजकल कैसे लिखते हैं, यह भी बताओ।

   (क) न जाने की अंधेर हो कौन छन में!

   (ख) गुरु ने कहा तेज़ ग्वालिन न भग री!

   (ग) इसी से गिरी, यह न मोटी घनी थी!

   (घ) ये गलती न मेरी, यह गलती बिरानी!

   (ङ) न ऐसी महूरत बनी बढ़िया जैसी

2. चमाचम थी सड़कें ... इस पंक्ति में 'चमाचम' शब्द आया है। नीचे लिखे शब्दों को पढ़ो और दिए गए वाक्यों में ये शब्द भरो–

   पटापट   चकाचक   फटाफट   चटाचट   झकाझक   खटाखट   चटपट

   - आँधी के कारण पेड़ से .... फल गिर रहे हैं।
   - हंसा अपना सारा काम .... कर लेती है।
   - आज रहमान ने .... सफ़ेद कुर्ता पाजामा पहना है।
   - उस भुक्खड़ ने .... सारे लड्डू खा डाले।
   - सारे बर्तन धुलकर .... हो गए।

© NCERT not to be republished

बिना जड़ का पेड़

राजा के दरबार में एक व्यापारी संदूक के साथ पहुँचा। उसने गर्व से कहा, 'महाराज, मैं व्यापारी हूँ और बिना बीज एवं पानी के पेड़ उगाता हूँ। आपके लिए मैं एक अद्भुत उपहार लाया हूँ, लेकिन आपके दरबार में एक-से-एक ज्ञानी-ध्यानी हैं, इसलिए पहले मुझे कोई यह बताए कि इस संदूक में क्या है? अगर बता देगा तो आपके यहाँ चाकरी करने को तैयार हूँ।'

सभासद पंडितों, पुरोहितों और ज्योतिषियों की ओर देखने लगे, लेकिन उन लोगों ने सिर झुका लिए।

सभा में गोनू झा भी उपस्थित थे। उन्हें उसकी चुनौती स्वीकार करना आवश्यक लगा, अन्यथा दरबार की जग-हँसाई होती। गोनू झा ने विश्वासपूर्वक कहा, 'मैं बता सकता हूँ कि संदूक में क्या है, लेकिन इसके लिए मुझे रातभर का समय चाहिए और व्यापारी को संदूक के साथ मेरे यहाँ ठहरना होगा। संदूक बदला न जाए, इसकी निगरानी के लिए हम रातभर जगे रहेंगे और व्यापारी चाहे तो पहरेदार भी रखवा सकते हैं।'

सभी मान गए और व्यापारी गोनू झा के यहाँ चला गया।

रातभर दोनों संदूक की रखवाली करते रहे। रात काटनी थी, इसलिए किस्सा-कहानी भी चलती रही। बातचीत के क्रम में व्यापारी ने कहा, ''मैं बिना बीज-पानी के पेड़ उगा सकता हूँ।'' गोनू झा ने कहा, 'भाई, कुछ दिन पूर्व मुझे एक व्यापारी मिला था, उसने भी यही कहा था कि बिना बीज-पानी के पेड़ उगाता हूँ। पेड़ों में भाँति-भाँति के फूल खिलते हैं, वह भी रात में। क्या आप भी रात में पेड़ उगाकर भाँति-भाँति के फूल खिला सकते हैं?'

उसने अहंकार से कहा, 'क्यों नहीं! मेरे पेड़ रात में ही अच्छे लगते हैं और उनके रंग-बिरंगे फूल देखते ही बनते हैं।'

यह सुनते ही गोनू झा की आँखों में चमक आ गई और वे निश्चिंत हो गए।

दूसरे दिन दोनों दरबार में उपस्थित हुए। गोनू झा ने जेब से कुछ आतिशबाजी निकालकर छोड़ी।

© NCERT not to be republished

सभासद झुँझला गए। महाराज की भी आँखें लाल-पीली हो गईं और कहा, 'गोनू झा, यह क्या बेवक्त की शहनाई बजा दी! सभा का सामान्य शिष्टाचार भी भूल गए?'

गोनू झा ने वातावरण को सहज करते हुए कहा, 'महाराज, सर्वप्रथम धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हूँ, लेकिन यह मेरी मजबूरी थी। इसी में व्यापारी भाई के रहस्यमय प्रश्न का उत्तर छुपा है। इसमें ही बिना जड़ के भाँति-भाँति के रंगों में फूल खिलते हैं।'

व्यापारी अवाक् रह गया। उसने सहमते हुए कहा, 'महाराज, इन्होंने मेरे गूढ़ प्रश्न का उत्तर दे दिया।' फिर उसने विस्मयपूर्वक गोनू झा से पूछा, 'आपने कैसे जाना कि इसमें आतिशबाज़ी ही है?'

गोनू झा ने सहजता से कहा, 'व्यापारी, जब आपने यह कहा कि बिना बीज-पानी के पेड़ उगते हैं और उनमें भाँति-भाँति के फूल खिलते हैं, तब तक तो मुझे संदेह रहा, परंतु मेरे पूछने पर यह कहा कि रात ही में आपकी यह फ़सल अच्छी लगती है, तब ज़रा भी संशय नहीं रहा कि इसमें आतिशबाजी छोड़ कुछ अन्य सामान नहीं होगा।'

व्यापारी मायूस हो गया। राजा ने कहा, 'व्यापारी, आपको दुखी होने की ज़रूरत नहीं है। आप यहाँ रहने के लिए स्वतंत्र हैं, पर अपना कमाल रात में दिखाकर लोगों का मनोरंजन कीजिएगा। अगर प्रदर्शन प्रशंसनीय रहा तो पुरस्कार भी पाइएगा, पर अभी पुरस्कार के हकदार गोनू झा ही हैं।'

वीरेंद्र झा

© NCERT not to be republished

13 स्वामी की दादी

बैठक और भोजन-कक्ष के बीच, कम हवादार अँधेरे गलियारे की बंद-सी कोठरी में स्वामीनाथन की दादी अपने सारे सामान के साथ रहती थीं। उनका सामान था—पाँच दरियों, तीन चादरों, पाँच तकियों वाला भारी-भरकम बिस्तर, पटसन के रेशे का बना एक वर्गाकार बक्सा और लकड़ी का एक छोटा बक्सा जिसमें ताँबे के सिक्के, इलायची, लौंग और सुपारी पड़े रहते थे।

रात के भोजन के बाद स्वामीनाथन दादी के पास उनकी गोद में सिर रखे लौंग, इलायची की गंध भरे वातावरण में अपने को बहुत प्रसन्न और सुरक्षित महसूस कर रहा था।

बड़ी प्रसन्नता से भरकर वह बोला, "ओह दादी! तुम नहीं जानती, राजम कितनी ऊँची चीज़ है।" उसने दादी को राजम और मणि की पहले दुश्मनी और फिर दोस्ती की कहानी कह सुनाई।

"तुम्हें पता है उसके पास सचमुच की पुलिस की वर्दी है," स्वामीनाथन बोला।

"सच ...? उसे पुलिस की वर्दी क्यों चाहिए?" दादी ने पूछा।

"उसके पिता पुलिस अधीक्षक हैं। वह यहाँ की पुलिस के सबसे बड़े अफ़सर हैं।" दादी काफ़ी प्रभावित हुईं। "उनका सच में काफ़ी बड़ा दफ़्तर होगा।" उन्होंने कहा। फिर उन्होंने उन दिनों की कहानी सुनानी शुरू की जब स्वामीनाथन के दादा रौबदार सब-मजिस्ट्रेट थे, जिनके दफ़्तर में पुलिसवाले काँपते हुए खड़े रहते थे। उनसे डरकर खूँखार से खूँखार डाकू तक भाग खड़े होते थे। स्वामीनाथन अधीर होकर उनकी कहानी खत्म होने का इंतज़ार करने लगा लेकिन दादी बोलती ही गईं, इधर-उधर भटकती हुई और अलग-अलग समय पर घटी घटनाओं को गड्डमड्ड करती हुई।

© NCERT not to be republished

"बस काफ़ी है दादी" उसने रूखे स्वर में कहा, "मैं तुम्हें राजम के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ। जानती हो, उसे गणित में कितने नंबर मिलते हैं?"

"सारे नंबर मिलते होंगे। है न?" दादी ने पूछा।

"अरे नहीं, उसे सौ में से नब्बे मिलते हैं।"

"चलो अच्छा है लेकिन तुम्हें भी मेहनत करके उसकी तरह नंबर लेने चाहिए... तुम्हें पता है तुम्हारे दादा कभी-कभी ऐसे उत्तर लिखते थे कि परीक्षकों को भी चकित कर देते थे। किसी सवाल का जवाब देने में वे दूसरों के मुकाबले दसवाँ हिस्सा वक्त लेते थे। और फिर उनके जवाब इतने शानदार होते थे कि कभी-कभी उनके अध्यापक उन्हें दो सौ नंबर तक दे देते थे।... जब उन्होंने एम.ए. किया तो उन्हें इतना बड़ा मैडल मिला था। मैं कई सालों तक उसे गले में पहनती रही। पता नहीं, मैंने कब उसे उतारा ...। हाँ, जब तुम्हारी बुआ पैदा हुई ...। नहीं, तुम्हारी बुआ नहीं, तुम्हारे पिता। याद आया, तब बच्चा दस दिन का था। अरे नहीं, मैंने पहले ठीक कहा था। तुम्हारी बुआ ही पैदा हुई थीं। पता है, वह मैडल अब कहाँ है? मैंने वह तुम्हारी बुआ को दिया और उस बेवकूफ़ ने उसे गलवाकर चार चूड़ियाँ बनवा लीं। और वह भी इतनी मामूली-सी चूड़ियाँ कि...। मैं हमेशा कहती रही हूँ कि हमारे परिवार में उस जैसा महामूर्ख कोई नहीं, और...।"

"अब बस भी करो दादी! तुम बेकार की पुरानी कहानियाँ सुनाती रहती हो। क्या तुम राजम के बारे में नहीं सुनना चाहती?"

"हाँ, हाँ, बोलो।"

"दादी, जब राजम छोटा-सा लड़का था तो उसने शेर मारा था।"

"सच? बड़ा बहादुर लड़का है।"

"तुम यह बात मुझे खुश करने के लिए कह रही हो। तुम्हें यकीन नहीं हुआ होगा।" स्वामीनाथन ने बड़े उत्साह से कहानी शुरू की, "राजम के पिता एक जंगल में डेरा डाले हुए थे। राजम उनके साथ था। अचानक दो शेर उन पर झपटे और एक ने पीछे से हमला करके पिता को गिरा दिया। दूसरे ने राजम का पीछा

© NCERT not to be republished

किया। राजम एक झाड़ी के पीछे छुप गया और वहीं से गोली चलाकर शेर को मार डाला। दादी! क्या तुम सो गई?" उसने कहानी खत्म होने पर पूछा।

"नहीं बेटा, सुन रही हूँ।"

"अच्छा बताओ, कितने शेर आए थे?"

"दो शेर राजम पर झपटे थे।" दादी ने जवाब दिया।

स्वामीनाथन दादी के गलत जवाब से चिढ़ गया। "मैं तुम्हें इतनी ज़रूरी बातें बता रहा हूँ और तुम नींद में न जाने क्या-क्या ऊलजलूल कल्पना किए जा रही हो। अब मैं तुम्हें कुछ नहीं बताऊँगा। मैं जानता हूँ, तुम क्यों ऐसा कर रही हो। तुम राजम को पसंद नहीं करतीं।"

"नहीं, नहीं, वह तो बहुत प्यारा लड़का है।" दादी ने बड़े विश्वास से कहा, उन्होंने राजम को देखा तक नहीं था। स्वामीनाथन खुश हो गया। दूसरे ही क्षण उसके मन में एक नया संदेह पैदा हुआ। "दादी, शायद तुम्हें शेर की कहानी पर विश्वास नहीं हो रहा है।"

"मैं एक-एक शब्द पर विश्वास करती हूँ," दादी ने स्वर में मिठास भरकर कहा। स्वामीनाथन को इससे खुशी हुई, लेकिन उसने चेतावनी के तौर पर जोड़ा, "जो भी उसे झूठा कहेगा वह उसे गोली मार देगा।"

दादी ने इसका समर्थन किया और हरिश्चंद्र की कहानी सुनाने की बात कही जिसने वचन का पालन करने के लिए सिंहासन, पत्नी और बच्चे को खो दिया और अंत में उसे सब कुछ वापस मिल गया। उसने कहानी आधी ही सुनाई थी कि स्वामीनाथन खर्राटे लेने लगा। दादी भी रुक-रुककर बोलने लगीं, फिर वह भी सो गईं।

आर. के. नारायण

अनुवाद-मस्तराम कपूर

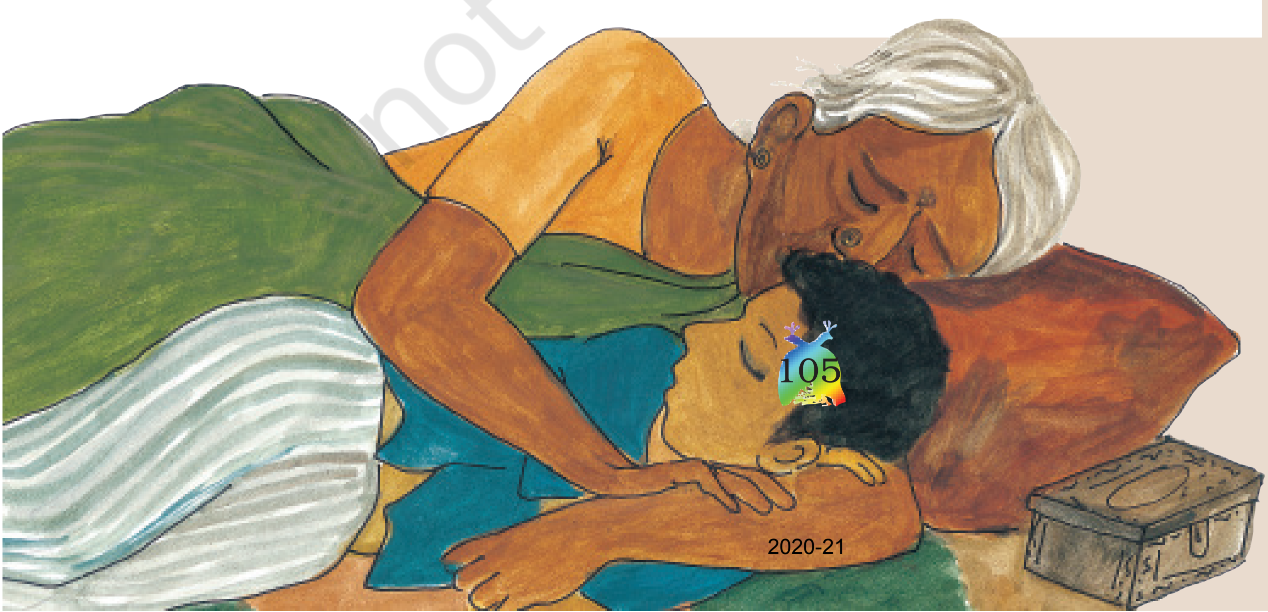

© NCERT not to be republished

कहानी से

1. "सच? राजम बड़ा बहादुर लड़का है।" स्वामी को क्यों लगा कि दादी ने यह बात उसे खुश करने के लिए कही?
2. मैडल से चूड़ियाँ बनवा लेने पर दादी ने बुआ को महामूर्ख क्यों माना?
3. पाठ के आधार पर दादी या स्वामी के स्वभाव, आदतों आदि के बारे में तुम्हें क्या पता चलता है? किसी एक के बारे में दस-बारह वाक्यों में लिखो।

तुम्हारी समझ से

1. स्वामी ने राजम को 'ऊँची चीज़' माना। क्या तुम स्वामी की राय से सहमत हो? अपने उत्तर के कारण लिखो।
2. स्वामी का अपनी दादी के साथ कैसा रिश्ता था? तीन-चार वाक्यों में लिखो।

कहानी और तुम

1. (क) "स्वामीनाथन के दादा रौबदार सब-मजिस्ट्रेट थे।"
   किसी व्यक्ति का रौब किन बातों से पता चलता है?
   (ख) क्या तुम्हारे आस-पास कोई रौबदार व्यक्ति है? शब्दों के ज़रिए उसका खाका खींचो।
2. "स्वामीनाथन दादी के पास ... बहुत प्रसन्न और सुरक्षित महसूस कर रहा था।"
   तुम कब असुरक्षित महसूस करती हो?
3. तुम इन हालात में कैसा महसूस करती हो —
   (क) दोस्त के घर में (ख) जब तुम पहली बार किसी के घर जाती हो (ग) रेलगाड़ी या बस में किसी सफ़र पर (घ) जब तुम मुख्याध्यापक के कमरे में जाती हो

पता करो

1. सब-मजिस्ट्रेट कौन होता है? क्या वह पुलिस विभाग में होता है?
2. तुम्हारा घर या स्कूल किस थाने में आता है? थाने में कौन-कौन से पद होते हैं? उन व्यक्तियों के नाम भी पता करो जो इन पदों पर हैं। नीचे दी गई तालिका में इकट्ठा की गई जानकारी को दर्ज करो।

थाने का नाम- . . . .

पद	व्यक्ति का नाम
. . . .	. . . .
. . . .	. . . .
. . . .	. . . .

© NCERT not to be republished

दादी का बक्सा

"उसका (दादी) सामान था–पाँच दरियाँ, तीन चादरें .... लकड़ी का एक छोटा बक्सा जिसमें ताँबे के सिक्के, इलायची, लौंग और सुपारी पड़े रहते थे।"

1. दादी अपने बक्से में इलायची, लौंग और सुपारी क्यों रखती होंगी?
2. क्या तुम्हारे घर में इनका इस्तेमाल होता है? किस-किस तरह से होता है?
3. ताँबे के सिक्के बनाने के लिए किस-किस धातु का इस्तेमाल होता है?
4. सिक्के कौन-कौन सी धातु के बने हो सकते हैं?

शब्दों की बात

नीचे पहले स्तंभ के रेखांकित विशेषणों और दूसरे स्तंभ के शब्दों का वाक्य में प्रयोग करो। तुम एक से अधिक वाक्यों का सहारा भी ले सकती हो।

ऊलजलूल कल्पना	चेतावनी
रूखा स्वर	मिठास
खूँखार डाकू	समर्थन

नीचे कहानी से कुछ वाक्यों के अंश दिए गए हैं। इनमें जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है, उनका लिंग पहचानो और लिखो।

पुलिस की वर्दी	काफ़ी बड़ा दफ़्तर
ताँबे के सिक्के	अपने सारे सामान
दसवाँ हिस्सा	उस जैसा महामूर्ख

© NCERT not to be republished

रामबाबू

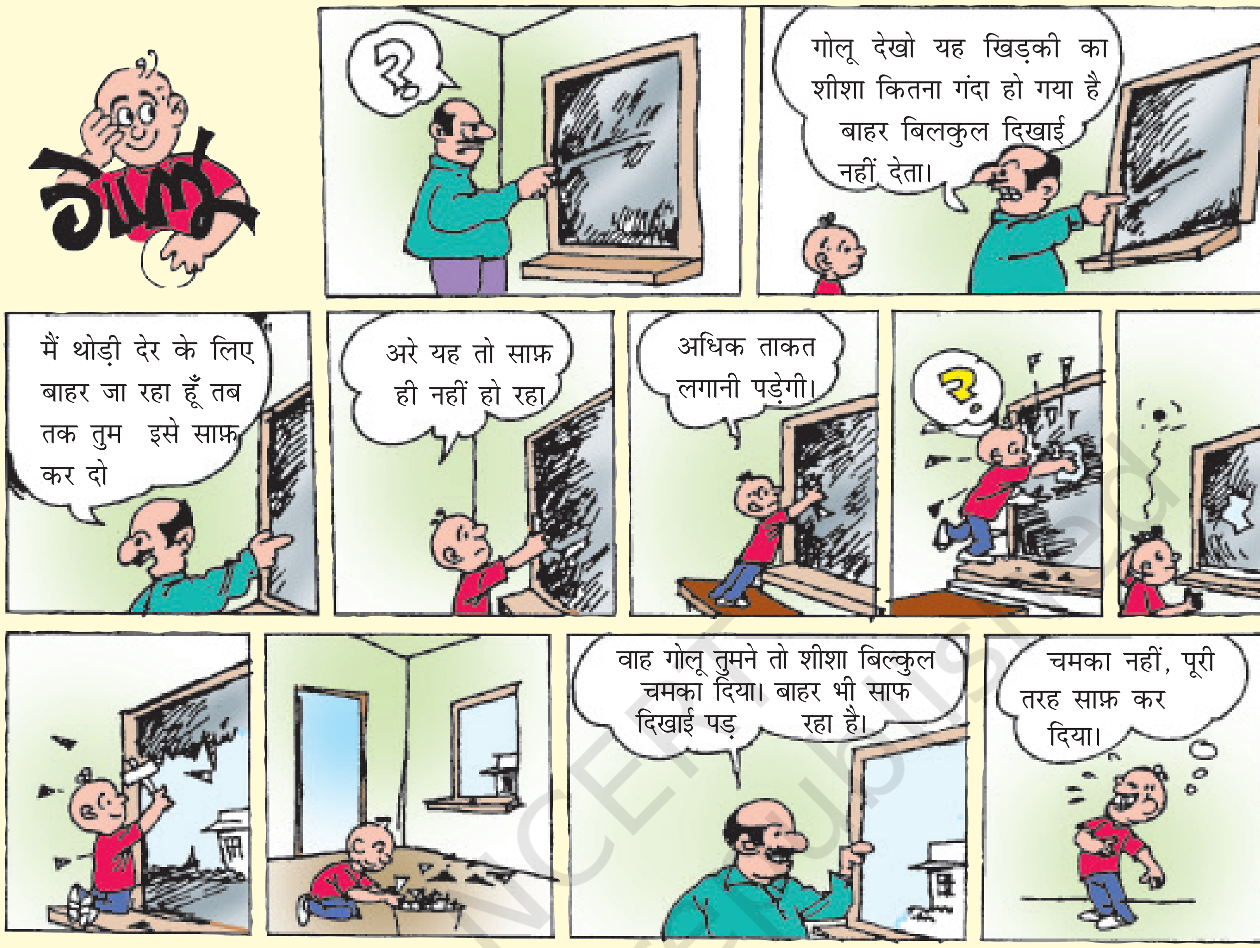

ढब्बू जी

आबिद सुरती

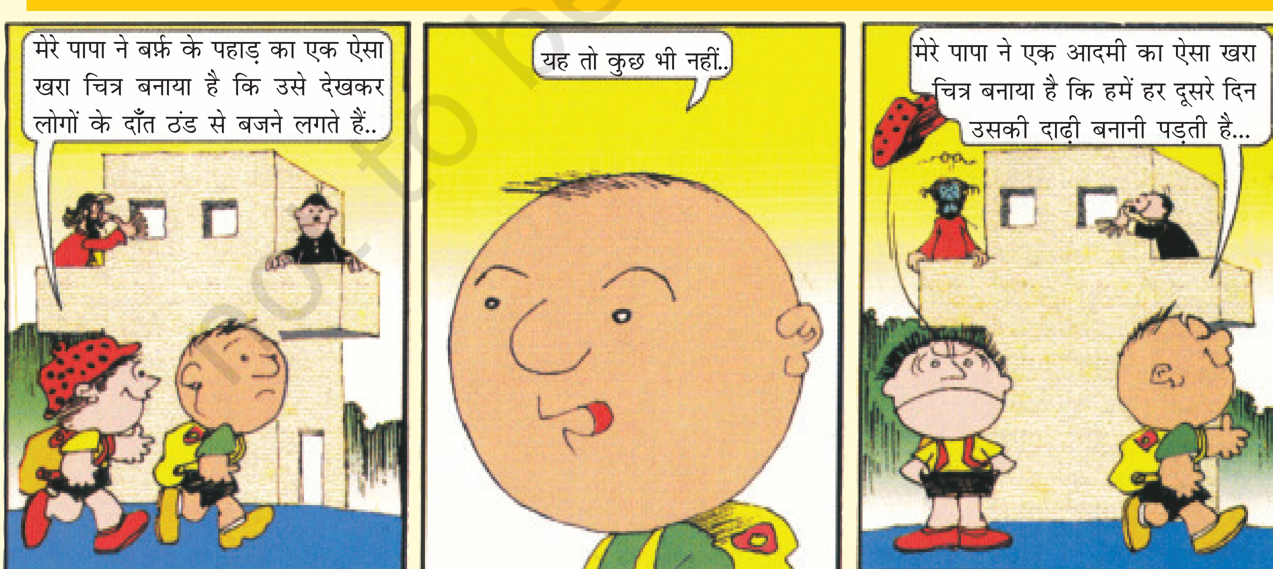

© NCERT not to be republished

रामबाबू

ढब्बू जी

आबिद सुरती

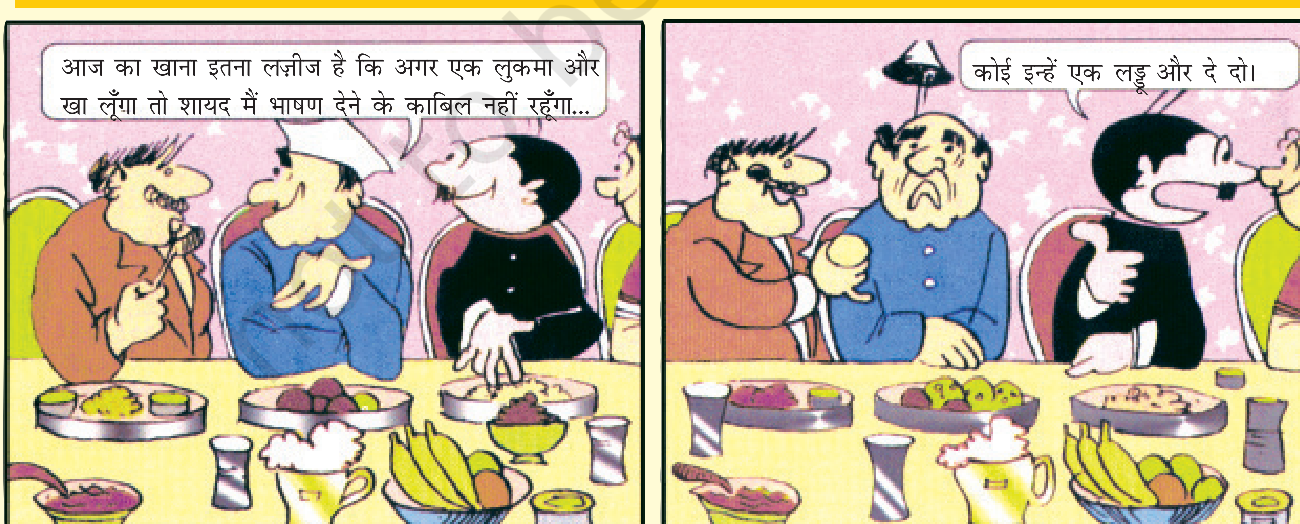

© NCERT not to be republished

आस–पास

© NCERT not to be republished

आस-पास

कभी किसी नई और अच्छी बात को समझने के लिए एकाध कठिन शब्द भी जान लेने में मज़ा आता है। पर्यावरण एक ऐसा ही शब्द है। हमारे बिल्कुल आस-पास और खूब दूर-दूर जो कुछ भी है, उसका बहुत-सा भाग, बहुत-सी चीज़ें, उसकी बहुत-सी बातें इसी एक शब्द में समा जाएँगी। मिट्टी, पानी, हवा, नदी, ताल-तलैया, समुद्र, पहाड़, पेड़-पौधे, जंगल, जंगल में रहने वाले पशु-पक्षी, जंगल से बाहर गाँव में शहरों में रहने वाले हम-यह सब कुछ पर्यावरण जैसे छोटे-से शब्द में आ जाता है।

हम इस बहुत ही बड़े चारों तरफ़ फैले पर्यावरण का एक बिल्कुल छोटा-सा भाग भर हैं। पर छोटा-सा हिस्सा होते हुए भी हमने इस पर्यावरण को बिगाड़ना शुरू कर दिया है। हमारा पर्यावरण बिगड़ेगा तो हम सब पर भी इसका असर अच्छा नहीं होगा। इसीलिए पर्यावरण की बातों को हमें अपने विद्यालयों में, अपने घर में भी धीरे-धीरे समझना चाहिए।

यह भाग हमारे पर्यावरण को समझने की एक शुरूआत है। इसमें दिए गए पाठ हमारे लिए एक दरवाज़ा खोलते हैं—इस दरवाज़े से बाहर निकलकर हम और कई नई बातें, जानकारियाँ खुद भी सीख सकेंगे।

बाघ आया उस रात कविता में हमारे परिवार की तरह बाघ के परिवार की बात आई है। पर इधर हमारे जंगलों का यह राजा गायब हो चला है। बाघों का और वनों में रहने वाले दूसरे जीवों का शिकार मना है। फिर भी चोरी-छिपे इन बाघों को मारा जा रहा है। इनको बचाने के लिए क्या कोशिश हो रही है, इस बारे में भी हमें सोचना चाहिए। **एशियाई शेर के लिए मीठी गोलियाँ** पाठ हमें बताता है कि शेर भी कभी बीमार पड़ सकता है और तब उसकी देखभाल उसी तरह करनी पड़ती है, जिस तरह बीमार पड़ने पर हम अपनी देखभाल करते हैं।

© NCERT not to be republished

किसी भी पक्षी को मारने से ज़्यादा बहादुरी तो उसे बचाने में है। **बिशन की दिलेरी** पाठ इस बात का उदाहरण है।

पानी रे पानी में जलचक्र की किताबी बात को आगे बढ़ाकर अकाल और बाढ़ की परिस्थिति को समझाया गया है। इससे हमें हर जगह फैल रहे जल-संकट को समझने और उसे सुलझाने का भी रास्ता मिलता है।

छोटी-सी हमारी नदी कविता नदी और उससे जुड़े हमारे जीवन की एक सुंदर झलक दिखाती है। लेकिन आज तो हमारे शहरों का, कारखानों का गंदा पानी छोटी-बड़ी सब नदियों में मिल रहा है और उन्हें बर्बाद कर रहा है। इस कविता के कवि रवींद्रनाथ ठाकुर के पुश्तैनी घर और उनके बचपन की झलक हमें **जोड़ासांको वाला घर** नामक पाठ में मिलती है।

चुनौती हिमालय की पाठ हमें बर्फ़ से ढके ऐसे ऊँचे पहाड़ पर चढ़ाता चला जाता है, जहाँ आठ कदम चलना भी बहुत कठिन हो जाता है। लेकिन यहाँ भी जीवन तो चलता ही है। पेड़ों से हमारा जीवन कई स्तरों पर जुड़ा है। इस गहरे रिश्ते की बात **हम क्या उगाते हैं** कविता में उठाई गई है।

इन पाठों में हमें हाथी, शेर, तीतर, नदी, बर्फ़, पेड़ और न जाने क्या-क्या मिलेगा। लेकिन पर्यावरण का यह दरवाज़ा एक बार खुल जाए तो हम इन बातों से भी आगे बढ़कर गायब हो चुके डायनासौरों तक को खोज सकेंगे। इतने बड़े, लंबे, चौड़े जानवर यदि धरती से गायब हो सकते हैं तो हमें थोड़ा ठहरकर यह भी सोचना पड़ेगा कि पर्यावरण की बेकद्री करने पर क्या हम सब भी बच पाएँगे?

© NCERT not to be republished

14 बाघ आया उस रात

0525CH14

“वो इधर से निकला
उधर चला गया ऽऽ”
वो आँखें फैलाकर
बतला रहा था–
“हाँ बाबा, बाघ आया उस रात,
आप रात को बाहर न निकलो!
जाने कब बाघ फिर से आ जाए!”
“हाँ, वो ही ी ी! वो ही जो
उस झरने के पास रहता है
वहाँ अपन दिन के वक्त
गए थे न एक रोज़?
बाघ उधर ही तो रहता है
बाबा, उसके दो बच्चे हैं
बाघिन सारा दिन पहरा देती है
बाघ या तो सोता है
या बच्चों से खेलता है ...”
दूसरा बालक बोला–
“बाघ कहीं काम नहीं करता
न किसी दफ़्तर में
न कॉलेज में ऽऽ”
छोटू बोला–
“स्कूल में भी नहीं ...”
पाँच-साला बेटू ने
हमें फिर से आगाह किया
“अब रात को बाहर होकर बाथरूम न जाना!”

नागार्जुन

© NCERT not to be republished

बात-बात में

"वो इधर से निकला, उधर चला गया"

(क) यह बात कौन किसे बता रहा होगा?

(ख) तुम्हें यह उत्तर कविता की किन पंक्तियों से पता चला?

ख़बर तेंदुए की

(क) कक्षा 2 की रिमझिम में अखबार में छपा एक समाचार दिया गया है। साथ में उस समाचार के आधार पर लिखी एक कहानी भी दी गई है। उसे एक बार फिर से पढ़ो।

(ख) अब 'बाघ आया उस रात' कविता के आधार पर एक 'समाचार' लिखो।

(ग) तेंदुए और बाघ में क्या अंतर है? पता करो। इस काम के लिए तुम बड़ों से बातचीत भी कर सकते हो।

उस रात

इस कविता में एक ऐसी रात की बात की गई है जिस रात को कुछ अनोखी घटना घटी थी।

(क) उस रात को कौन-सी अनूठी बात हुई थी?

(ख) तुम्हारे विचार से क्या सचमुच यह बात अनूठी है? क्यों?

(ग) उस रात को और क्या-क्या हुआ होगा? अपने साथियों से बातचीत करके लिखो।

बाघ के काम

"बाघ कहीं काम नहीं करता, न किसी दफ़्तर में, न कॉलेज में"

बाघ दिन भर क्या-क्या करता होगा? कहाँ-कहाँ जाता होगा? अपने साथियों के साथ मिलकर जानकारी एकत्रित करो। फिर चर्चा करके उस पर एक चित्रात्मक पुस्तक तैयार करो। इसे तुम अपने पुस्तकालय में भी रख सकते हो।

© NCERT not to be republished

आँखें फैलाकर

वो इधर से निकला उधर चला गया

वो *आँखें फैलाकर* बतला रहा था।

नीचे आँख से जुड़े कुछ और मुहावरे दिए गए हैं, वाक्यों में इनका इस्तेमाल करो।

आँख लगना	आँख दिखाना
आँख मूँदना	आँख बचाना
आँखें भर आना	सिर-आँखों पर बैठाना

शब्दों की दुनिया

(क) *पाँच साला बेटू ने हमें फिर से आगाह किया।* 'आगाह किया' का मतलब क्या हो सकता है?

- सचेत किया ☐
- मनोरंजन किया ☐
- बताया ☐
- समझाया ☐

(ख) कविता में इनमें से कौन-सा भाव झलकता है?

(ग) किन-किन पंक्तियों/शब्दों से ये भाव व्यक्त हो रहे हैं?

- आश्चर्य
- डर
- अविश्वास

© NCERT not to be republished

(घ) जब हम कविता के ज़रिए कोई बात कहते हैं तो आम तौर पर शब्दों के क्रम को बदल देते हैं।

- जैसे कविता का शीर्षक "बाघ आया उस रात" गद्य में "उस रात बाघ आया" होगा। ऐसा क्यों किया जाता होगा?
- इस किताब की दूसरी कविताएँ भी पढ़ो और शब्दों के क्रम में आए बदलाव पर गौर करो। ऐसे ही कुछ वाक्यों की सूची भी बनाओ।
- क्या शब्दों के क्रम में बदलाव अखबार की खबरों में भी आता है? नीचे बने कोलाज को देखो और बताओ।

एशियाई शेर के लिए मीठी गोलियाँ

नई दिल्ली: घाघस एक एशियाई शेर चिकित्सा की दुनिया का एक जीता जागता चमत्कार बन गया। बचने की कोई उम्मीद न होने पर भी आज वह ज़िंदा है और पहले की तरह गरजता है।

घाघस को अक्टूबर 2004 को दिल्ली के चिड़ियाघर में लाया गया था। वह चिड़ियाघर के माहौल में अच्छी तरह से रम गया था। 15 मार्च को उसने रोज़ की तरह अपना खाना पूरा नहीं खाया। चिड़ियाघर के डॉक्टरों ने इस बात पर ध्यान देते हुए उसे तीन दिन तक लगातार सुई लगाई। पर इससे उसे कोई फ़ायदा न हुआ, अब तो उसने खाना एकदम छोड़ ही दिया था और मुँह से लार भी बहने लगी थी।

घाघस की गिरती हुई हालत देख उसके खून के नमूने जाँच के लिए भेजे गए। हालाँकि इस बीच घाघस ने थोड़ा-बहुत तो खाना शुरू कर ही दिया था पर उसकी हालत ठीक नहीं कही जा सकती थी।

वह अपने पिछले पैरों से लँगड़ाने भी लगा था और ठीक से खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। दिल्ली के चिड़ियाघर के निदेशक डी.एन. सिंह ने बताया "एक महीने बाद तो हालत यह हो गई कि घाघस अपने शरीर का पिछला हिस्सा उठाने में असमर्थ हो गया। हमने उसे नियमित रूप से दिए जाने वाले माँस के स्थान पर मटन और चिकन खाने के लिए दिया। खाने में किए गए बदलाव का असर हुआ और घाघस ने 70-80 प्रतिशत तक खाना खाया जो कि एक अच्छा संकेत था। हालाँकि उसकी हालत में कोई सुधार नज़र नहीं आ रहा था।

घाघस को इलाज के लिए दूसरे विशेष चिकित्सकीय पिंजरे में रखा गया। उसके इलाज में कोई कोताही नहीं बरती जा रही थी, उसके शरीर की भाप से सिंकाई भी की जाती थी और अब वह भोजन भी अच्छी तरह से लेने लग गया था पर हालत उसकी वैसी ही बनी हुई थी। चिड़ियाघर के सभी लोग चिंतित हो गए।

हालत ऐसी हो गई थी कि अब दिन गिनने के अलावा कोई चारा न था

घाघस की यह दशा देखकर हमने गुजरात के वन्यजीव विशेषज्ञों से यह सोचकर सलाह लेने का निर्णय किया कि सिंह भारत में सिर्फ़ गुजरात के गिर जंगलों में पाए जाते हैं, शायद वे ही कोई राह सुझा सकें।" सिंह ने आगे बताया गुजरात के प्रमुख वन्यजीव संरक्षक ने उन्हें आणंद के डॉक्टर आर.जी. जानी से संपर्क करने का सुझाव दिया।

घाघस के इलाज की रिपोर्ट देखने के बाद डॉ जानी ने उसे होम्योपैथी दवाइयाँ देने की सलाह दी। होम्योपैथी इलाज शुरू होने के दो माह के भीतर ही घाघस की हालत सुधरनी शुरू हो गई और अब वह अपने चारों पैरों पर खड़ा हो पा रहा था। यह बात है 3 अगस्त की यानी कि पूरे छह माह वह तकलीफ़ में रहा। बीमारी की वजह से वह बहुत कमज़ोर हो गया है पर हालात में अभी सुधार है।

15 बिशन की दिलेरी

0525CH15

सुबह का समय था। पहाड़ों के पीछे से सूरज झाँक रहा था। दस वर्ष का बिशन घर से बाहर निकल आया। वह रोज़ इसी समय, इसी रास्ते से कर्नल दत्ता के फ़ार्म हाउस पर जाता है। कर्नल दत्ता की पत्नी पढ़ाई में उसकी मदद करती हैं। फ़ार्म से लगे सेबों के बाग में कीटनाशक दवा का छिड़काव हो रहा था और बहुत तड़के काम शुरू हो जाता था।

बिशन पगडंडी से अभी सड़क तक आ ही रहा था कि उसे गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी। उसने इधर-उधर देखा, कोई भी दिखाई नहीं दिया। वह कुछ ही दूर चला था कि उसे फिर गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी। इस बार एक नहीं, दो-तीन गोलियाँ एक साथ ही चली थीं। गोलियों की आवाज़ से पूरी घाटी गूँज गई। पंछी घबरा गए। आसमान में गोल-गोल चक्कर काटने लगे। बिशन सहमकर पेड़ों की आड़ में छिपकर खड़ा हो गया।

बिशन जहाँ खड़ा था, वहीं चुपचाप खड़ा रहा। उसे वहाँ से सीढ़ीनुमा खेत और फलों के बाग साफ़ दिखाई दे रहे थे। खेतों में काम करते हुए किसान भी दिखाई दे रहे थे। फ़सल तैयार खड़ी थी। सुबह की हल्की धूप में खेत सुनहरे दिखाई दे रहे थे। बिशन अभी सोच ही रहा था कि गोली किसने और क्यों चलाई होगी कि तभी एक और गोली की आवाज़ आई। एकाएक बिशन को गोली चलने का कारण समझ में आ गया। जब फ़सल पक जाती है

तब गेहूँ के खेतों में दाना चुगने ढेरों तीतर आ जाते हैं। शिकारी इस बात को जानते हैं। इसलिए वे सुबह-सुबह ही तीतर मारने चले आते हैं। पिछले साल भी शिकारियों ने इसी तरह बहुत से तीतर मारे थे। कुछ तीतर तो वे उठा ले गए, बाकी को वहीं छोड़ गए। खेतों को काटते समय किसानों को बहुत-से मरे और ज़ख्मी तीतर मिले।

बिशन ने सोचा, "कितना दुख पहुँचाने वाला काम करते हैं ये शिकारी!" वह समझ गया कि शिकारी ही तीतरों पर गोलियाँ चला रहे हैं। इसलिए वह पेड़ों के बीच से निकलकर खेतों के किनारे-किनारे चलने लगा। वह चलते-चलते सोच रहा था कि इन शिकारियों को सबक सिखाया जाना चाहिए। लेकिन उन्हें कैसे सबक सिखाया जाए, यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। तभी उसके पाँव के पास सरसराहट-सी हुई। उसने देखा एक घायल तीतर गेहूँ की बालियों के बीच फँसा छटपटा रहा है। बिशन वहीं घुटनों के बल बैठ गया उसने घायल तीतर को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन घबराया हुआ तीतर छिटककर खेत के और अंदर चला गया। बिशन जानता था कि शिकारी इस तीतर को ढूँढ़ नहीं पाएँगे और घायल तीतर यहीं तड़प-तड़पकर मर जाएगा। उसने स्वेटर उतारा और मौका देखकर तीतर पर डाल दिया। तीतर स्वेटर में फँस गया तो बिशन ने उसे पकड़ लिया। बिशन ने उसे अपने सीने से चिपका लिया और खेत में से निकलकर पहाड़ी की ओर भागने लगा। वह इतना तेज़ चल रहा था मानो उसके पंख लग गए हों।

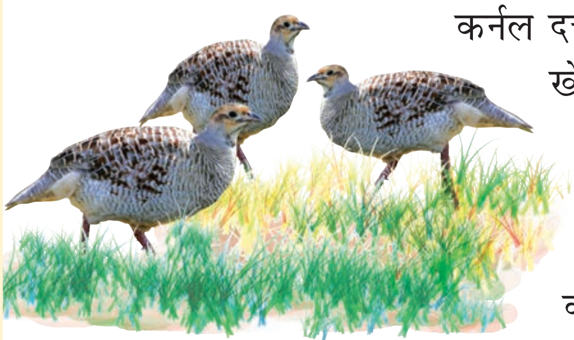

कर्नल दत्ता के घर के रास्ते में एक तरफ़ गेहूँ के खेत थे और दूसरी तरफ़ कँटीले तारों की बाड़। बिशन वैसे तो कँटीले तारों की बाड़ में से होकर निकल सकता था, परंतु इस समय वह दोनों हाथों से तीतर को पकड़े हुए था। तीतर को सँभालना बहुत ज़रूरी था। इसलिए वह खेतों के साथ-साथ छिप-छिपकर चलने लगा ताकि शिकारी उसे देख न लें।

वह कुछ ही दूर गया कि पीछे से भारी-सी आवाज़ आई, "लड़के, रुक जा, नहीं तो मैं गोली मार दूँगा।"

लेकिन बिशन नहीं रुका। वह चुपचाप चलता रहा।

"रुकता है या नहीं?" उस आदमी ने दुबारा चिल्लाकर कहा। तब तक बिशन कँटीले तारों के पास आ गया था। उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा। आगे बढ़ना मुश्किल लग रहा था। लेकिन फिर भी वह रुका नहीं और न ही उसने कोई जवाब दिया।

तभी बिशन को भारी-भरकम जूतों की आवाज़ सुनाई दी, जो तेज़ी से उसके पास आती जा रही थी। पीछे से आ रहा शिकारी गुस्से में ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था, "मैं तुझे देख लूँगा, तू मेरा शिकार चुराकर नहीं ले जा सकता!"

बिशन के लिए आगे निकल भागने का रास्ता नहीं था। अगर वह सड़क से जाता तो शिकारी को साफ़ दिखाई दे जाता। इसलिए उसने खेतों के छोटे रास्ते से जाना तय किया। खेतों से आगे के रास्ते में काँटेदार झाड़ियाँ थीं। बिशन उसी रास्ते पर घुटनों के बल चलने लगा। बहुत सँभलकर चलने पर भी उसके हाथ-पाँव पर काँटों की बहुत-सी खरोंचें उभर आईं। खरोंचों से खून भी निकलने लगा। उसकी कमीज़ की एक आस्तीन भी फट गई। वह जानता था कि कमीज़ फटने पर उसे माँ से डाँट खानी पड़ेगी। पर बिशन को इस बात का संतोष था कि वह अब तक तीतर की जान बचाने में कामयाब रहा। झाड़ी से बाहर आकर वह सोचने लगा कि कैसे पहाड़ी के कोने-से फिसलकर नीचे पहुँचा जाए, लेकिन उस कोने में घास बहुत ज़्यादा थी और ओस के कारण फिसलन भी। बिशन थककर वहीं एक किनारे बैठ गया। अभी वह बैठा ही था कि उसे पाँवों की आहट

© NCERT not to be republished

सुनाई दी। आहट सुनते ही वह उठकर दौड़ पड़ा। दौड़ते-दौड़ते वह आधी पहाड़ी पार कर चुका था। उसके कपड़े पसीने से तर-ब-तर हो गए, फिर भी वह रुका नहीं और किसी तरह कर्नल दत्ता के फ़ार्म हाउस के पिछवाड़े पहुँच ही गया। पिछवाड़े दरवाज़ा खुला था। उसने ताड़ के पेड़ का सहारा लिया और फ़ार्म हाउस के अंदर पहुँच गया। तीतर को वह बड़ी सावधानी के साथ अपने सीने से लगाए हुए था।

फ़ार्म हाउस में खामोशी थी। बस, रसोई घर से प्रेशर कुकर की सीटी की आवाज़ आ रही थी। मुर्गियाँ अभी अपने दड़बे में थीं और गुलाब चंद सामने का बरामदा साफ़ कर रहा था।

अचानक कर्नल साहब का अल्सेशियन कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। वह किसी अजनबी को देखकर ही इस तरह भौंकता है। बिशन समझ गया कि शिकारी इधर ही आ रहे हैं।

उसने इधर-उधर देखा ताकि वह तीतर को कहीं अच्छी तरह से छिपा सके। एक ओर शेड के नीचे बहुत सारा कबाड़ पड़ा था। उसी में एक टूटी टोकरी बिशन को दिखाई दे गई। "ये ठीक है" सोचते हुए उसने तीतर को टोकरी में रखकर स्वेटर से ढक दिया। घायल तीतर घबराया हुआ था इसलिए वह चुपचाप पड़ा रहा। तीतर को छुपाने के बाद बिशन ने सोचा कि अब बाहर चलकर देखना चाहिए। पर वह शिकारियों के सामने भी नहीं पड़ना चाहता था, इसलिए उसने छत पर चढ़कर बैठना ठीक समझा। बिना सीढ़ी के छत पर चढ़ना उसके लिए बहुत आसान काम था। वह अकसर इस शेड की ढलवाँ छत के सहारे ऊपर चढ़ जाता था। बिशन लकड़ी के खंभे पर बंदर की तरह छलाँग लगाकर लटक गया और ऊपर की ओर खिसकते-खिसकते छत पर जा पहुँचा। खपरैल की ढलावदार छत थी, इसलिए वह चिमनी के पीछे छिपकर बैठ गया ताकि वह किसी और को दिखाई न दे, लेकिन वह स्वयं सब कुछ देख सके। उसने देखा कि दो शिकारी इधर ही चले आ रहे हैं और उनको देखकर कर्नल साहब का अल्सेशियन कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहा है।

कर्नल ने कुत्ते को डाँटा, "चुप रहो।" पर वह न माना। पिछले दोनों पाँवों पर खड़े हो वह उछल-उछलकर भौंकने लगा।

वे दोनों शिकारी करीब आ गए तो कर्नल ने रौबदार आवाज़ में पूछा, "कौन

© NCERT not to be republished

हो तुम? यहाँ किसलिए आए हो?"

"साहब, हम शिकारी हैं! हर साल यहाँ शिकार के लिए आते हैं।"

"अच्छा... तो तुम्हीं लोगों की गोलियों की आवाज़ें गूँज रही थीं सुबह से!"

"जी हाँ, हमारे पास लाइसेंस वाली बंदूकें हैं। सरपंच माधो सिंह भी हमें जानता है।"

"तो तुम हर साल तीतरों का शिकार करते हो," कर्नल ने मज़ाक-सा उड़ाते हुए कहा।

"जी हाँ, तीतर भी मार लेते हैं कभी-कभी। अभी-अभी एक लड़का हमारे शिकार तीतर को लेकर आपके यहाँ आ छिपा है, हम उसे ही ढूँढ़ रहे हैं।"

"अच्छा, तुम जो इतने सारे तीतर मारते हो उनका क्या करते हो?" कर्नल साहब ने पूछा।

"सीधी-सी बात है साहब, खाते हैं।" दूसरे शिकारी ने जवाब दिया। फिर कुछ रुककर बोला, "अब तो उस लड़के को ढुँढ़वा दीजिए साहब! वह इधर ही कहीं छुप गया है।"

कर्नल दत्ता ने उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और गुस्से से कहा, "कैसे हो तुम लोग, हर साल आकर इतने तीतर मार डालते हो! कुछ को खा लेते हो, और बाकी को घायल करके यहाँ तड़प-तड़पकर मरने के लिए छोड़ जाते हो। जब फ़सल कटती है तब ढेरों मरे हुए तीतर मिलते हैं।"

कर्नल दत्ता की बात सुनकर वे दोनों कुछ घबरा गए। उन्हें उम्मीद नहीं थी कि कर्नल इस तरह उन्हें डाँट देंगे। कर्नल दत्ता ने उन्हें इतना ही कहकर नहीं छोड़ा, आगे बोले, "पक्षियों को मारने और उससे ज़्यादा उन्हें घायल करके छोड़ जाने में तो कोई बहादुरी नहीं है। अब तुम दोनों यहाँ से जा सकते हो। यहाँ तुम्हारा कोई तीतर-वीतर नहीं है। अब जाते क्यों नहीं, खड़े क्यों हो?"

बिशन चिमनी के पीछे से सब देख और सुन रहा था। वे दोनों शिकारी बिना कुछ बोले मुड़े और वापस चल दिए।

कर्नल दत्ता ने गुलाब चंद से दवाई छिड़कने वाली मशीन लाने को कहा।

तभी बिशन छप्पर से शेड पर होता हुआ नीचे कूद पड़ा। उसने तीतर को उठा लिया और घर में घुसते ही मालकिन को पुकारने लगा, "बहूजी! बहूजी! जल्दी आइए, यह बहुत ज़ख्मी है, आकर इसे देखिए!"

© NCERT not to be republished

बिशन की आवाज़ सुनकर कर्नल दत्ता भी अंदर जा पहुँचे और बोले, "अच्छा! तो तीतर चुराने वाला लड़का तू ही था!"

"क्या करता बाबूजी, इसे बहुत चोट लगी है! अगर मैं न लाता तो यह मर जाता!"

"अब तू इसका क्या करेगा?"

"इसे पालूँगा बाबूजी," बिशन ने कहा।

कर्नल साहब मुस्करा दिए। उन्होंने घायल तीतर को देखा। उसका एक पंख टूट गया था। अब शायद ही वह उड़ सके।

"जाओ, दवाइयों का बक्सा लेकर आओ।"

बिशन दौड़कर बक्सा ले आया।

कर्नल दत्ता ने तीतर के पैरों का ज़ख्म साफ़ किया। फिर दवाई लगा दी। पंख को फैलाकर टेप लगा दिया ताकि वह ज़्यादा हिले-डुले नहीं। फिर उन्होंने बिशन से कहा, "बिशन, अगर तुम इसे गेंदे के पत्तों का रस दिन में दो-तीन बार पिलाओगे तो यह जल्दी ठीक हो जाएगा।"

तब तक बहूजी एक कटोरी में दलिया ले आईं और तीतर को दलिया खिलाते हुए बोलीं, "इसे रोज़ दलिया भी खिलाना बिशन, तीतर को दलिया बहुत पसंद होता है।"

"तब तो यह बिशन के पीछे-पीछे ही घूमता रहेगा," कर्नल ने हँसते हुए कहा।

"अच्छा बिशन, तुम जानते हो तीतर कैसे बोलता है?" बहूजी ने पूछा।

बिशन ने अपने हाथों को मुँह पर रखकर तीतर की आवाज़ निकाली, "क्वाक... क्वाक... क्वाक..." कर्नल दत्ता ठहाका मारकर हँस पड़े।

बहूजी भी मुँह पर पल्लू रखकर हँसने लगीं।

बिशन भी हँसता हुआ हिरन की तरह छलाँगें लगाता तीतर के साथ वहाँ से अपने घर की ओर भाग चला।

प्रतिभा नाथ

© NCERT not to be republished

कहानी से

1. "जी हाँ, हमारे पास लाइसेंस वाली बंदूकें हैं। सरपंच माधोसिंह भी हमें जानता है।" शिकारियों ने कर्नल साहब से क्या सोचकर ऐसा कहा होगा?
2. बिशन घायल तीतर को क्यों बचाना चाहता था?
3. घायल तीतर को बचाने के लिए उसे किस तरह की परेशानियाँ हुई?
4. घायल तीतर अगर तुम्हें मिला होता, तो क्या तुम उसे पालते या अच्छा होने पर छोड़ देते? क्यों?

भाषा की बात

1. इन वाक्यों को अपने शब्दों में लिखो–
   - सुबह की हल्की धूप में खेत सुनहरे दिखाई दे रहे थे।
   - वह इतना तेज़ चल रहा था मानो उसके पंख लग गए हों।
2. "तीतर स्वेटर में फँस गया तो बिशन ने उसे पकड़ लिया और अपने सीने से चिपका लिया"। ऊपर लिखे वाक्य में 'उसे' शब्द का इस्तेमाल 'तीतर' के लिए किया गया है। एक ही संज्ञा का बार-बार इस्तेमाल करने की बजाय उसकी जगह पर कुछ खास शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ऐसे शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। नीचे लिखे वाक्यों में सर्वनाम का ठीक रूप छाँटकर लिखो।

   (क) मास्टर साहब ने अप्पाराव को .... पास बुलाकर कहा, ... कल .... घर आना। (मैं, अपना, तुम)

   (ख) सेंटीला .... घर नागालैंड के किस शहर में है? (तुम)

   (ग) सुधा ने .... बुआ से पूछा, पापा .... कितने बड़े हैं? (आप)

   (घ) मोहन को समझ में नहीं आ रहा कि .... क्या करना चाहिए? (वह)

   (ङ) विमल ने .... अफ़सर को याद दिलाया कि .... चार बजे बैठक में जाना है। (आप, वह)
3. इन वाक्यों को पूरा करो–

   (क) वह इतना धीरे चल रहा था, मानो ....
   ....

   (ख) रात में चमकते तारे ऐसे दिख रहे थे, मानो ....
   ....

   (ग) तुम तो मंगल ग्रह के बारे में ऐसे बता रहे हो, मानो ....
   ....

   (घ) बिल्ली चूहे को ऐसी ललचाई नज़रों से देख रही थी, मानो ....
   ....

© NCERT not to be republished

फ़सलों के इर्द-गिर्द

1. इस कहानी में सेबों के खेत और सीढ़ीनुमा खेत का ज़िक्र आया है। अनुमान लगाकर बताओ कि यह कहानी भारत के किस भौगोलिक क्षेत्र की होगी और वहाँ सीढ़ीनुमा खेती क्यों की जाती होगी?
2. "सेबों के बाग में कीटनाशक दवा का छिड़काव हो रहा था।"
   यों तो कीटनाशक दवाएँ फलों, सब्ज़ियों और अनाज की फ़सलों को कीड़ा लगने से बचाती हैं, पर
   (क) ये कीटनाशक दवाएँ कीड़ों को नष्ट करती हैं। इनसे इनका सेवन करने से क्या हमें भी नुकसान होता होगा? पता करो और कक्षा में बातचीत करो।
   (ख) ऐसे में फलों और सब्ज़ियों का इस्तेमाल करने से पहले किन बातों को ध्यान में रखना ज़रूरी होगा?

तुम्हारे आस-पास

1. कर्नल दत्ता ने घायल तीतर को गेंदे की पत्तियों का रस पिलाने के लिए कहा। पत्तों का इस्तेमाल कई कामों के लिए होता है। नीचे लिखी पत्तियों का इस्तेमाल किसलिए होता है?

तुलसी	नीम	मीठा नीम	आम
अमरूद	तेजपत्ता	केला	सागवान

2. "कर्नल साहब के कहने पर बिशन दौड़कर 'दवाइयों का बक्सा' ले आया।" इसे तुम 'प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स/फ़र्स्ट एड बॉक्स' के नाम से जानते होंगे।
   (क) इस बक्से में क्या-क्या चीज़ें होती हैं?
   (ख) इसका इस्तेमाल कब-कब किया जाता है?
3. तुमने पर्यावरण अध्ययन में पढ़ा होगा कि पहाड़ी क्षेत्रों में आमतौर पर छतें ढलावदार बनाई जाती हैं। सोचकर बताओ कि ऐसा क्यों किया जाता है।

पहाड़ी इलाका

इस कहानी में पहाड़ी, घाटी शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। पहाड़ी इलाके से जुड़े हुए और शब्द सोच कर लिखो। जैसे—ढलान, चट्टान आदि।

तीतर

1. पहेली – तीतर के दो पीछे तीतर,
   तीतर के दो आगे तीतर,
   बोलो कितने तीतर?
2. यहाँ तीतर का फ़ोटो दिया गया है। गौर से देखो और उसका वर्णन करो। चौथी में तुम यह कर चुके हो।

3. तीतर के बारे में और जानकारी इकट्ठा करो। जैसे – तीतर का घोंसला, वह क्या खाता है आदि।

© NCERT not to be republished

रात भर बिलखते-चिंघाड़ते रहे

उड़ीसा राज्य के सिम्प्लीपाल टाइगर रिजर्व में पच्चीस हाथियों का झुंड रहता था। इस झुंड में कुछ धुई भी थीं। जिन हथिनियों के साथ दुधमुँहे बच्चे हों उन्हें धुई कहते हैं। दाँव लगे तो हाथी के छोटे बच्चे को शेर मार लेता है। झुंड के बड़े दतैल और बड़ी हथिनियाँ बच्चों की रक्षा करती हैं।

सर्दियों में जब घास कम हो जाती है तो हाथियों के बड़े झुंड को जंगल के एक खंड में काफ़ी खाना नहीं मिलता। वे छोटी टोलियों में बँटकर अलग-अलग वनखंडों में चरने चले जाते हैं।

1988 के दिसंबर महीने का पहला सप्ताह गुज़र रहा था। उन दिनों सिम्प्लीपाल जंगलों के हाथी दो टोलियों में बँट कर बाराकमारा-तिनाधिया सड़क के साथ चौड़े में चर रहे थे।

एक धुई दो साल का बच्चा था। झुंड में सबसे छोटा यही था। वह माँ का दूध चूँघता था।

© NCERT not to be republished

इस बच्चे ने जंगल की घास-पत्ती को मुँह लगाना शुरू कर दिया था। झाड़ियों, पेड़ों और पगडंडियों को जानने-पहिचानने की स्वाभाविक इच्छा उसमें पैदा हो चुकी थी। एक सुबह वह अपनी टोली से ज़रा अलग होकर नाले की तरफ़ जा रहा था। रात का दौरा लगाने के बाद इस इलाके का शेर वहीं सो रहा था। वह बच्चे पर झपट पड़ा। बच्चा चिंघाड़ा, उसकी चिंघाड़ सुन कर सभी हाथी उसे बचाने दौड़े। बड़े हाथियों के सामने शेर नहीं टिका। उसे छोड़कर नाले में चला गया।

शेर का हमला इतना ज़ोरदार था कि कुछ ही क्षणों में उसने बच्चे को बुरी तरह ज़ख्मी कर दिया। सबसे बड़ा घाव सिर पर था। सयाने हाथी उसे ऊपरी बाराकमारा में रेंजर ऑफ़िस के सामने ले गए। जंगल के जानवरों की देखभाल और रक्षा करना, रेंज ऑफ़िसर की ज़िम्मेदारी होती है। उसके दफ़्तर के सामने पहुँचकर हाथी मानो अपने को सुरक्षित अनुभव कर रहे थे।

कुछ देर बाद आधे हाथी चरने चले गए। बाकी हाथी ज़ख्मी बच्चे की निगरानी में वहीं डटे रहे। उसकी माँ सूँड़ में घास का पूला उठाकर चँवर डुलाती रही जिससे घाव पर मक्खियाँ न बैठें। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा टपक रही थी। बच्चा इतना ज़ख्मी हो गया था कि दूध नहीं चूँघ सकता था। जंगल में जानवरों के छोटे-मोटे घाव प्रकृति खुद ठीक कर दिया करती है। पर इस बच्चे के घाव जानलेवा थे। अगले दिन उसने दम तोड़ दिया।

मरने की खबर मिलते ही चरने के लिए गए हुए हाथी लौट आए। रेंजर ऑफ़िस के सामने सभी शोक सभा में शामिल हो गए। शव को घेरकर सारी रात वहीं खड़े रहे। उनकी आँखें आँसू बहाती रहीं। वे चिंघाड़ते, रोते और बिलखते रहे।

रमेश बेदी

© NCERT not to be republished

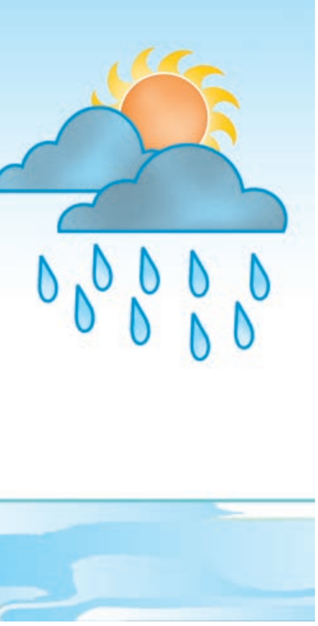

16 पानी रे पानी

कहाँ से आता है हमारा पानी और फिर कहाँ चला जाता है हमारा पानी? हमने कभी इस बारे में कुछ सोचा है? सोचा तो नहीं होगा शायद, पर इस बारे में पढ़ा ज़रूर है। भूगोल की किताब पढ़ते समय जल-चक्र जैसी बातें हमें बताई जाती हैं। एक सुंदर-सा चित्र भी होता है, इस पाठ के साथ। सूरज, समुद्र, बादल, हवा, धरती फिर बरसात की बूँदें और लो फिर बहती हुई एक नदी और उसके किनारे बसा तुम्हारा, हमारा घर, गाँव या शहर। चित्र के दूसरे भाग में यही नदी अपने चारों तरफ़ का पानी लेकर उसी समुद्र में मिलती दिखती है। चित्र में कुछ तीर भी बने रहते हैं। समुद्र से उठी भाप बादल बनकर पानी में बदलती है और फिर इन तीरों के सहारे जल की यात्रा एक तरफ़ से शुरू होकर समुद्र में वापिस मिल जाती है। जल-चक्र पूरा हो जाता है।

यह तो हुई जल-चक्र की किताबी बात। पर अब तो हम सबके घरों में, स्कूल में, माता-पिता के दफ़्तरों में, कारखानों और खेतों में पानी का कुछ अजीब-सा चक्कर सामने आने लगा है।

नलों में अब पूरे समय पानी नहीं आता। नल खोलो तो उससे पानी के बदले सूँ-सूँ की आवाज़ आने लगती है। पानी आता भी है तो बेवक्त। कभी देर रात को तो कभी भोर सबेरे। मीठी नींद छोड़कर घर भर की बाल्टियाँ, बर्तन और घड़े भरते फिरो। पानी को लेकर कभी-कभी, कहीं-कहीं आपस में तू-तू मैं-मैं, भी होने लगती हैं।

रोज़-रोज़ के इन झगड़े-टंटों से बचने के लिए कई घरों में लोग नलों के पाईप में मोटर लगवा लेते हैं। इससे कई घरों का पानी खिंचकर एक ही घर में आ जाता है। यह तो अपने आस-पास का हक छीनने जैसा काम है। लेकिन मजबूरी मानकर इस काम को मोहल्ले में कोई

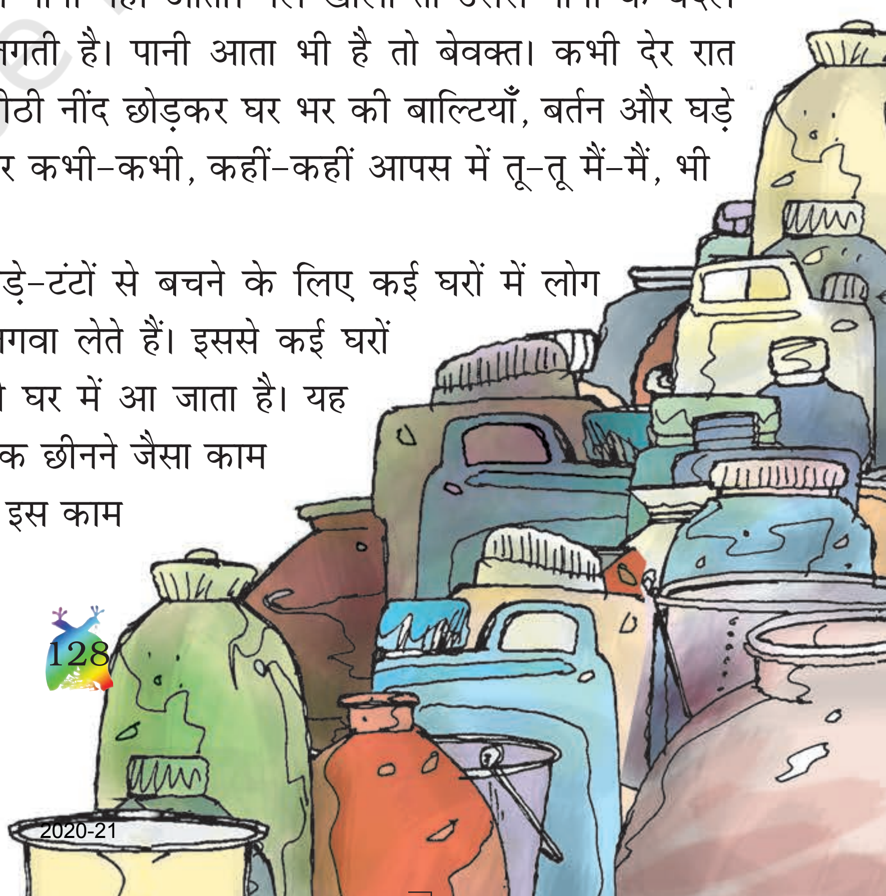

© NCERT not to be republished

एक घर कर बैठे तो फिर और कई घर यही करने लगते हैं। पानी की कमी और बढ़ जाती है। शहरों में तो अब कई चीज़ों की तरह पानी भी बिकने लगा है। यह कमी गाँव शहरों में ही नहीं बल्कि हमारे प्रदेशों की राजधानियों में और दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और बैंगलोर जैसे बड़े शहरों में भी लोगों को भयानक कष्ट में डाल देती है। देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसी हालत बन जाती है। यह तो हुई गर्मी के मौसम की बात।

लेकिन बरसात के मौसम में क्या होता है? लो, सब तरफ़ पानी ही बहने लगता है। हमारे-तुम्हारे घर, स्कूल, सड़कों, रेल की पटरियों पर पानी भर जाता है। देश के कई भाग बाढ़ में डूब जाते हैं। यह बाढ़ न गाँवों को छोड़ती है और न मुंबई जैसे बड़े शहरों को। कुछ दिनों के लिए सब कुछ थम जाता है, सब कुछ बह जाता है।

ये हालात हमें बताते हैं कि पानी का बेहद कम हो जाना और पानी का बेहद ज़्यादा हो जाना, यानी अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि हम इन दोनों को ठीक से समझ सकें और सँभाल लें तो इन कई समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

चलो, थोड़ी देर के लिए हम पानी के इस चक्कर को भूल जाएँ और याद करें अपनी गुल्लक को। जब भी हमें कोई पैसा देता है, हम खुश होकर, दौड़कर उसे झट से अपनी गुल्लक में डाल देते हैं।

एक रुपया, दो रुपया पाँच रुपया, कभी सिक्के, तो कभी छोटे-बड़े नोट– सब इसमें धीरे-धीरे जमा होते जाते हैं। फिर जब कभी हमें कुछ पैसों की ज़रूरत पड़ती है तो इस गुल्लक की बचत का उपयोग कर लेते हैं।

© NCERT not to be republished

हमारी यह धरती भी इसी तरह की खूब बड़ी गुल्लक है। मिट्टी की बनी इस विशाल गुल्लक में प्रकृति वर्षा के मौसम में खूब पानी बरसाती है। तब रुपयों से भी कई गुना कीमती इस वर्षा को हमें इस बड़ी गुल्लक में जमा कर लेना चाहिए। हमारे गाँव में, शहर में जो छोटे-बड़े तालाब, झील आदि हैं वे धरती की गुल्लक में पानी भरने का काम करते हैं। इनमें जमा पानी ज़मीन के नीचे छिपे जल के भंडार में धीरे-धीरे रिसकर, छनकर जा मिलता है। इससे हमारा भूजल भंडार समृद्ध होता जाता है। पानी का यह खज़ाना हमें दिखता नहीं, लेकिन इसी खज़ाने से हम बरसात का मौसम बीत जाने के बाद पूरे साल भर तक अपने उपयोग के लिए घर में, खेतों में, पाठशाला में पानी निकाल सकते हैं।

हक की बात

आज़ादी के बाद (पिछले साठ वर्षों में) दिल्ली में पानी की औसत माँग या खपत लगभग तीन गुना बढ़ गई है। पर झुग्गी बस्तियों को अभी भी औसत खपत का 30 प्रतिशत पानी ही मिल पाता है। जब ज़रूरत के हिसाब से लोगों को पानी नहीं मिलता तो उनके हक छिनते हैं। हमारे समाज में ज़रूरतों से जुड़े और कौन-से मुद्दे हैं जहाँ हमें बराबरी का बँटवारा नहीं दिखाई देता और कई लोगों का हिस्सा छीनकर कुछ लोगों को दे दिया जाता है? कक्षा में और घर पर बड़ों के साथ चर्चा करो।

लेकिन एक दौर ऐसा भी आया जब हम लोग इस छिपे खज़ाने का महत्व भूल गए और ज़मीन के लालच में हमने अपने तालाबों को कचरे से पाटकर, भर कर समतल बना दिया। देखते-ही-देखते इन पर तो कहीं मकान, कहीं बाज़ार, स्टेडियम और सिनेमा आदि खड़े हो गए।

इस बड़ी गलती की सज़ा अब हम सबको मिल रही है। गर्मी के दिनों में हमारे नल सूख जाते हैं और बरसात के दिनों में हमारी बस्तियाँ डूबने लगती हैं। इसीलिए यदि हमें अकाल और बाढ़ से बचना है तो अपने आस-पास के जलस्रोतों की, तालाबों की और नदियों आदि की रखवाली अच्छे ढंग से करनी पड़ेगी।

जल-चक्र हम ठीक से समझें, जब बरसात हो तो उसे थाम लें, अपना भूजल भंडार सुरक्षित रखें, अपनी गुल्लक भरते रहें तभी हमें ज़रूरत के समय पानी की कोई कमी नहीं आएगी। यदि हमने जल-चक्र का ठीक उपयोग नहीं किया तो हम पानी के चक्कर में फँसते चले जाएँगे।

अनुपम मिश्र

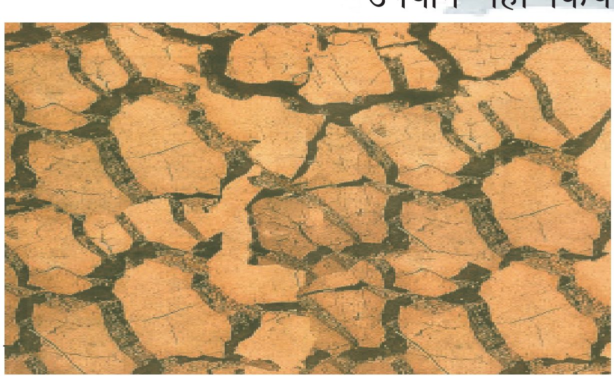

© NCERT not to be republished

तुम्हारे आस-पास

अपने आस-पास के बड़ों से पूछकर पता लगाओ–

1. तुम्हारे घर में पानी कहाँ से आता है?
2. तुम्हारे घर का मैला पानी बहकर कहाँ जाता है?
3. (क) तुम्हारे इलाके में धरती के अंदर का पानी कितने फ़ीट या कितने हाथ नीचे है?
   (ख) आज से पंद्रह वर्ष पहले यह पानी कितना नीचा था?

अनुमान लगाओ

पाठ के आधार पर बताओ–

1. अपने घर के नल के पाइप में मोटर लगवाना दूसरों का हक छीनने के बराबर है। लेखक ऐसा क्यों मानते हैं?
2. बड़ी संख्या में इमारतें बनने से बाढ़ और अकाल का खतरा कैसे पैदा होता है?
3. धरती की गुल्लक किन-किन साधनों से भरती है?

यदि हाँ तो...

1. क्या तुम्हारे इलाके में कभी बाढ़ आई है? यदि हाँ, तो उसके बारे में लिखो।
2. क्या तुम्हारे घर में पानी कुछ ही घंटों के लिए आता है? यदि हाँ, तो बताओ कि कैसे तुम्हारे परिवार की दिनचर्या नल में पानी आने के साथ बँधी होती है?
3. क्या तुम्हारे मोहल्ले में रोज़मर्रा की ज़रूरतें पूरी करने के लिए लोगों को पानी खरीदना पड़ता है? यदि हाँ, तो बताओ कि तुम्हारे घर में रोज़ औसतन कितने लीटर पानी खरीदा जाता है? इस पर कितना खर्चा होता है?

संकट क्यों?

1. पाठ में पानी के संकट के किस प्रमुख कारण की बात की गई है?
2. पानी के संकट का एक और मुख्य कारण पानी की फ़िज़ूलखर्ची भी है। कक्षा में पाँच-पाँच के समूह में बातचीत करो और बताओ कि अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में पानी की बचत करने के लिए तुम क्या-क्या उपाय कर सकते हो?
3. जितना उपलब्ध है, उससे कहीं ज़्यादा खर्च करने से पानी का संकट उत्पन्न होता है। क्या यही बात हम बिजली के संकट के बारे में भी कह सकते हैं?

पानी का चक्कर-भाषा का चक्कर

1. पानी की समस्या या बचत से संबंधित पोस्टर और नारे तैयार करो। यह काम तुम चार-चार के समूह में कर सकते हो।
2. "पानी की बर्बादी, सबकी बर्बादी" इस नारे में 'बर्बादी' शब्द का एक अर्थ है या दो अलग अर्थ हैं? सोचो।
3. पानी हमारी ज़िंदगी में महत्वपूर्ण तो है ही, मुहावरों की दुनिया में भी उसकी खास जगह है। पानी से संबंधित कुछ मुहावरे इकट्ठे करो और उनका उचित संदर्भ में प्रयोग करो।

© NCERT not to be republished

नदी का सफ़र

किसी भी नदी की शुरुआत ऊँचे स्थानों या पहाड़ों से होती है। नदी में पानी झरने से, झील से, बारिश से या फिर हिम के पिघलने से आता है।

© NCERT not to be republished

पानी यहाँ से ढाल के साथ नीचे की ओर बहता है। नदी की शुरुआत एक पतली धारा के रूप में होती है आगे चलकर यही धारा गहरी और चौड़ी हो जाती है और एक नदी का रूप ले लेती है। यहाँ एक नदी का सफ़र दिखाया गया है। तुम्हारे आस-पास भी कोई नदी होगी? उसके बारे में तुम क्या-क्या जानते हो?

0525CH17

17 छोटी-सी हमारी नदी

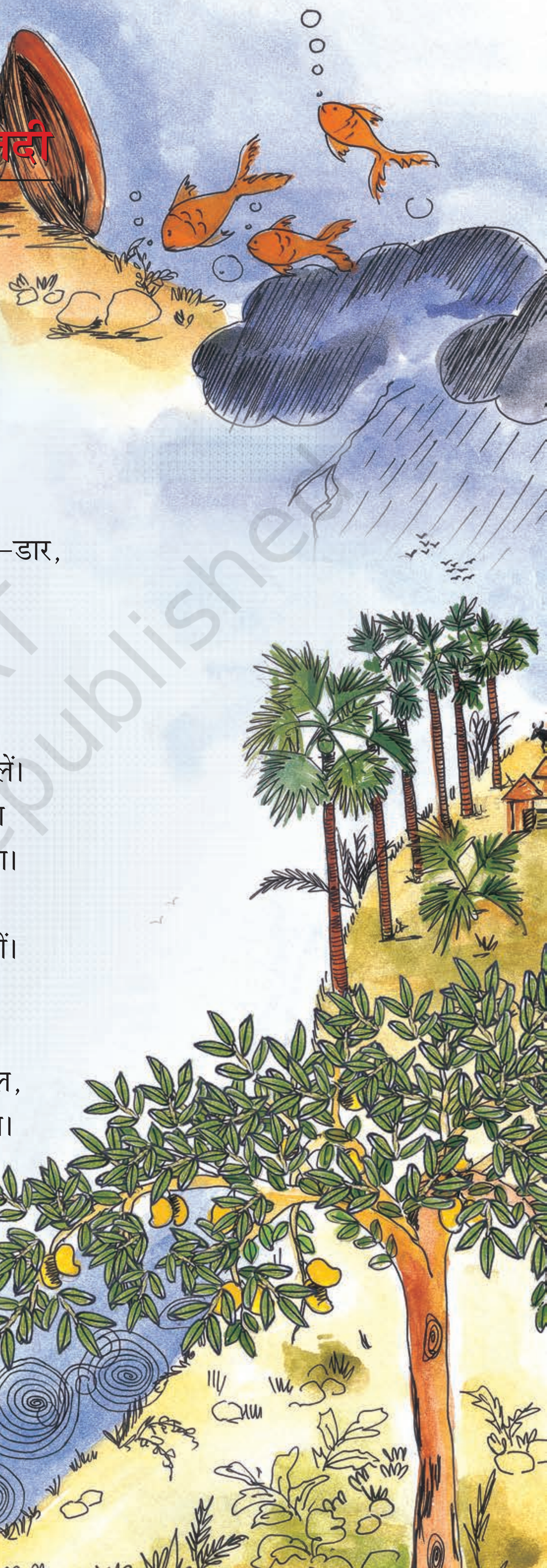

छोटी-सी हमारी नदी टेढ़ी-मेढ़ी धार,
गर्मियों में घुटने भर भिगो कर जाते पार।
पार जाते ढोर-डंगर, बैलगाड़ी चालू,
ऊँचे हैं किनारे इसके, पाट इसका ढालू।
पेटे में झकाझक बालू कीचड़ का न नाम,
काँस फूले एक पार उजले जैसे घाम।
दिन भर किचपिच-किचपिच करती मैना डार-डार,
रातों को हुआँ-हुआँ कर उठते सियार।
अमराई दूजे किनारे और ताड़-वन,
छाँहों-छाँहों बाम्हन टोला बसा है सघन।
कच्चे-बच्चे धार-कछारों पर उछल नहा लें,
गमछों-गमछों पानी भर-भर अंग-अंग पर ढालें।
कभी-कभी वे साँझ-सकारे निबटा कर नहाना
छोटी-छोटी मछली मारें आँचल का कर छाना।
बहुएँ लोटे-थाल माँजती रगड़-रगड़ कर रेती,
कपड़े धोतीं, घर के कामों के लिए चल देतीं।
जैसे ही आषाढ़ बरसता, भर नदिया उतराती,
मतवाली-सी छूटी चलती तेज़ धार दन्नाती।
वेग और कलकल के मारे उठता है कोलाहल,
गँदले जल में घिरनी-भँवरी भँवराती है चंचल।
दोनों पारों के वन-वन में मच जाता है रोला,
वर्षा के उत्सव में सारा जग उठता है टोला।

रवींद्रनाथ ठाकुर

© NCERT not to be republished

तुम्हारी नदी

1. तुम्हारी देखी हुई नदी भी ऐसी ही है या कुछ अलग है? अपनी परिचित नदी के बारे में छूटी हुई जगहों पर लिखो–

   .... सी हमारी नदी .... धार

   गर्मियों में ...., ... जाते पार

2. कविता में दी गई इन बातों के आधार पर अपनी परिचित नदी के बारे में बताओ–
   - धार
   - पाट
   - बालू
   - कीचड़
   - किनारे
   - बरसात में नदी
3. तुम्हारी परिचित नदी के किनारे क्या-क्या होता है?
4. तुम जहाँ रहते हो, उसके आस-पास कौन-कौन सी नदियाँ हैं? वे कहाँ से निकलती हैं और कहाँ तक जाती हैं? पता करो।

कविता के बाहर

1. इसी किताब में नदी का ज़िक्र और किस पाठ में हुआ है? नदी के बारे में क्या लिखा है?
2. नदी पर कोई और कविता खोजकर पढ़ो और कक्षा में सुनाओ।
3. नदी में नहाने के तुम्हारे क्या अनुभव हैं?
4. क्या तुमने कभी मछली पकड़ी है? अपने अनुभव साथियों के साथ बाँटो।

ये किसकी तरह लगते हैं?

1. नदी की टेढ़ी-मेढ़ी धार?
2. किचपिच -किचपिच करती मैना?
3. उछल-उछल के नदी में नहाते कच्चे-बच्चे?

कविता और चित्र

- कविता के पहले पद को दुबारा पढ़ो। वर्णन पर ध्यान दो। इसे पढ़कर जो चित्र तुम्हारे मन में उभरा उसे बनाओ। बताओ चित्र में तुमने क्या-क्या दर्शाया?

कविता से

1. इस कविता के पद में कौन-कौन से शब्द तुकांत हैं? उन्हें छाँटो।
2. किस शब्द से पता चलता है कि नदी के किनारे जानवर भी जाते थे?
3. इस नदी के तट की क्या खासियत थी?
4. अमराई दूजे किनारे .... चल देतीं।

   कविता की ये पंक्तियाँ नदी किनारे का जीता-जागता वर्णन करती हैं। तुम भी निम्नलिखित में से किसी एक का वर्णन अपने शब्दों में करो–
   - हफ़्ते में एक बार लगने वाला हाट
   - तुम्हारे शहर या गाँव की सबसे ज़्यादा चहल-पहल वाली जगह

© NCERT not to be republished

- तुम्हारे घर की खिड़की या दरवाज़े से दिखाई देने वाला बाहर का दृश्य
- ऐसी जगह का दृश्य जहाँ कोई बड़ी इमारत बन रही हो

5. तेज़ गति शोर मोहल्ला धूप किनारा घना

ऊपर लिखे शब्दों के लिए कविता में कुछ खास शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। उन शब्दों को नीचे दिए अक्षरजाल में ढूँढ़ो।

धा	म		वे	
			ग	
		टो		
	रो	ला		पा
स	घ	न		ट

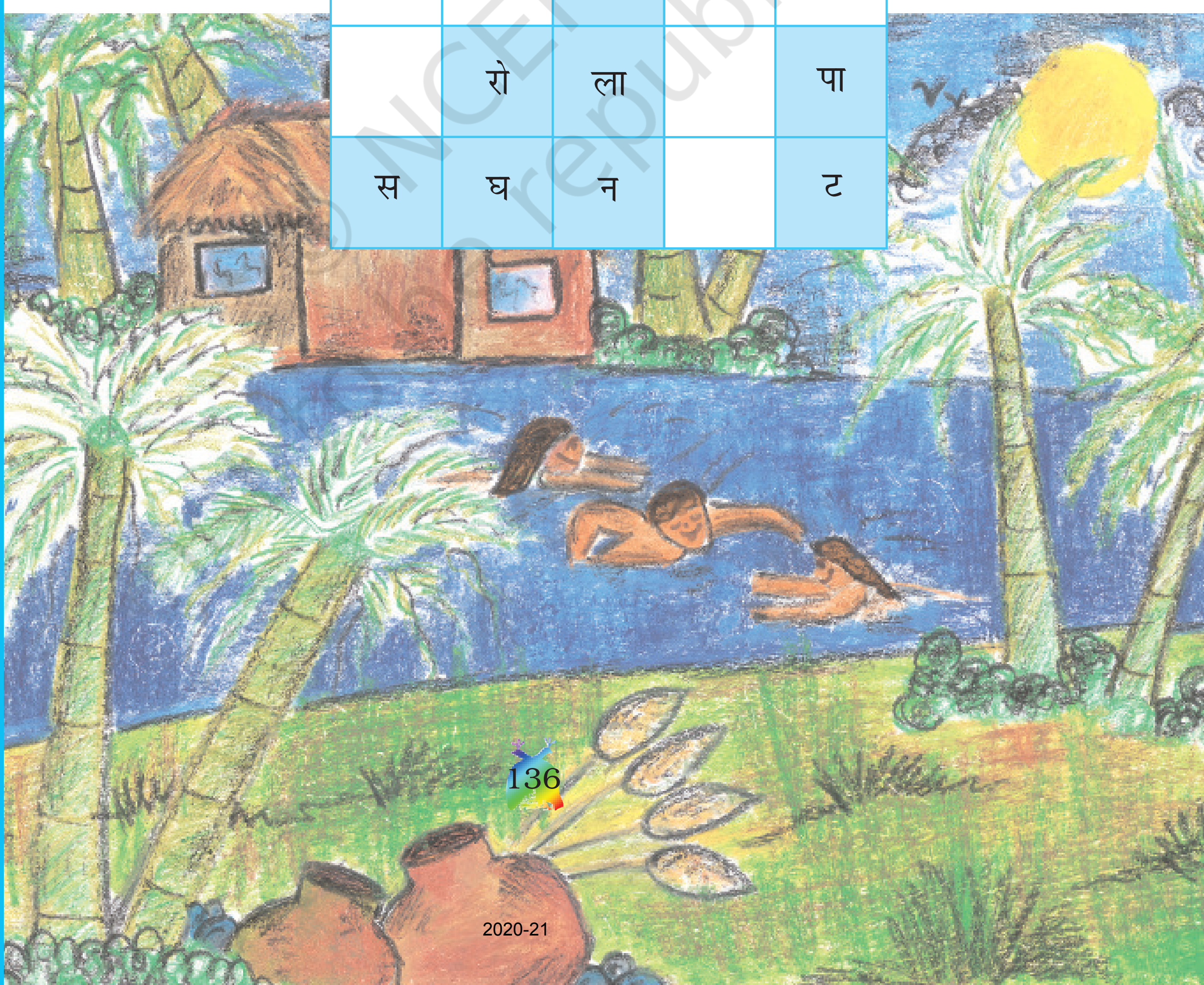

© NCERT not to be republished

जोड़ासांको वाला घर

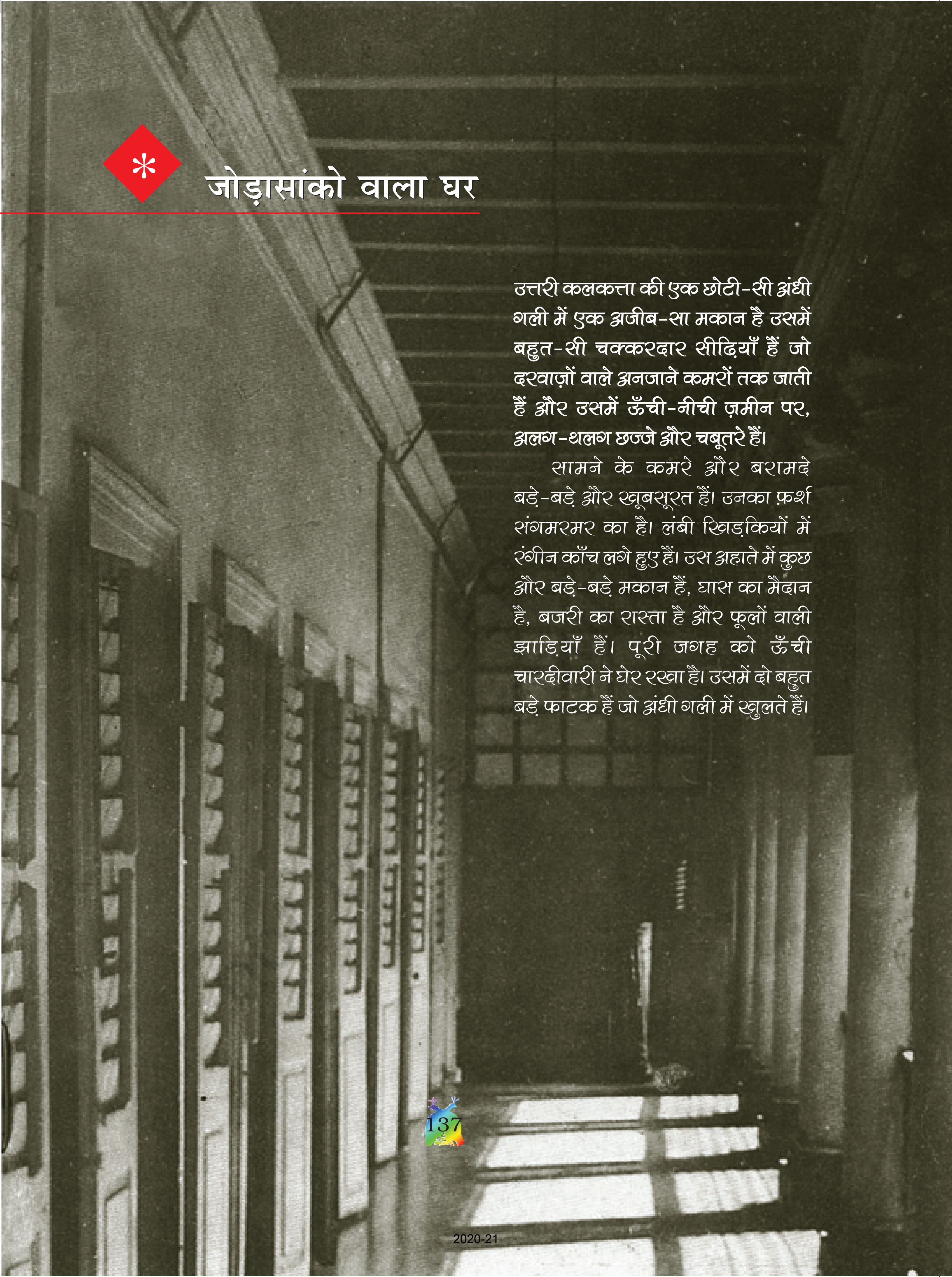

उत्तरी कलकत्ता की एक छोटी-सी अंधी गली में एक अजीब-सा मकान है उसमें बहुत-सी चक्करदार सीढ़ियाँ हैं जो दरवाज़ों वाले अनजाने कमरों तक जाती हैं और उसमें ऊँची-नीची ज़मीन पर, अलग-थलग छज्जे और चबूतरे हैं।

सामने के कमरे और बरामदे बड़े-बड़े और खूबसूरत हैं। उनका फ़र्श संगमरमर का है। लंबी खिड़कियों में रंगीन काँच लगे हुए हैं। उस अहाते में कुछ और बड़े-बड़े मकान हैं, घास का मैदान है, बजरी का रास्ता है और फूलों वाली झाड़ियाँ हैं। पूरी जगह को ऊँची चारदीवारी ने घेर रखा है। उसमें दो बहुत बड़े फाटक हैं जो अंधी गली में खुलते हैं।

कलकत्ता के लोग इसे टैगोर भवन कहते हैं। अब से लगभग दो सौ बरस पहले, ईस्ट इंडिया कंपनी के ज़माने में, यह मकान बना था।

वह छोटी-सी गली और उसका नन्हा-सा शिव मंदिर भी पुराना है। उस सारी जगह पर पुरानेपन की छाप आज भी मौजूद है। संकरी गली जहाँ बड़ी सड़क से जा मिलती थी, उसके कोने पर एक छोटा अहाता दिखाई पड़ता था। उसमें पीतल के बने चिड़ियों के अड्डों की एक कतार थी और हर अड्डे पर भड़कीले रंगों वाला एक-एक काकातुआ था। उनकी कड़वी तीखी चीख-चिल्लाहट की आवाज़ चारों ओर गूँजती रहती थी। अड़ोस-पड़ोस की सारी जगह कुछ अजीब और गैरमामूली ढंग की थी।

टैगोर परिवार तभी से इसमें रहता था। बीच-बीच में वे लोग इसमें बढ़ोतरी भी करते जाते थे। आज से एक सौ बरस पहले, बरसाती मौसम के तीसरे पहर, एक खूबसूरत लड़का खिड़की से झुककर बेचैनी के साथ पानी से भरी गली की ओर देख रहा था। उसने मामूली सूती कपड़े और सस्ते स्लीपरों की जोड़ी पहन रखी थी। उसके केश कुछ ज़्यादा ही लंबे थे। वह ऐसा लग रहा था, जैसे कितने ही दिनों से उसकी हज़ामत न हुई हो। कुछ लोगों का कहना था कि वह लड़की जैसा दिखता था। एक बार उसके स्कूल के एक साथी ने यह अफ़वाह फैला दी कि वह सचमुच एक लड़की ही है जो लड़कों जैसे कपड़े पहनती है। इस बात को साबित करने के लिए उसके साथियों ने उसे चाय पीने के लिए बुलाया। उन लोगों ने उसे एक ऊँचे बेंच पर से कूदने को मज़बूर किया, क्योंकि उनका खयाल था कि लड़कियाँ नीचे उतरते समय पहले

बायाँ पैर उठाती हैं। वह कूद तो गया, लेकिन बहुत दिनों बाद तक उसे उस चाय-पार्टी के बारे में कोई संदेह नहीं हुआ। लड़के का नाम रबींद्रनाथ या संक्षेप में रबि था।

बरसाती मौसम के एक तीसरे पहर, आठ साल का रबि अपने मास्टर के आने की राह देख रहा था। वह मन-ही-मन चाह रहा था कि पानी भरी सड़कों के कारण मास्टर जी न आ पाएँ। लेकिन अफ़सोस, वक्त की पूरी पाबंदी के साथ, उसकी तमाम उम्मीदों को मिट्टी में मिलाता हुआ, सड़क के मोड़ पर पैबंद लगा एक काला छाता दिख पड़ा। अब अपनी किताबें लेकर नीचे के एक मद्धिम रोशनी वाले कमरे में जा बैठने के सिवा और कोई उपाय न था। उसकी आँखें नींद से बोझिल हो रही थीं, लेकिन रात में देर तक पढ़ना था-अँग्रेज़ी, गणित, विज्ञान, इतिहास और भूगोल। यहाँ तक कि आदमी के शरीर की हड्डियों की जानकारी पाने के लिए उसे एक नर-कंकाल को भी हाथ लगाना पड़ता था। यह अजीब-सी बात थी कि मास्टर जी के जाते ही उसकी आँखों की नींद गायब हो गई।

उस ज़माने में बिजली की बत्तियाँ नहीं थीं, यहाँ तक कि गैस की रोशनी का भी ज़्यादा चलन नहीं था। पानी के नल का भी कोई पता नहीं था। नीचे के एक अँधेरे कमरे में, जहाँ सूरज की रोशनी नहीं पहुँचती थी, मिट्टी के घड़ों में भरकर साल भर के लिए पीने का पानी इकट्ठा किया जाता था। नन्हा रबि जब कभी उस कमरे में झाँकता, उसका बदन सिहर उठता था। लेकिन घरवालों को नदी का भरपूर पानी मिल जाता था, क्योंकि सीधे गंगा से नहर खोदकर पिछवाड़े के बगीचे और अहाते में लाई गई थी। जब बाढ़ का पानी चढ़ आता तो रबि बड़े अचरज और बड़ी खुशी से कलकल-छलछल करती नदी के पानी को देखा करता था, जो सूरज की किरणों से रोशनी लेकर चमक-चमक उठता था। कभी-कभी छोटी मछलियाँ धारा के साथ बह आती थीं और उस छोटे-से तालाब में फिसल जाती थीं जिसमें चाचा ने सुनहरी मछलियाँ पाल रखी थीं। छोटी मछलियों के साथ रबि का दिल भी उछल पड़ता था।

सचमुच वह अचरज भरा मकान था लोगों की भीड़ से भरा हुआ। पिता, माता, चाचा, चाचियाँ, भाई, बहनें, चचेरे भाई, भाभियाँ, दोस्त, दोस्तों के दोस्त, कलाकार, गाने-बजानेवाले, लेखक, सभी थे वहाँ। अब यह घर शांति निकेतन का एक हिस्सा है। रबि जब बड़ा हुआ तो उसने अपनी ज़िंदगी का ज़्यादातर हिस्सा शांति निकेतन में बिताया। शांति निकेतन में उसने अपना निज का स्कूल बनवाया। यह जगत प्रसिद्ध शांति निकेतन विश्वविद्यालय के एक अंग के रूप में आज भी वहाँ मौजूद है।

लीला मजूमदार

© NCERT not to be republished

18 चुनौती हिमालय की

जोज़ीला पास से आगे चलकर जवाहरलाल मातायन पहुँचे तो वहाँ के नवयुवक कुली ने बताया, "शाब, सामने उस बर्फ़ से ढके पहाड़ के पीछे अमरनाथ की गुफा है।"

"लेकिन, शाब, रास्ता बहुत टेढ़ा है।" किशन ने कुली की बात काटी। "बहुत चढ़ाई है। और शाब, दूर भी है।"

"कितनी दूर?" जवाहरलाल ने पूछा।

"आठ मील, शाब," कुली ने जल्दी से उत्तर दिया।

"बस! तब तो ज़रूर चलेंगे।" जवाहरलाल ने अपने चचेरे भाई की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि डाली। दोनों कश्मीर घूमने निकले थे और जोज़ीला पास से होकर लद्दाखी इलाके की ओर चले आए थे। अब अमरनाथ जाने में क्या आपत्ति हो सकती थी? फिर जवाहरलाल रास्ते की मुश्किलों के बारे में सुनकर सफ़र के लिए और भी उत्सुक हो गए।

"कौन-कौन चलेगा हमारे साथ?" जवाहरलाल ने जानना चाहा।

तुरंत किशन बोला, "शाब मैं चलूँगा। भेड़ें चराने मेरी बेटी चली जाएगी।"

अगले दिन सुबह तड़के तैयार होकर जवाहरलाल बाहर आ गए। आकाश में रात्रि की कालिमा पर प्रात: की लालिमा फैलती जा रही थी। तिब्बती पठार का दृश्य निराला था। दूर-दूर तक वनस्पति-रहित उजाड़ चट्टानी इलाका दिखाई दे रहा था। उदास, फीके, बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़ सुबह की पहली किरणों का स्पर्श पाकर ताज की भाँति चमक उठे। दूर से छोटे-छोटे ग्लेशियर ऐसे लगते, मानो

© NCERT not to be republished

स्वागत करने के लिए पास सरकते आ रहे हों। सर्द हवा के झोंके हड्डियों तक ठंडक पहुँचा रहे थे।

जवाहर ने हथेलियाँ आपस में रगड़कर गरम कीं और कमर में रस्सी लपेट कर चलने को तैयार हो गए। हिमालय की दुर्गम पर्वतमाला मुँह उठाए चुनौती दे रही थी। जवाहर इस चुनौती को कैसे न स्वीकार करते। भाई, किशन और कुली सभी रस्सी के साथ जुड़े थे। किशन गड़ेरिया अब गाइड बन गया।

बस आठ मील ही तो पार करने हैं। जोश में आकर जवाहरलाल चढ़ाई चढ़ने लगे। यूँ आठ मील की दूरी कोई बहुत नहीं होती। लेकिन इन पहाड़ी रास्तों पर आठ कदम चलना दूभर हो गया। एक-एक डग भरने में कठिनाई हो रही थी।

रास्ता बहुत ही वीरान था। पेड़-पौधों की हरियाली के अभाव में एक अजीब खालीपन-सा महसूस हो रहा था। कहीं एक फूल दिख जाता तो आँखों को ठंडक मिल जाती। दिख रही थीं सिर्फ़ पथरीली चट्टानें और सफ़ेद बर्फ़। फिर भी इस गहरे सन्नाटे में बहुत सुकून था। एक ओर सूँ-सूँ करती बर्फ़ीली हवा बदन को काटती तो दूसरी ओर ताज़गी और स्फूर्ति भी देती।

जवाहरलाल बढ़ते जा रहे थे। ज्यों-ज्यों ऊपर चढ़ते गए, त्यों-त्यों साँस लेने में दिक्कत होने लगी। एक कुली की नाक से खून बहने लगा। जल्दी से जवाहरलाल ने उसका उपचार किया। खुद उन्हें भी कनपटी की नसों में तनाव महसूस हो रहा था, लगता था जैसे दिमाग में खून चढ़ आया हो। फिर भी जवाहरलाल ने आगे बढ़ने का इरादा नहीं बदला।

थोड़ी देर में बर्फ़ पड़ने लगी। फिसलन बढ़ गई, चलना भी कठिन हो गया। एक तरफ़ थकान, ऊपर से सीधी चढ़ाई। तभी सामने एक बर्फ़ीला मैदान नज़र आया। चारों ओर हिम शिखरों से घिरा वह मैदान देवताओं के मुकुट के समान लग रहा था। प्रकृति की कैसी मनोहर छटा थीं आँखों और मन को तरोताज़ा कर गई। बस एक झलक दिखाकर बर्फ़ के धुँधलके में ओझल हो गई।

दिन के बारह बजने वाले थे। सुबह चार बजे से वे लोग लगातार चढ़ाई कर रहे थे। शायद सोलह हज़ार फ़ीट की ऊँचाई पर होंगे इस वक्त ... अमरनाथ

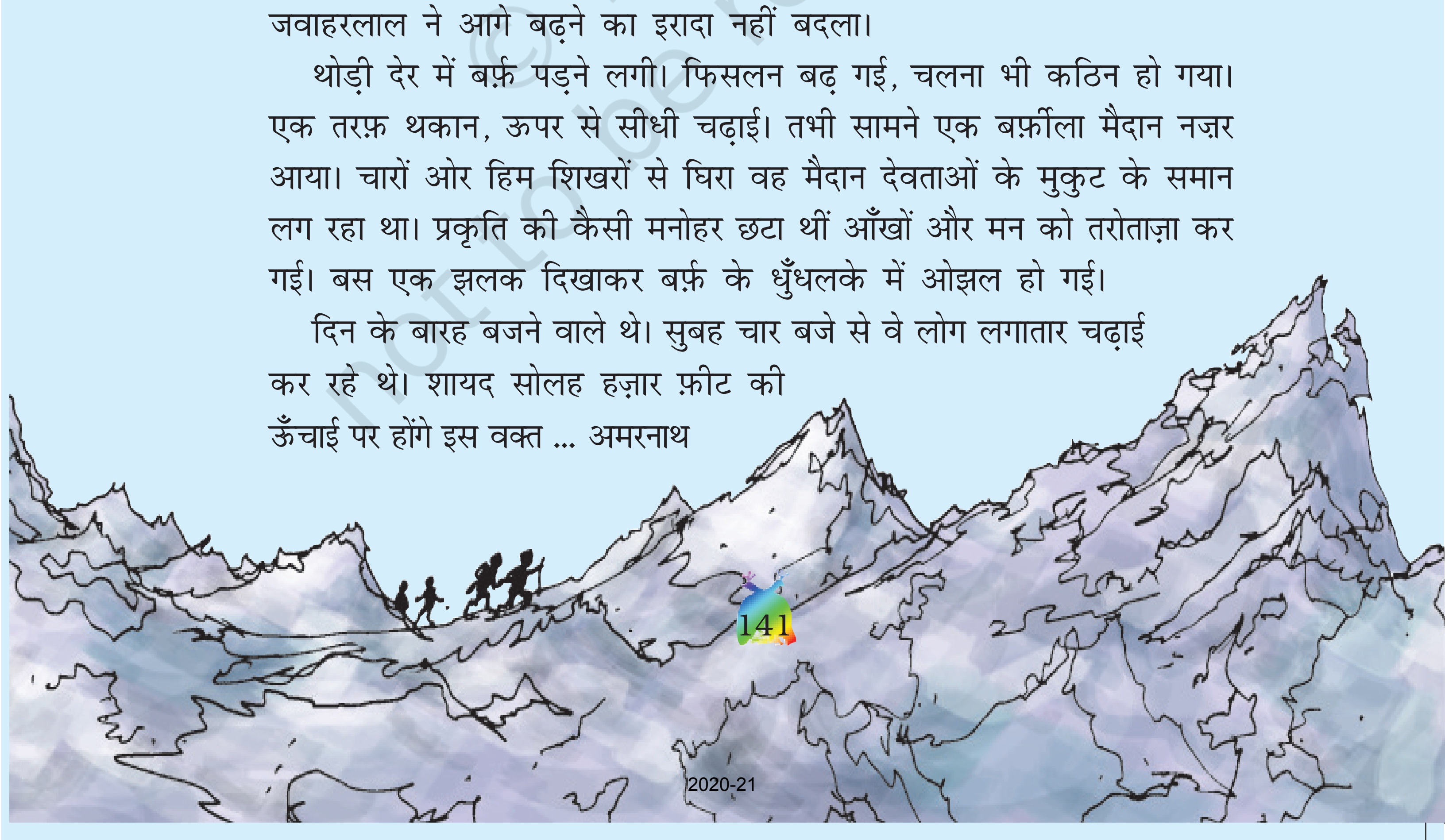

2020-21

© NCERT not to be republished

से भी ऊपर। पर अमरनाथ की गुफा का दूर-दूर तक पता नहीं था। इस पर भी जवाहरलाल की चाल में न ढीलापन था, न बदन में सुस्ती। हिमालय ने चुनौती जो दी थी। निर्गम पथ पार करने का उत्साह उन्हें आगे खींच रहा था।

"शाब, लौट चलिए। वापस कैंप में पहुँचते-पहुँचते दिन ढल जाएगा," एक कुली ने कहा।

"लेकिन अभी तो अमरनाथ पहुँचे नहीं।" जवाहरलाल को लौटने का विचार पसंद नहीं आया।

"वह तो दूर बर्फ़ के उस मैदान के पार है," किशन बीच में बोल पड़ा।

"चलो, चलो। चढ़ाई तो पार कर ली, अब आधे मील का मैदान ही तो बाकी है," कहकर जवाहरलाल ने थके हुए कुलियों को उत्साहित किया।

सामने बर्फ़ का सपाट मैदान दिखाई दे रहा था। उसके पार दूसरी ओर से नीचे उतरकर गुफा तक पहुँचा जा सकता था। जवाहरलाल फुर्ती से बढ़ते जा रहे थे। दूर से मैदान जितना सपाट दिख रहा था असलियत में उतना ही ऊबड़-खाबड़ था। ताज़ी बर्फ़ ने ऊँची-नीची चट्टानों को एक पतली चादर से ढककर एक समान कर दिया था। गहरी खाइयाँ थीं, गड्ढे बर्फ़ से ढके हुए थे और गज़ब की फिसलन थी। कभी पैर फिसलता और कभी बर्फ़ में पैर अंदर धँसता जाता, धँसता जाता। बहुत नाप-नाप कर कदम रखने पड़ रहे थे। ये तो चढ़ाई से भी मुश्किल था, पर जवाहरलाल को मज़ा आ रहा था। तभी जवाहरलाल ने देखा सामने एक गहरी खाई मुँह फाड़े निगलने के लिए तैयार थी। अचानक उनका पैर फिसला। वे लड़खड़ाए और इससे पहले कि सँभल पाएँ वे खाई में गिर पड़े।

"शाब ... गिर गए!" किशन चीखा।

"जवाहर ...!" भाई की पुकार वादियों की शांति भंग कर गई। वे खाई की ओर तेज़ी से बढ़े।

रस्सी से बँधे जवाहरलाल हवा में लटक रहे थे। उफ़, कैसा झटका लगा। दोनों तरफ़ चट्टानें-ही-चट्टानें, नीचे गहरी खाई। जवाहरलाल कसकर रस्सी पकड़े थे, वही उनका एकमात्र सहारा था।

© NCERT not to be republished

"जवाहर...!" ऊपर से भाई की पुकार सुनाई दी।

मुँह ऊपर उठाया तो भाई और किशन के धुँधले चेहरे खाई में झाँकते हुए दिखाई दिए। "हम खींच रहे हैं, रस्सी कस के पकड़े रहना," भाई ने हिदायत दी।

जवाहरलाल जानते थे कि फिसलन के कारण यूँ ऊपर खींच लेना आसान नहीं होगा। "भाई, मैं चट्टान पर पैर जमा लूँ," वह चिल्लाए। खाई की दीवारों से उनकी आवाज़ टकराकर दूर-दूर तक गूँज गई। हल्की-सी पेंग बढ़ा जवाहरलाल ने खाई की दीवार से उभरी चट्टान को मज़बूती से पकड़ लिया और पथरीले धरातल पर पैर जमा लिए। पैरों तले धरती के एहसास से जवाहरलाल की हिम्मत बढ़ गई।

"घबराना मत, जवाहर," भाई की आवाज़ सुनाई दी।

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ," कहकर जवाहरलाल मज़बूती से रस्सी पकड़ एक-एक कदम ऊपर की ओर बढ़ने लगे। कभी पैर फिसलता, कभी कोई हल्का-फुल्का पत्थर पैरों के नीचे से सरक जाता, तो वह मन-ही-मन काँप जाते और मज़बूती से रस्सी पकड़ लेते। रस्सी से हथेलियाँ भी जैसे कटने लगीं थीं पर जवाहरलाल ने उस तरफ़ ध्यान नहीं दिया। कुली और किशन उन्हें खींचकर बार-बार ऊपर चढ़ने में मदद कर रहे थे। धीरे-धीरे सरककर किसी तरह जवाहरलाल ऊपर पहुँचे। मुड़कर ऊपर से नीचे देखा कि खाई इतनी गहरी थी कि कोई गिर जाए तो उसका पता भी न चले।

"शुक्र है, भगवान का!" भाई ने गहरी साँस ली।

"शाब, चोट तो नहीं आई?" एक कुली ने पूछा।

गर्दन हिला, कपड़े झाड़ जवाहरलाल फिर चलने को तैयार हो गए। इस हादसे से हल्का-सा झटका ज़रूर लगा फिर भी जोश ठंडा नहीं हुआ। वह अब भी आगे जाना चाहते थे।

आगे चलकर इस तरह की गहरी और चौड़ी खाइयों की तादाद बहुत थी। खाइयाँ पार करने का उचित सामान भी तो नहीं था। निराश होकर जवाहरलाल को अमरनाथ तक का सफ़र अधूरा छोड़कर वापस लौटना पड़ा। अमरनाथ पहुँचने का सपना तो पूरा ना हो सका पर हिमालय की ऊँचाइयाँ सदा जवाहरलाल को आकर्षित करती रहीं।

सुरेखा पणंदीकर

© NCERT not to be republished

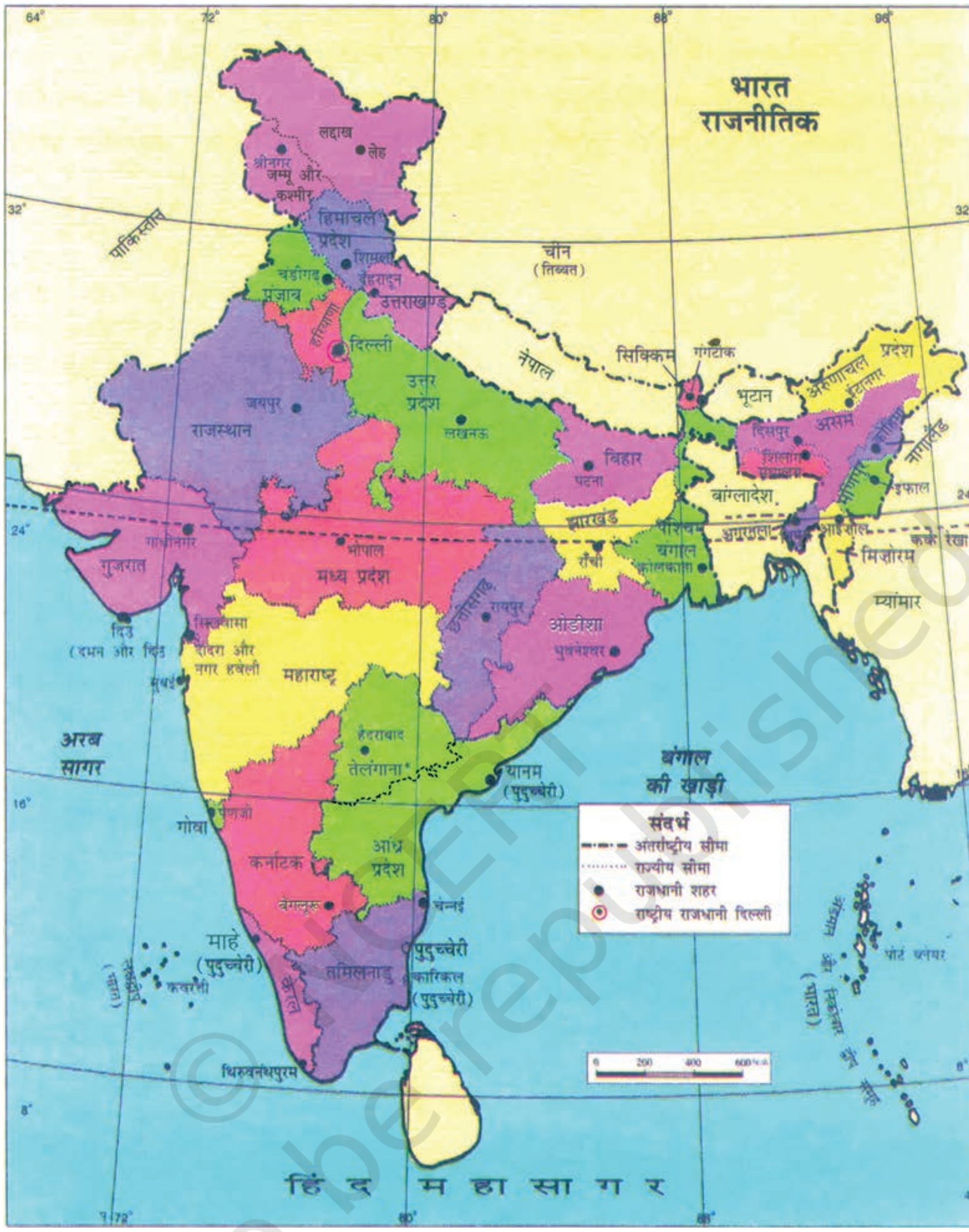

© भारत सरकार का प्रतिलिप्याधिकार, 2007। (1) आंतरिक विवरणों को सही दर्शाने का दायित्व प्रकाशक का है।
(2) समुद्र में भारत का जलप्रदेश, उपयुक्त आधार-रेखा से मापे गये बारह समुद्री मील की दूरी तक है। (3) चंडीगढ़, पंजाब और हरियाणा के प्रशासी मुख्यालय चंडीगढ़ में है।
(4) इस मानचित्र में अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय के मध्य में दर्शायी गयी अंतर्राज्यीय सीमायें, उत्तरी पूर्वी क्षेत्र (पुनर्गठन) अधिनियम 1971 के निर्वाचनानुसार दर्शित है, परंतु अभी सत्यापित होनी है।
(5) भारत की बाह्य सीमायें तथा समुद्र तटीय रेखायें भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा सत्यापित अभिलेख / प्रधान प्रति से मेल खाती है।
(6) इस मानचित्र में उत्तरांचल एवं उत्तरप्रदेश, झारखंड एवं बिहार और छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश के बीच की राज्य सीमायें संबंधित सरकारों द्वारा सत्यापित नहीं की गयी है।
(7) इस मानचित्र में दर्शित नामों का अक्षरविन्यास विभिन्न सूत्रों द्वारा प्राप्त किया है।

कहाँ क्या है

1. (क) लेह लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश है। ऊपर दिए भारत के नक्शे में ढूँढ़ो कि लद्दाख कहाँ है और तुम्हारा घर कहाँ है?

   (ख) अनुमान लगाओ कि तुम जहाँ रहते हो वहाँ से लद्दाख पहुँचने में कितने दिन लग सकते हैं और वहाँ किन-किन ज़रियों से पहुँचा जा सकता है?

(ग) किताब के शुरू में तुमने तिब्बती लोककथा 'राख की रस्सी' पढ़ी थी। नक्शे में तिब्बत को ढूँढ़ो।

वाद-विवाद

1. (क) बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़ों के उदास और फीके लगने की क्या वजह हो सकती थी?
   (ख) बताओ, ये जगहें कब उदास और फीकी लगती हैं और यहाँ कब रौनक होती है?
   घर बाज़ार स्कूल खेत
2. 'जवाहरलाल को इस कठिन यात्रा के लिए तैयार नहीं होना चाहिए।'
   तुम इससे सहमत हो तो भी तर्क दो, नहीं हो तो भी तर्क दो। अपने तर्कों को तुम कक्षा के सामने प्रस्तुत भी कर सकते हो।

कोलाज

'कोलाज' उस तस्वीर को कहते हैं जो कई तस्वीरों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर एक कागज़ पर चिपका कर बनाई जाती है।

1. तुम मिलकर पहाड़ों का एक कोलाज बनाओ। इसके लिए पहाड़ों से जुड़ी विभिन्न तस्वीरें इकट्ठा करो— पर्वतारोहण, चट्टान, पहाड़ों के अलग-अलग नज़ारे, चोटी, अलग-अलग किस्म के पहाड़। अब इन्हें एक बड़े से कागज़ पर पहाड़ के आकार में ही चिपकाओ। यदि चाहो तो ये कोलाज तुम अपनी कक्षा की एक दीवार पर भी बना सकते हो।
2. अब इन चित्रों पर आधारित शब्दों का एक कोलाज बनाओ। कोलाज में ऐसे शब्द हों जो इन चित्रों का वर्णन कर पा रहे हों या मन में उठने वाली भावनाओं को बता रहे हों।
   अब इन दोनों कोलाजों को कक्षा में प्रदर्शित करो।

तुम्हारी समझ से

1. इस वृत्तांत को पढ़ते-पढ़ते तुम्हें भी अपनी कोई छोटी या लंबी यात्रा याद आ रही हो तो उसके बारे में लिखो।
2. जवाहरलाल को अमरनाथ तक का सफ़र अधूरा क्यों छोड़ना पड़ा?
3. जवाहरलाल, किशन और कुली सभी रस्सी से क्यों बँधे थे?
4. (क) पाठ में नेहरू जी ने हिमालय से चुनौती महसूस की। कुछ लोग पर्वतारोहण क्यों करना चाहते हैं?
   (ख) ऐसे कौन-से चुनौती भरे काम हैं जो तुम करना पसंद करोगे?

बोलते पहाड़

1. • **उदास** फीके बर्फ़ से ढके चट्टानी **पहाड़**
   • हिमालय की दुर्गम **पर्वतमाला** मुँह उठाए **चुनौती** दे रही थी।
   "उदास होना" और "चुनौती देना" मनुष्य के स्वभाव हैं। यहाँ निर्जीव पहाड़ ऐसा कर रहे हैं। ऐसे और भी वाक्य हैं। जैसे–
   • बिजली चली गई।
   • चाँद ने शरमाकर अपना मुँह बादलों के पीछे कर लिया।
   इस किताब के दूसरे पाठों में भी ऐसे वाक्य ढूँढ़ो।

© NCERT not to be republished

एक वर्णन ऐसा भी

पाठ में तुमने जवाहरलाल नेहरू की पहाड़ी यात्रा के बारे में पढ़ा। नीचे एक और पहाड़ी इलाके का वर्णन दिया गया है जो प्रसिद्ध कहानीकार निर्मल वर्मा की किताब 'चीड़ों पर चाँदनी' से लिया गया है। इसे पढ़ो और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो।

"क्या यह शिमला है—हमारा अपना शहर— या हम भूल से कहीं और चले आए हैं? हम नहीं जानते कि पिछली रात जब हम बेखबर सो रहे थे, बर्फ़ चुपचाप गिर रही थी।

खिड़की के सामने पुराना, चिर-परिचित देवदार का वृक्ष था, जिसकी नंगी शाखों पर रूई के मोटे-मोटे गालों-सी बर्फ़ चिपक गई थी। लगता था जैसे वह सांता-क्लॉज़ हो, एक रात में ही जिसके बाल सन-से सफ़ेद हो गए हैं ...। कुछ देर बाद धूप निकल आती है— नीले चमचमाते आकाश के नीचे बर्फ़ से ढकी पहाड़ियाँ धूप सेंकने के लिए अपना चेहरा बादलों के बाहर निकाल लेती हैं।"

(क) ऊपर दिए पहाड़ के वर्णन और पाठ में दिए वर्णन में क्या अंतर है?

(ख) कई बार निर्जीव चीज़ों के लिए मनुष्यों से जुड़ी क्रियाओं, विशेषण आदि का इस्तेमाल होता है, जैसे-पाठ में आए दो उदाहरण "उदास फीके, बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़" या "सामने एक गहरी खाई मुँह फाड़े निगलने के लिए तैयार थी"। ऊपर लिखे शिमला के वर्णन में ऐसे उदाहरण ढूँढ़ो।

not to be republished © NCERT

हम क्या उगाते हैं

हम क्या उगाते हैं जब पेड़ लगाते हैं?
हम पानी का जहाज उगाते हैं जो समुद्र पार करेगा।
हम मस्तूल उगाते हैं जिसपर पाल बँधेगी।
हम वे फट्टे उगाते हैं जो हवा के थपेड़ों का सामना करेंगे।
जहाज का तला, शहतीर, कोहनी;
हम पानी का जहाज उगाते हैं जब पेड़ उगाते हैं।
हम क्या उगाते हैं जब पेड़ लगाते हैं?
हम बल्लियाँ, पटिये और फ़र्श उगाते हैं।
हम खिड़की, रोशनदान और दरवाजे उगाते हैं।
हम छत के लट्ठे, शहतीर और उसके तमाम हिस्से उगाते हैं
हम घर उगाते हैं जब पेड़ लगाते हैं।
हम क्या उगाते हैं जब पेड़ लगाते हैं?
ऐसी हजारों चीजें जो हम हर दिन देखते हैं।
हम गुंबद से भी उपर आने वाले शिखर उगाते हैं।
हम अपने देश का झंडा फ़हराने वाला स्तंभ उगाते हैं।
सूरज की गर्मी से छाया मानो मुफ़्त ही उगाते हैं।
हम यह सब उगाते हैं जब पेड़ लगाते हैं।

हेनरी एबे
अनुवाद-कबीर वाजपेयी

© NCERT not to be republished